

श्रीः।

# रामचन्द्रभूषण ।

साहित्यविषयक अलङ्कारका अपूर्वग्रंथ ।

परब्रह्म परमेश्वर नरतनुधारी अव-  
विहारी श्रीमहाराज रामचन्द्रजके  
प्रीत्यर्थं श्रीयुत ललितरामकवि  
श्रीअवध ( अयोध्याजी )  
निवासीने रचना  
किया ।

और

मसवानपुर जिला कानपुर निवासी श्रीलालताप्रसादात्मज  
गौरीशङ्करभट्ट सदावती अटसेलाद्वारा प्राप्तकर,  
खेमराज श्रीकृष्णदासने  
बंधई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" ( स्टीम् ) यन्त्रालयमें  
मुद्रितकर प्रसिद्धकिया ।

मार्गशर्षि सं० १९६०, शके १८२५

मुद्रणाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" प्रसाद्व्यक्षने स्वाधीन रक्खा है

# श्रीरामचन्द्रोविजयते तमाम् ।



प्रिय प्रेमी पाठक ! यह लीजिये, आज "श्रीरामचन्द्र भूषण" आपकी भेट करता हूँ । "हाथके कढ़नको कहा भारसी" आप स्वयं सुविज्ञ है, इसके प्रत्येक रत्नकी बहुमूल्यता अवश्यही अनुमान करलेंगे । निवेदन केवल इतनाही मात्र है कि यदि किसीकारणवश स्वकण्ठमें विभूषित करनेका अवकाश न पाइये तो मन मन्दिरहीमे स्थान दान देकर मुझे कृतार्थ कीजियेगा ।

# श्रीरामचंद्रभूषणकी विषयानुक्रमणिका ।

संख्या	विषय	पृष्ठाका	संख्या	विषय	पृष्ठाका
१	मंगलाचरण	१	१	तद्रूप रूपक अधिकोक्ति	१८
२	अलङ्कारस्वरूपवर्णन	३	२	तद्रूप रूपक हीनोक्ति	१९
३	अर्थालङ्कार तथा पूर्णापमालङ्कार वर्णन	५	३	तद्रूप रूपक समोक्ति	१७
४	तत्कोपमालङ्कारवर्णन	५	४	अभेद रूपक अधिकोक्ति	१९
५	पूर्णापमा माला अलङ्कारवर्णन	६	५	अभेद रूपक हीनोक्ति	१९
६	धर्मभिन्न मालोपमालङ्कारवर्णन	५	६	अभेद रूपक समोक्ति	१९
७	एक धर्ममालोपमालङ्कारवर्णन	७	७	अपर रूपक वर्णन	१८
८	अनेक धर्ममालोपमालङ्कार वर्णन	५	८	निरत रूपक वर्णन	१९
९	धर्म लुप्तोपमालङ्कार वर्णन	८	९	परम परित रूपक वर्णन	१९
१	वाचक लुप्त	५	१४	परिणामालङ्कार वर्णन	१९
२	उपमेय लुप्त	५	१	समस्त विषयक रूपक	१९
३	उपमान लुप्त	५	२५	समस्त विषयक परिणामालङ्कार वर्णन	२०
४	धर्मवाचक लोप	९	१६	उल्लेखालङ्कार वर्णन	१९
५	उपमान उपमेय लुप्त	९		द्वितीय उल्लेख वर्णन	२१
६	उपमेय धर्म लोप	५	१७	सुमिरन भ्रम सन्देहालङ्कार वर्णन	२२
७	वाचक उपमेय लुप्त	१०	१८	भ्रमालङ्कार वर्णन	१९
८	उपमान धर्म लोप	५	१९	सन्देहालङ्कार वर्णन ..	२३
९	उपमान वाचक धर्मलुप्त	५	२०	शुद्धापन्हुति अलङ्कार वर्णन	२५
१०	उपमेय वाचक धर्मलोप	५	२१	हेतु अपन्हुति अलङ्कार वर्णन	१९
११	वाचक उपमान उपमेयलोप	५	२२	परजस्तापन्हुति अलङ्कार वर्णन	२६
१२	उपमान उपमेय धर्मलोप	५	२३	भ्रात्यापन्हुति अलङ्कार वर्णन	२७
१३	चारोंको लोप पूर्ण लुप्त	५	२४	छेकापन्हुति अलङ्कार वर्णन	१९
१४	उपमाकेभेद वर्णन	५	२५	कैतवापन्हुति अलङ्कार वर्णन	२८
१०	अनन्वयालङ्कार वर्णन	५	२६	उत्प्रेक्षालङ्कार वर्णन	२९
११	उपमानोपमेय अलङ्कार वर्णन	१२	१	उक्तविषयावस्तोत्प्रेक्षा वर्णन	१९
१२	प्रतीप अलङ्कार वर्णन	१३	२	अनुक्तविषयावस्तोत्प्रेक्षा वर्णन	३१
	द्वितीय प्रतीप	१४	२७	हेतोत्प्रेक्षा अलङ्कार वर्णन	३२
	तृतीय प्रतीप	१५	१	सिद्धि विषयाहेतोत्प्रेक्षा	१९
	चतुर्थ प्रतीप	१५	२	असिद्धिविषयाहेतोत्प्रेक्षा	३३
	पञ्चम प्रतीप	१५	३	फलोत्प्रेक्षा	३४
१३	रूपक अलङ्कार वर्णन	१९	४	असिद्धि विषया फलोत्प्रेक्षा	३५

॥ श्रीगणेशायनमः ॥



॥ अथ रामचन्द्र भूषण लिख्यते ॥

॥ मङ्गलाचरण ॥

॥ वरवै ॥

श्रीगुरु गणपति शारद गौरीनाथ ।

भरत लषन रिपुसूदन सियवर साथ ॥१॥

॥ कवित्त ॥

वेलि फलिगई कौशिला के कामना की कल, फैल्यो भाग  
नाग नर सूरज सुमन को । लछिराम जाग्यो दशरथ को अ-  
खण्ड ओज, मण्डित भुवन दल्यो दावा दुसमन को ॥ राम-  
चन्द्र, भरत, लषन, शत्रुहन चारु, ब्रह्म अवतार भार भूतल  
दमन को । गाज्यो रघुवंश अवतंश अमरेश राज्यो, औधअंश  
ढेर में सुमेर त्रिभुवन को ॥२॥

जोग बल जागे भाग नाग नर देवन के, सन्तन सरोज

को समोर समुद्वै भयो । लछिराम राम अवतार के अतङ्गही  
 में, असुर अरातिन अमान अमुद्वै भयो ॥ भासमान अवध  
 अमन्द उदयाचल पै, परम प्रताप की प्रभा को प्रमुद्वै भयो ।  
 चौदहो भुवन अवतंश राजवंश मणि, ब्रह्मराशि कौशिला  
 उदर सौं उवै भयो ॥३॥

शङ्ख सुधा शशि धेनु रभा कल्पतरु मणि, मालाकार म  
 हिमा नखन के धरन में । अंकुश गजेन्द्र वाजि कमला कमल  
 धनु, खल वण्ड कुलिश गरल आचरन में ॥ लछिराम जन  
 वन लाली अनुराग मद, शेष ध्वज वैद्यराज आनंद भरन में ।  
 शोभा सिन्धु मधि रच्यो मनमथ मानो चारु, चौदहो रतन  
 रामचन्द्र के चरन में ॥४॥

कौशल कलश महाराज राम रघुवीर, महारानी मेथिली  
 सनेह समुद्वै रहैं । लछिराम शारद महेश धरवानी बेस, चा  
 न्यो वेद विरद वितान क्रमुद्वै रहैं ॥ मणि-मञ्च गज-रथ पा  
 लकी अरिन्द मौलि, रतन सिंहासन प्रकाश प्रमुद्वै रहैं ।  
 चान्यो फल चौदहो रतन स्यौ सविष्णु घन, चान्यो युग चा  
 न्यो चरणाम्बुज उवै रहैं ॥५॥

शारद सभाग अनुराग में रतन धारें, परम प्रकाशमान  
 भान अश ओज की । चैन भार तरल तरंगें परिमल सङ्क,  
 नैन रामचन्द्र चारु चम्बरीक चोज की ॥ लछिराम नखन म  
 हाषर प्रमाली लसैं, लाली तरवान राशि चान्यो-फल मोज  
 की । भूपन विशाल भाल चौदहो भुवन रज, मङ्गलीक मेथि  
 ली के चरण सरोज की ॥६॥ ।

॥ दोहा ॥

मांगत वर करजोरि युग, सीस नमित लछिराम ।  
रामचन्द्र भूषण रुचिर, ग्रन्थ वनै सुखधाम ॥७॥  
श्री सीतावर चरित मय, अलङ्कार शुभ रीत ।  
वरने पण्डित कवि यथा, वा पथ परखि पुनीत ॥८॥

॥ अथ अलङ्कारस्वरूप वर्णन—दोहा ॥

वचन छन्द वर व्यङ्ग मैं, विलग चमक परिमान ।  
भूषण वत पद अर्थ मैं, अलङ्कार अनुमान ॥९॥  
युगल भांति परमान तिहि, प्रथमर्थालङ्कार ।  
शब्दा फिरि दूजो कहत, मन प्राचीन विचार ॥१०॥

॥ अथ अर्थालङ्कार तथा पूर्णोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सम समता वाचक धरम, उपमेयऽरु उपमान ।  
चान्यो जहँ पद अर्थ मैं, तहँ पूरन उपमान ॥११॥

॥ यथा—छप्पै ॥

गुरु वशिष्ठ तप राशि, विदित रतनाकर से वर ।  
महाराज दशरथ, भुवन रवि से प्रताप कर ॥  
ज्ञान्यो फल से कुँवर, चारु सुर नर मन मोहैं ।  
कौशिल्या केकई सुमित्रा, छवि लों सोहैं ॥  
लछिराम सुधा सरि सीस रजु, वन प्रमोद तट लहि लहर ।  
अमरेश-पुरी लों जगमगै, अवध नगर आनन्द वर ॥१२॥

॥ कुण्डलिया ॥

सजल श्याम-घन से लसत, सिंहासन श्रीराम ।  
शुभग सची लों मैथिली, अङ्ग नाम अङ्गिणाम ॥

अङ्ग वाम अभिराम, लपन सुरतरु से फूले ।  
 भरत शत्रुहन सुमत, भ्रमर से विहरत भूले ॥  
 धरने कवि लछिराम, गुह्यरत मन्दर से गज ।  
 जयति कौशलाधीश, नवल गौरी घर से सज ॥१३॥

॥ कवि ॥

सुरभि समीर मुकुलित वन वागन में, छीर सर सरिता  
 समोज समुद्वे वयो । लछिराम रङ्ग राग नगर धगर धर, नाग  
 नर वेषन प्रकाश प्रमुद्वे वयो ॥ गणपति गौरि शम्भु शारद  
 असीसें वेव, इन्द्रहू तें असुर अतङ्ग अमुद्वे गयो । कौशल क  
 लस रामचन्द्र धाल-सूरज लो, ब्रह्मराशि कौशिला उदर  
 सो उद्वे भयो ॥१४॥

॥ पुनः ॥

काछनी कमर लसे छोरें पटुका की पीरे फहरें ब्रसन हीरे  
 लाल गुन गथ के । लछिराम ललित हरीरे धनु-धान कर,  
 लोचन विशाल भाल भाग समरथ के ॥ रामचन्द्र भरत ल  
 पन रिपुसुदन पै, वै रहे अपार ओज आनँद अकथ के । क  
 रत विहार सङ्ग तीर सरयू पे चारों-फल से कुमार महाराज  
 वशरथ के ॥१५॥

॥ पुनः ॥

कीरति अमन्द चारु चन्द चित्रिका सी फौली, धरयो दान  
 दृनों वेषराज दरसन सो । युगुल जसीले भुजदण्ड पै अखण्ड  
 सांने, ममर प्रचण्ड ध्योम खम्भ तरपत सो ॥ लछिराम नाग  
 नर सागर मगन पीरें, राजहँस बंस मिसिरी के सरयत सो ।

दूषण दुखद सुर सङ्गमी समाजें राम, रघुवंश भूषण सुमेर  
परवत सों ॥१६॥

॥ पुनः ॥

सौरभित सीरे जागैं युगुल जसीले कर, मेंहदी चलित  
अरविन्द अरुनारे से । लछिराम चिन्तामणि आरसी से ओज  
दार, वदन समौज देवि रूप लों सँवारे से ॥ पांवड़े सुमन  
परिपूरन प्रकाशमान, ढारे सकुचनि गौन गज मतवारे से ।  
मण्डित महावर चरन मैथिली के मंजु, मानिक महल खिलैं  
थलज हूजारे से ॥१७॥

॥ पुनः ॥

शुभग सुरङ्ग नैन विरद वहाली सङ्ग, विकसत मौज में  
सरोज मानसर से । वदन विशाल भाल परम प्रकाश ओज,  
वगरि विराजैं लछिराम विज्जु वर से ॥ भुज फरकीले आंगु-  
रीन में नवल नख, आवदार मंजु मुक्ताहल के लर से ।  
राव रामचन्द्र के युगल कर दान वारि, वरसत वारहो महीने  
जलधर से ॥१८॥

॥ अथ तवकोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

अर्थ सदृश में जहँ परै, समता सम उपमान ।

जहँ तहँ मिलि तवकोपमा, अलङ्कार परमान ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शरद कलाधर सों वदन विशाल जैसो, विहँसनि तैसी  
चारु चन्द्रिका उमङ्ग की । युगल जसीले जिमि अरविन्द से  
हैं नैन, लखनि तिरीछी तिमि आनंद प्रसङ्ग की ॥ लछिराम  
रामचन्द्र भुज फरकीले जैसे, तैसी वसीकरन सगुन मौज रङ्ग



की । सिरमोर मङ्गलीक अवधपुरी है जैसी, तैसी धार तरल तरंगे रामगङ्ग की ॥२०॥

॥ पुनः ॥

लखन कुमार जैसो दाहिने लसत तैसो, वाम भाग शत्रु हन सुखमा समाजै है । भूपन भुअन जैसो सामुहे भरत पी छे, तैसोई सुमन्त गुणधीरता जहाजै है ॥ लछिराम जैसे वा जि घरही कुरङ्ग तैसी, वांक घरछेती रघुवर्षिन वराजै है । विरव अखंड राम रघुवीर जैसो तैसो, वीर अमनेक महावीर सों विराजै है ॥२१॥

॥ अथ पूर्णोपमायासा वचन—दोहा ॥

जहँ अगनित उपमेय को, विरचि एक उपमान ।

अलङ्कार मालोपमा, वर्णनीय परमान ॥२२॥

॥ पया कवित्त ॥

चन्द्रिका सी दीपति घदन की विराजै घर, विहँसनि वेस चन्द्रिका लौ विलसति है । भाल ख्योर चन्दन चमक चारु चन्द्रिका सी, चन्द्रिका सी हीरा मोती कलैगी घसति है ॥ चन्द्रिकी सी कर में नवल नख माला जोसि, लछिराम चन्द्रिका कृपान हुलसति है । राव रामचन्द्र वीर चान्यो जुग रावरे की, चान्यो विसि चन्द्रिका सी वीरति लसति है ॥२३॥

॥ अथ धर्मभिन्नमालोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय एक धर्म पर, कल्पित बहु उपमान ।

धर्मभिन्न मालोपमा, प्राचीनन मत जान ॥२४॥

॥ पया कवित्त ॥

आवकर फलकि फवीलो कार चन्द्रिका सो, उद्यत अमल

हेमालय के हजारा सों । लछिराम बिलसत भूपर झलक भ-  
न्यो, छलकत हीरा गज गौहर के थारा सों ॥ सौरभित सीरो  
मलयज सों मजेजदार, सातौ दीप दीपति में थरकत पारा  
सों । चौदहो भुअन रामचन्द्र को सुजस फैल्यो, मङ्गलीक न-  
वल धवल गङ्गधारा सों ॥२५॥

॥ अथ एकधर्ममालोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ उपमान अनेक रचि, एक धर्म की रीति ।

एक धर्म मालोपमा, बरनै सुकवि सप्रीति ॥२६॥

॥ यथा कवित्त ॥

जेठ भान कर से कपिल कोप लर से हैं, माला सों द-  
वानल त्यों गजब गहर से । काल बिकरारे से कुमार दामिनी  
से देव, दारुन कला से प्रलै सिन्धु की लहर से ॥ लछिराम  
जालिम जँजीरे जमजाल से ये, कालदण्ड ख्याल से कमालिया  
कहर से । कालिका कृपान मुण्डमाली के त्रिशूल से हैं, राम  
चन्द्र बान फनमाली के जहर से ॥२७॥

॥ अथ अनेकधर्म मालोपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जवहिँ बहुत-उपमेय को, सम सुबहुत उपमान ।

सम अनेक मालोपमा, नव प्राचीन प्रमान ॥२६॥

॥ यथा सबैया ॥

भाल पै हीरन की कलँगी, लरकै नषतावली के लर से  
हैं । आनन ओज कलाधर से, लछिराम हँसै छटा श्री वरसे  
हैं ॥ बाँहें मृणाल सी कञ्जन से कर, मौज उमाहैं हरा हरसे हैं ।  
सातऊ दीप में श्रीरघुवीर, प्रकाश प्रताप दिवाकर से हैं ॥२७॥

॥ अथ पद्मनुत्थापमाङ्कार पणन—दोहा ॥

वर्णनीय वाचक धरम, अरु उपमान सुवेस ।

इनहि घटाये तीनिलो, लुत्तोपमा सुवेस ॥२८॥

॥ अथ पद्मभूषोपमा,—यथा सर्वथा ॥

वाँहिं भुजङ्ग सी पल्लव से कर, आगुरी पै नख हीरक हार  
से । ल्यों लछिराम घटान से रङ्ग, प्रभा विहँसे मुक्ताहल  
थार से ॥ ये भ्रमरावली लों जुलफै, जुग भौँहिं कमान सी  
आनन मार से । घाल मयङ्ग लों भाल थली, रघुनाथ के लो  
चन खल्ल कुमार से ॥२९॥

॥ अथ बाधकल्लुप्त,—यथा सर्वथा ॥

सृष्टु माधुरी हांसन ही मनमें, मुक्तालर को धरसावत  
हैं । अति ओज प्रभाकर की महिमा, मिथिलापुर में धर  
सावत हैं ॥ लछिराम सुरूप मनोहर राज-कुमारन को तर  
सावत हैं । रघुनाथ कलाधर आनन की, परमा रस में सर  
सावत हैं ॥३०॥

॥ अथ उपमेय सुप्त,—यथा सर्वथा ॥

सांघरे गोरे घटा छटा से, विहरै मिथिलेश की वाग  
थली में । दोने धरे अरयिन्वन पै, अवलोकि गहे तरु की अ  
वली में ॥ ल्यों लछिराम सुरेस कुमार से, आनन की रुचि  
भाँति भली में । ब्रह्म की राजसिरी सी बुहून के, चन्वन  
ख्योर है भाल थली में ॥३१॥

॥ अथ उपमान सुप्त,—यथा सर्वथा ॥

आनन पै चढ़ी पेसी प्रभा, बड़ी लालिमा सी वृग बङ्ग

सँवारे । त्यों फरकीले भुजा बलवन्त, उदार से हाथ लसै  
गजरारे ॥ धूम गोराई व स्यामता की, लछिराम लखै मिथि-  
लेस जो हारे । लखन राम से राज समाज में, राजत कौन  
महीप के बारे ॥३२॥

॥ अथ धर्मवाचक लोप,—यथा सर्वथा ॥

लोचन बान हैं भौहैं कमान, कलाधर आनन भूषन तारे ।  
भाल मसाल मरालिया गौन, मिले बिहँसै मुक्ताहल थारे ॥  
मङ्गल मूरति मंजु मनीन के, माल गरें लछिराम हजारे । ल-  
खन राम सुरेस कुमार, सुरेस कुमार स्वयम्बर वारे ॥३३॥

॥ अथ उपमान उपमेय लुप्त—यथा दोहा ॥

बाल वेषधर ख्याल से, बिलसत वर बनमाल ।

जनक स्वयम्बर जगत से, दरसत राज मराल ॥३४॥

॥ सर्वथा ॥

कान की छोरन मंजु मरोरन, लालिमा में भरे लोचन  
बाढ़े । चन्दन ख्योर पै खेद के बुन्द, चढ़ी चल भौहैं गरूर  
में गाढ़े ॥ बाहैं बली फरकें लछिराम, सही रघुवीर यौं बीरता  
माढ़े । श्री मिथिलेस मुनीस के सौहैं, सरासन शम्भु को  
हेरत ठाढ़े ॥३५॥

॥ अथ उपमेय धर्म लोप,—यथा सर्वथा ॥

खौर तिरीछी किये मुनि सङ्ग में, हेरत शम्भु सरासन  
मार से । त्यों लछिराम दुहूँ कर बान, कमान लौं भौहैं सु-  
ब्रह्मवतार से ॥ सामुहे श्री मिथिलापति के, अभिराम सही

रस वीर सिंगार से । नीलम चम्पक हार से कौन, स्वयम्भर  
में मृगराज कुमार से ॥३६॥

॥ अय वाचक उपमेय सूत,—यथा वरवै ॥

सरद कलाधर विहरत मङ्गल साज ।  
वीथिन अवध विराजत नृप सिरताज ॥३७॥

॥ अय उपमान परमलोप,—यथा वरवै ॥

रघुवर सौं को त्रिभुवन भुज बलवन्त ।  
धनु सो भयो कहा कर गिरजा कन्त ॥३८॥

॥ अय उपमानवाचक परमसूत—यथा वरवै ॥

राजमहल रघुनन्दन चन्दन स्थोर ।  
भरत लपन रिपुसूदन लोचन कोर ॥३९॥

॥ अय उपमेयवाचक परमलोप—यथा वरवै ॥

चपल स्याम धन चपला सरजू तीर ।  
मुकुत माल मय धारिज अमर जैजीर ॥४०॥

॥ अय वाचक उपमान उपमेय श्लोप—यथा वरवै ॥

दान धारि सौं सींचत त्रिभुवन हेरि ।  
असुर सेन हनि राखत धरमहि फेरि ॥४१॥

॥ अय उपमान उपमेय परम श्लोप—यथा वरवै ॥

आप समान सुरेसहि समुप्ति सकोप ।  
रावन मन में राखत आकर ओप ॥४२॥

॥ अय धारौं को श्लोप पूर्ण सूत—यथा वरवै ॥

अङ्गद सो कहि तारा धिरद सँभार ।  
मम सोहाग हरसोहिं तिनहि निहार ॥४३॥

॥ अथ उपमा के भेद वर्णन—दोहा ॥

शब्द सुनत में होय जब, वाचक ज्ञान सुबेस ।  
तहँ श्रोती उपमा कहत, नागर कवि गन देत ॥४४॥  
अरथ निरूपण में जहां, समुझि परै सुख साज ।  
तहँ उपमा गनि आरथी, जे कविन्द सिरताज ॥४५॥

॥ अथ अनन्वया लङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहां होय उपमेय को, उपमेयै उपमान ।  
अलङ्कार वरने तहां, अनन्वया सुखदान ॥४६॥  
॥ यथा सवैया ॥

वारिज वीरबधूटी प्रभाकर, मन्द परै रजनी परमाली ।  
ज्वालामुखी बड़वानल को, लछिराम स्यों धूम धुजी सिख-  
राली ॥ छार करै खल बंशान को, अवतंश हितून पै अंश  
गुलाली । श्री रघुनाथ प्रताप लों भूपर, श्री रघुनाथ प्रताप  
की लाली ॥४७॥

॥ कवित्त ॥

राम सम राम मैथिली लों मैथिली की प्रभा, लषन सो  
लषन सहायक हमेस को । लछिराम ललित भरत शत्रुहन  
सम, ललित भरत शत्रुहन है सुबेस को ॥ कैकई सी कैकई  
सुमित्रा लों सुमित्रा देवि, दानी रघुवंश बरदानियां महेस  
को । कामधेनु कौशिला सी कौशिला कलपतरु, कौशल सों  
कौशल नगर कौशलेश को ॥४८॥

सुघर सुकण्ठ सों सहायक सुकण्ठ भूप, अङ्गद सों अ-  
ङ्गद अमोल अनुमानो में । सेवक सबल हनूमान सों अभङ्ग  
जङ्ग, हनूमान सेवक सबल सनमानो में ॥ लछिराम कनक

भवन सो कनक भौन, रामगङ्ग सम रामगङ्ग मौज मानो में ।  
त्रिभुवन मौलि राव रामचन्द्र मैथिदी लों, राव रामचन्द्र मै  
थिदी को परमानो में ॥४९॥

॥ संध्या ॥

मांझ स्वयम्घर में मिथिलेस के, राम सी राम की ला  
लिमा छाई । रूप की राशि प्रकाशिका लों, विजैमाल गरे  
पहिरायन आई ॥ यों लछिराम लसी कर कल्ल में, भारती के  
मन को भरमाई । मैथिदी सी तिहूँदोकन में, मिली मैथिली  
की शुभ सुन्दरताई ॥५०॥

॥ पुनः ॥

सूरज से षढे ओज अमन्द, मलीन परे नृप मण्डल ता  
रे । श्री मिथिलेस के आनन पै, चढे औरई ओज अनरद  
पसारे ॥ को वरने लछिराम समा, जयमाल जवे गरे मङ्गल  
डारे । राम से राम सिया सी सिया, तिरमौर धिरञ्चि वि  
चारि सँवारे ॥५१॥

॥ अथ उपमानोपमेय मलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ उपमा उपमेय को, परसपरी व्यवहार ।

तहँ उपमा उपमेय कहि, भूपन आनँव हार ॥५२॥

॥ यथा कथित ॥

भरत लपन शत्रुहन मौर मण्डली लों, मौर-धृन्व भाग  
भरतावि के समा सो है । लछिराम शर मघादान रघुवंशिन  
सो, दान रघुवंशिन को शरनि मघा सो है ॥ मालाकार की  
जुरी लों मैथिली विलास वर, मैथिली विलास कीजुरी की

अरमासी है । राम रघुवीर श्याम घन परमा सो भन्यो, श्याम  
घन राम रघुवीर परमा सो है ॥५३॥

॥ पुनः ॥

गोरे अङ्ग रङ्ग चारु चम्पक बरन वारे, हरष हलोरै मौज  
मन्द विहँसन की । ख्योर कासमीरी पीरी पाग ल्यों युगल  
भाल, कोरै लाल कलंगी मरोरै जुलफन की ॥ लछिराम तेज  
तरुनापन हरनि अंस, वदन दुहूँ पै परमाली श्री लहन की ।  
तिरछौहैं भौहैं शत्रुहन सी लपन लसै, लपन सी भौहैं तिर-  
छौहैं शत्रुहन की ॥५४॥

॥ सर्वया ॥

श्री अमरावती लौं मिथिला, मिथिला सम श्री अमरा-  
वती मोहँ । सागर छीर खयम्बर सी, ल्यों खयम्बर सागर  
छीर बनो है ॥ सारद मैथिली सी लछिराम, सुमैथिली सा-  
रद लौं गुन जोहँ । लक्खन राम कलाधर से, सु कलाधर  
लक्खन राम से सोहँ ॥५५॥

॥ अथ प्रतीप अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय को होय जब, सब सुरूप उपमान ।  
बरनत प्रथम प्रतीप तहँ, पण्डित सुमति निधान ॥५६॥

॥ यथा कवित्त ॥

नवल नकीव से अलापचारी कोकिल ल्यों, चारन से च-  
ञ्चरीक आनँद अतूले हैं । सेनप सुवीर से बिहङ्ग बिहसीले  
सोर, लछिराम सर से सुमन सजमूले हैं ॥ विरद वितान  
रघुवंशिन से बाग बन, भाग भरे दल से बिलास अनुकूले



हैं । रावरे प्रताप से महीप रामचन्द्र चारु, किंशुक अनार क  
चनाग कस्तू फूले हैं ॥५७॥

॥ सर्ग्या ॥

पायन से गुललाला जपा दल, पङ्क धधूक प्रभा बियरौ  
हैं । हाथ से पहव नौल रसाल के, लाल प्रभाव प्रकाश करै  
हैं ॥ लोचन की महिमा सी त्रिबेनी, लखे लछिराम त्रिताप  
हरै हैं । मैथिली आनन से अरविन्द, कलाधर आरसी जा  
नि परै हैं ॥५८॥

॥ मय द्वितीय प्रतीप-दोरा ॥

जमहिं होय उपमान सो, वर्णनीय अपमान ।

तहँ दूसरो प्रतीप कहि, नव प्राचीन प्रमान ॥५९॥

॥ यथा कविच ॥

कातिल रुकै न चाटे चरषी रुचिर मल, खल भल धार  
ति खलक जोम लाली को । लछिराम धार में असुर मुण्ड  
माल दे दे, धरवान पावै मुण्डमाली महाकाली सो ॥ ज्वाली  
जङ्ग जोहर जवान जहरीली षाङ्गि, प्रबल अतङ्ग प्रलयानल  
प्रनाली को । सङ्ग सान रावरी कृपान राव रामचन्द्र, हेरै क्यों  
न पन्नगी हजार फन वाली को ॥६०॥

॥ सर्ग्या ॥

धारनचन्द्र सो स्याम घटा, अरुझानी रहै सिपराली प  
हार है । स्यों लछिराम प्रताप सों रावरे, सूरज वारहो को अ  
वतार है ॥ औध सो श्री रघुनाथ नरेश, धन्यो अमरावती म  
ङ्गलचार है । कीरति कैसे गरूर करै धरा, या विधि पावन  
गङ्ग की धार है ॥६१॥

॥ अथ तृतीय प्रतीप वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय सों होय जब, अन आदर उपमान ।

तहँ तीसरो प्रतीप है, पण्डित राव प्रमान ॥६२॥

॥ यथा सर्वथा ॥

भाल बिसाल पै राजसिरी जगै, लोचन में लसै लालिमा  
नीकी । आनन ओज पै त्यों अभिराम, कहा कलाचन्द्र कलि-  
न्द अनी की ॥ हेरि स्वयम्बर में लछिराम, थकी मति राजन  
की अवली की । श्री रघुवीर सिया छवि सामुहैं, स्याम घटा  
विजुरी परै फीकी ॥६३॥

॥ अथ चतुर्थ प्रतीप वर्णन—दोहा ॥

सर बर में उपमेय के, जब न तुलै उपमान ।

चौथो भेद प्रतीप तहँ, बरनत बुध सुखदान ॥६४॥

॥ यथा कवित्त ॥

दाहक असुर कर परसत सीरो सुर, रैनिदिन विरद ब-  
रावरै निहारो में । सुहृद सरोज सांझ सम्पुटित होत याके,  
वन जन फूले त्रिभुवन के अस्वारो में ॥ समता तुलै न हेरे  
भरमत अम्बर में, राहु की डरन थरकत जुग चारो में । पा-  
वन प्रभाकर प्रताप रामचन्द्र सौहैं, कैसे कला बारहो विभा-  
कर विचारो में ॥६५॥

॥ अथ पञ्चम प्रतीप वर्णन—दोहा ॥

वर्णनीय के सामुहैं, व्यर्थ मान उपमान ।

पञ्चम भेद प्रतीप को, तहँ विरचित गुनमान ॥६६॥

॥ यथा कवित्त ॥

मण्डन भुञ्जन फरकीले भुञ्जण्ड बल, वजर गुमान म-

घषान के दलत हैं । जुगल जसीले कर मौज के उमङ्गन में,  
कलपलता के दीह बल को मलत हैं ॥ साहिबी सरम राज  
नीति के धरम सौंहें, शङ्कर सुमेरू के रङ्ग घवलत हैं । गज  
मुक्ताहल सुजस रामचन्द्र आगे, अपर महीप जस ओरे लों  
गलत हैं ॥६७॥

॥ अथ रूपक मलङ्कार षणन—दोहा ॥

जहैं अभाव वाचक धरम, विषयी विषय विलास ।  
करि एके गुन थापिये, रूपक भूषण रास ॥६८॥  
करि सुरूप एके कहूं, कहूं न भेद गुन हीन ।  
अधिक होत सम त्रिविधि ये, धरनत मत प्राचीन ॥६९॥

॥ अथ लूप रूपक अधिकोक्ति—यथा कविच ॥

वसत मलीन घर यामी में बिसासी यह, मखमली न्यांन  
सो लहर बाज लाली तैं । लछिराम जङ्ग धूमधाम की लपट  
यामें, वह बधिजाति परसन मुख हाली तैं ॥ वह काटि भागै  
यह कातिल रुके न राष रामचन्द्र कर घर पावैं मुण्डमाली  
तै । जोहर ज्वलित भरी कहर कृपान घङ्ग, अधिक बहाली  
फनमालिनी फनाली तै ॥७०॥

॥ अथ लूप रूपक शिनोक्ति—यथा सूर्या ॥

चञ्चल चारु चुने स्रव रङ्ग में, होत लका कर लेत लगाम  
के । बाग मरोर में मोर धजी, कल घोलत आनँद में गुन  
ग्राम के ॥ बाकुरे चोते कुरङ्गन पै, लछिराम मही महिमा  
अभिराम के । सागर फरंदिबे को फफंदे, पर—हीन परिन्द  
महीपति राम के ॥७१॥

॥ अथ तद्रूप रूपक समोक्ति—यथा कवित्त ॥

रदन बलाकृष्टिबिज्जु भूखन चमक भाल, पँचरंगी बेधे रङ्ग  
धनु सरसत हैं । ककुभ कलोलें भिरे मन्दर फिरत फूले, फैलि  
सङ्गवारेन के अङ्गपरसत हैं ॥ लछिराम गरजें कुमार अन्ध-  
कार कैसे, कजरारे असुर जँवासे झरसत हैं । सावन फुहारे  
गुंड मंडित भसुण्ड मग, रामचन्द्र गज मतवारे वरसत हैं ॥७२॥

॥ अथ अभेद रूपक अधिकोक्ति—यथा कवित्त ॥

गरजि ककुभ कुञ्जरीन सों कुलेलें करें, छोड़त फुहारे फैलि  
सुण्डन हजारा को । बिरचें सु लछिराम चहलै अजब गैल,  
बदन चमक बिज्जु आनँद अपारा को ॥ कारे लाल पीरे हरे  
भूषन जवाहिर के, रङ्गसाज राम देवराज के अखारा को ।  
बारिद बगर बर वारन झमक झूमें, वरसत बारहौ महीने  
वारिधारा को ॥७३॥

॥ अथ अभेद रूपक हीनोक्ति—यथा सर्वथा ॥

पावन सीतल बारि सुबेस, किये धरा धौल सबै लहरी है ।  
मानस मंजु मुनीसन के, भरै आनँद आले प्रभा फहरी है ॥  
ध्यानहु तैं अघओष हरैं, लछिराम तिहंपुर में ठहरी है । की-  
रति गङ्ग तरङ्गनि राम, करार के नाहर हू छहरी है ॥७४॥

॥ अथ अभेद रूपक समोक्ति—यथा सर्वथा ॥

साखें भुजा फरकीली बहार में, पल्लव हैं करत्यों अरुनारे ।  
ये सुमनावली हैं नख बृन्द, मलिन्द सुरूप त्रिलोक निहारे ॥  
मेढे ललाट कुअङ्ग बिरञ्चि, सदा रस एक समोज सँवारे ।  
कामना आठऊ जाम फलें, कलपद्रुम राम नरेस हमारे ॥७५॥

॥ अथ अपर रूपक वर्णन—दोहा ॥

भौरो रूपक चतुर विधि, धरने बुध मति मान ।

प्रथम निरक्षर वूसरो, परम्परित परमान ॥७६॥

पुनि प्रमान कहि तीसरो, ग्रन्थन मन सरसाय ।

फिर समस्त विषयक विद्ये, चौथे भेव लखाय ॥७७॥

॥ अथ निरक्षर रूपक वर्णन—यथा सर्वाया ॥

मालर्षे मोतिन की कलंगी मनि, मानिक माल गरे मन  
भावे । भौहे कमान स्यो लोचन बान, विलोकनि खंजर हूँ  
सभावे ॥ पानि सरोज मृणाल भुजा, लछिराम समा सुम सा  
गर पावे । राम घटा अंग द्वीपति में, मुसकानि छटा निरखे  
धनिआवे ॥७८॥

॥ अथ परम्परित रूपक वर्णन—यथा दोहा ॥

सुर समाज सीतल करन, मलयज मलय समीर ।

बैरो धन दाहक प्रबल, धदवानल रघुधीर ॥७९॥

॥ अथ परिणाम लङ्कार वर्णन—दोहा ॥

करे क्रिया उपमान रेखि, वर्णनीय को रूप ।

अलङ्कार परिणाम तहँ, धरनेत कधि कुल भूप ॥८०॥

॥ यथा पवित्र ॥

स्वाम घन धरन धिराजत घसन पीरे, सिंरपेच हीरेलाल  
हिलत सँवारे हैं । लछिराम जुगल जसीले, फरकीले भुज,  
वाल ब्रह्म वेद पर विरद कपारै हैं ॥ तरकसी कन्ध काक  
पक्ष की लटक, नैन त्वपल त्तिरीछे खसरीट सों निहारै हैं ।  
ताडुका सुधाहु सीस कसिके कमान; रामचन्द्र परकमल अ  
सूफ घान मारै हैं ॥८१॥

॥ पुनः ॥

सोहिं मुनि मंडली महान वेद मंत्रन सों, मङ्गलीक मष  
धूम मन सरसावै हैं । मंडन भुअन दसरथ के सराही भाग,  
सुन्दरी सुमन की सुमन वरसावै हैं ॥ लछिराम रामचन्द्र लखन  
सुरूप हेरि, विहंसि किरातिनै कुतूहल मंचावै हैं । पुलकि  
पसीजे गजरारे हाथ पल्लव सों, गुञ्ज गज मोतिन के हार  
पहिरावै हैं ॥८२॥

॥ अथ समस्त विषयक रूपक वर्णन—दोहा ॥

विषय जवहि आरोपिये, सकल वस्तु के साथ ।

लखि समस्त विषयक तबहि, अलङ्कार सुभ गाथ ॥८३॥

॥ यथा कवित्त ॥

झमके मतङ्ग झख राज सङ्ग परिहरि, रथें वाजि माला  
मीन सुखमा सरीर की । मन्दर पनाके वारि वांवर विराट  
फैले, आंचै ओज बैरिन पै बाढ़व के भीर की ॥ लछिराम  
रोछ ब्याल बरबस बोलै खुले, वोहित हरोल थाहैं लखन के  
धीर की । आनंद अभङ्ग राजें तरल तरङ्ग सङ्ग, सागर गँ-  
भीर सेना राम रघुवीर की ॥८४॥

॥ पुनः ॥

गुञ्जरत कुञ्जर कुलेल में गरज घोर, रदन वलाक फुही  
फहर बिसेस को । लछिराम सातौ दीप सीरी सुभ नीति  
पौन, विरद अभङ्ग मही महक प्रवेस को ॥ श्याम घन राम-  
चन्द्र मैथिली अचल बिज्जु, लपन भरत शत्रुहन मोर बेस  
को । बारहौ महीने वर वरसैं रतन वारि, दरवार वारिद  
बगर कौशलेश को ॥८५॥

॥ अथ अपर रूपक वर्णन—दोहा ॥

ओरो रूपक चतुर विधि, बरने षुभ मति मान ।

प्रयत्न निरखन दूसरो, परस्परित परमान ॥७६॥

पुनि प्रमान कहि तीसरो, एन्धन मत सरसाय ।

फिर समस्त विषयक दिये, चौथे भेव लखाय ॥७७॥

॥ अथ निरङ्क रूपक वर्णन—यथा सवैया ॥

भालपे मोतिनि की कलंगी मनि, मानिक माल गरे मन  
भावे । भोहि कमान ह्यो लोचन धान, विलोकनि खजर हू ते  
सभावे ॥ पानि सरोज मृणाल भुजा, लछिराम सभा सुम सा  
गर पावे । राम घटा अंग दीपति में, मुसकानि छटा निरखे  
धनिआवे ॥७८॥

॥ अथ परस्परित रूपक वर्णन—यथा दोहा ॥

सुर समाज सीतल करन, मलयज मलय समीर ।

वैरी धन दाहक प्रवल, बद्धवानल रघुवीर ॥७९॥

॥ अथ परिणाम लङ्कार वर्णन—दोहा ॥

करे क्रिया उपमान रधि, वर्णनीय को रूप ।

अलङ्कार परिणाम सहें, धरनत कधि कुल भुष ॥८०॥

॥ यथा अपि ॥

स्याम धन धरन विराजत घसन पीरे, सिरपेघ हीरेलाल  
हिलत सवारें हैं । लछिराम जुगल जसोल परकीले भुज,  
पाल द्रव्य घेप धर धिग्द घगारें हैं ॥ तरकसी कन्ध काक  
पक्ष की लटक, नैन नपल तिरिछे खडगिट तो निहारें हैं ।  
ताडुया मुवाहु सोस कसिके कमान, रामचन्द्र परकमल अ  
भूष धान मारे हैं ॥८१॥

सिरताज राज महाराज राम रघुबीर, दानी दीनबन्धु बीर  
कौशल नगर को ॥१०॥

॥ पुनः ॥

श्यामघन सोहैं मुनि मंडली मयूरन को, पुरुष पुरातन  
प्रमान वेद वर को । मौज में सरासन सिरोमनि महेश जा-  
न्यो, ठान्यो देव वृन्द या प्रकास जोति वर को ॥ लछिराम  
राजवंस कामद कलस गन्यो, जन बन दानियां सुमेर सब  
थर को । मिथिला सुरेस प्राननाथ मैथिली त्यों, मान्यो मि-  
थिलेस बाल ब्रह्म रूप रघुवर को ॥११॥

भूषित भुजङ्ग परमानत महेस मंजु, सीसा कञ्ज नाल गन-  
पति गौरि भाषै हैं । वर गजराज के बिचारै खल सुण्ड जन, बल्ली  
भेवसागर तरन अभिलाषै हैं ॥ लछिराम जुगल जसीले परमा-  
नै खम्भ, असुर अमेरै कालदंड रुख राषै हैं । रावरे प्रचंड भुज  
दंडनै को रामचन्द्र, त्रिभुवन मानत कलय तरु साषै हैं ॥१२॥

॥ अथ द्वितीय उल्लेख वर्णन—दोहा ॥

बहु गुन मंडित वरनिये, बहु विधि एक सुरूप ।

तहँ दूजो उल्लेख कहि, पंडित कवि रस रूप ॥१३॥

॥ यथा कवित्त ॥

मन्दर महीपन में सुन्दर सुमेर वर, देवन में ब्रह्मरूप-  
रासि के अतन हौ । राजहंस नीति में अनीति के कराल,  
काल दान सनमान बेलि-राखत जतन हौ ॥ जङ्ग जैत जुगल  
जसीले फरकीले भुज, वारन उचारन बिरद वरतन हौ । कलश  
प्रभाकर सुवंस राव, रामचन्द्र गुन रतनाकर के चौदहो  
रतन हौ ॥१४॥



॥ पुनः ॥

मुखर गँभीर चान्यो धीर को यिलास घर, सङ्गमी स  
विज्जु मैथिली है जोति सत्ता की। अङ्गदादि भूपन सभासव  
मयूर मंजु, सन्त मुनि मण्डली समीर छेम छत्ता की ॥ ल-  
छिराम असुर जवासे झरसत जङ्ग, अलषेली, आनि भाति  
जलधर मत्ता की । दान धारि मौजे तिरछोहैं इन्द्र धनुषारु,  
मोहैं चढीं रामचन्द्र कौशल चकत्ता की ॥८६॥

॥ अथ समस्त विषयक परिणामाङ्कार षण्ण—दोहा ॥

जहैं समस्त विषयक विषे, मिलि परिणाम प्रकास-।

सकल विषय परिणाम तहैं, धरनत सुमति बिलास ॥८७॥

॥ यथा सर्वथा ॥

धीर लौ सञ्ज सरीर छटा मल्लें, मंहित-माल विसाल ध  
न्यो भरे । लौ लछिराम अवेव ओ देवन को, मन बेखिये को  
हहन्यो हरे ॥ सङ्गमी गंग-सरङ्गित धीरता, सोहैं समीप मनो-  
रथ यौ फरे । सागर श्री रघुनन्दन के, कर-कल्ल सो, मानिक  
मोती झन्यो करे ॥८८॥

॥ अथ वस्त्रेलाङ्कार षण्ण—दोहा ॥

जत्रहैं एक को यणिये, बहुत समुझि बहुरोति ।

मलङ्कार उल्लेख तहैं, भापत सुकवि सप्रीति ॥८९॥

॥ यथा कश्चित् ॥

योहित विसाल भवसागर भयङ्कर पै, अधम उधारन  
यकैती के रगर को । लछिराम शारद मनेश धरदानी-ब्रह्म,  
जैस धार ज्वाली अङ्ग रावन झगर को ॥ तिरजीवै चान्यो जुग  
चोदहो भुवन पति, भाग षंश धिरव घितान के धगर को ।

॥ अथ शुद्धापन्हृति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

तदाकार आरोपिये, पूरव धर्म्य दुराघ ।

शुद्धा पन्हृति तहँ कहैं, अलङ्कार कविराय ॥१०६॥

॥ यथा सर्वथा ॥

सम्भु सरासन तोन्यो सही, दिवि लों जगै जोति प्र-  
कास पसान्यो । सातऊ दीपन में जस कै, लछिराम महीपन  
को मद गान्यो ॥ पून्यो मनोरथ मैथिली को, मिथिलापुर  
में मन मोहनी डान्यो । राज कुमार नये रघुवीर, अनङ्ग  
बिजै कर रूप सँवान्यो ॥१०७॥

॥ पुनः ॥

मण्डित फेन लका से लगाम तैं, ऊपर भू थरकैं जथा  
पारे । गौर गनै न गिरिन्दऊ को, लछिराम न मानै नदी नद  
नारे ॥ बाज लौं बैरी लवा पै परैं, लखि वारैं परी मुकताहल  
थारे । राम नरेस के ये न तुरङ्ग, परिन्द हैं सूरज के रथ वारे ॥

॥ अथ हेतु अपन्हृति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वस्तु युक्ति बल सों दुरै, बरनै और प्रभाव ।

हेतु अपन्हृति समुझि मन, बिरचत पंडित राव ॥१०९॥

॥ यथा कवित्त ॥

दीरघ दतारे भारे दिगपाल मंडल तैं, बिरचत कीच मग  
मद के पनारे हैं । झूमत झमकि झनकारत जँजीरैं जोर, ब-  
न्दन बलित रंग सुर धनु टारे हैं ॥ गजराज राव रामचन्द्र  
के सु लछिराम, गरजनि छोड़ैं सुण्डा दण्डनि फुहारे हैं । ब-  
रसत बरहो महीने वारिधारा मेघ, मंगलीक मंडित मजेज  
मतवारे हैं ॥११०॥

छटा है नखतावली की, रसराज ऊपर अजया अवतार की ।  
 हीरालाल बलित ललित मोर संग कैधों, कल्लंगी कलित भाल  
 भरत कुमार की ॥१०२॥

कैधों रूप रासि के प्रकास पै सुमंगलीक, चन्ते वसी  
 करन मंत्र लहरेले को । रंग वार, कैधों अनुराग रामचन्द्रही  
 को, जगमग्यो भाल पै, सुभागा व्याह-बेले, को ॥ लछिराम  
 कैधों-रसवीर-के सिखर सोहि, मेला रवि-चन्द्र की, मरीचिन  
 झमेले को । मोर सों बलित, अलबेली, जुलफन, पर, सिरपेंच  
 कैधों श्री लखन अलबेले, को ॥१०३॥

गोरे रंग ऊपर बिराजत अजय जामा, -सूरज सिंगार  
 कैधों चम्पक, सुमन को । कंगन कलित, कर, परमप्रकास कैधों,  
 लोहित कमल रच्यो रंग नौरतन को ॥ धीरे मुख मंडित य  
 हाली अघरन लाली, कैधों सोम साँझ विकसत राते घन को ।  
 रंगवार अजय तरङ्ग जोति, भालाकर, कैधों मनि मोर मंग  
 लीक शत्रुहन को ॥१०४॥

घार में तिगिछी द्वैपला के उतरसि पार, कैधों या फनाली  
 पक्षगी की झला झल है । लछिराम कैधो प्रले घासर प्रनाली  
 जोर, जोहर जमाली पाली काल करतल है ॥ रावन समर में  
 महीप रामचन्द्र कर, कैधों या कृपान ज्वालामुखी की सकल  
 है । असल कुमारी धडवानल प्रनेड कैधो, धारही कला के  
 मारतंड की नकल है ॥१०५॥

॥ अथ भ्रांत्या पन्हति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

परको भ्रम छूटै जहां, काहू बचन प्रवीन ।

भ्रांत्या पन्हति कहत हैं, भूषन तहँ रस लीन ॥११५॥

॥ यथा कवित्त ॥

भभरो न मोर घन बीजुरी के मौजन में, सांवरो बरन  
पीत बसन सरीर को । मङ्गलीक मुख पान कोकनद मानसर,  
भांवरै भरत भौर भूले करि भीर को ॥ राजवंस मानो मि-  
थिलेस के स्वयम्बर में, लछिराम धोखो चक्रवाकन गँभीर  
को । सुरन अताप कर सूरज सताप यान, त्रिभुअन मंडित  
प्रताप रघुवीर को ॥११६॥

॥ पुनः ॥

बन्दन विसाल भाल भूषित गणेश धोखें, देवी देव दौरै  
कत बर गुन गाथ के । राज बंस मानौ ये न दिग्गज कुमार  
फैले, गुञ्जरत बगर सँवारे सुभ साथ के ॥ राजहंस भूले ये  
न सावन घटा के घेर, लछिराम रंग ये न ढारे रङ्ग नाथ के ।  
झरना झरत ये न मरकत मन्दर हैं, राजै मद मंडित मतङ्ग  
रघुनाथ के ॥११७॥

॥ अथ छेका पन्हति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सङ्कित सत्य पदारथै, दुरवै ब्योत विचार ।

छेका पन्हति भूषनै, बरनत रस अवतार ॥११८॥

॥ यथा कवित्त ॥

झहरात बीजुरी लों जरद बसन छोरै, माधुरी हंसनि  
मौज ओज धनु बर को । बलाक वृन्द हार हीरा मो-

तिन के, सजल धवन सङ्ग स्वेद के लहर को ॥ बाँहें बल  
शङ्कर सरासनै जघासो कन्यो, लछिराम हेरत परसराम धर  
को । विमति सौं बूझ्यो राम स्याम धन कैसो, धोळ्यो धरनत  
धिरद धिलास जलधर को ॥११९॥

॥ पुनः ॥

- सौरभित सुन्दर सिंगार त्रिभुवन सुर, सुन्दरी विहार  
अङ्ग मङ्गलीक मत को । लछिराम तीनों ताप हरत हरप  
मान, परम प्रकाश चारु चन्द्रिका के सत को ॥ गङ्ग लों पृ  
नीत गज गोहर हरा लों आव, सुमति सौं बूझ्यो भृगुनन्द  
भाल रत को । सीरो सम हीरो कौन रामचन्द्र जस, राम ध  
रनत धिरद मलैज परवत को ॥१२०॥

॥ अथ कैतवा पन्हुति असङ्गार बगन—दोहा ॥

औरे मिस जहँ और को, धरनै धवन धिलास ।  
कैतव पन्हुति सिद्धि कहँ, अलङ्गार मुद भास ॥१२१॥

॥ यथा सर्वथा ॥

लालिमा श्री तरवान की तेज में, सारदा लों सुखमा की  
निशेनी । नैपुर नील मनीन जड़े, जमुना जगे जौहर में सुख  
वेनी ॥ यौं लछिराम छटा नख नौल, तरङ्गिनी गङ्ग प्रभा  
फल पेनी । मेधिली के चरनाम्बुज भ्याज, लसै मिथिला  
मग मंजु त्रिबेनी ॥१२२॥

॥ यथा कथित ॥

माधुरी हैसनि हार हीरक रदन मोती, जोड़े लाल अ  
धर सुरङ्ग अनुमाने को । डोरे नेन मानिक फटिक मनि से

तताई' नीलम चुनीन पूतरीन परमाने को ॥ लछिराम ख्योर  
कासमीर भाल पोखराज, रङ्ग मङ्गलीक मरकत वर माने को ।  
रामचन्द्र बदन के व्याज मिथिला में खोल्यो, मदन जवा-  
हिरी जवाहिर खजाने को ॥१२३॥

॥ पुनः ॥

अतुल अमोल भुज बल को न वारा पार, भूषण मनीन  
के सभाग सरसत हैं । रेखित हथेली आव आंगुरी नखन  
पर, पूतरी महीपन अतंकि परसत हैं ॥ कवि लछिराम दान  
धारा धूम धाम हेरि, मङ्गलीक मेघ साहिबी को तरसत हैं ।  
रामचन्द्र कर मिस कामद कल्प तरु, चान्यो फल बारहौ  
महीने बरसत हैं ॥१२४॥

॥ अथ उत्प्रेक्षालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

वस्तु हेत फल में जहां, सम्भावना सतर्क ।  
उत्प्रेक्षा भूषण तहां, बरनत हैं मति अर्क ॥१२५॥  
द्वै प्रकार गनि वस्तु में, प्रथम उक्त अनुमान ।  
फिरि अनुक्त विषया कहत, उत्प्रेक्षा गुनमान ॥१२६॥  
हेत फलहु में या विधै, जुगल रीति दरसाय ।  
सिधि असिद्धि विषया सहित, उत्प्रेक्षा सरसाय ॥१२७॥

॥ अथ उक्त विषया वस्तोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

जोग वस्तु सम बरनि जहँ, ताहि उक्त परिमान ।  
जहँ अजोग कल्पित सुतहँ, वस्तु अनुक्त बखान ॥१२८॥

॥ यथा सवैया ॥

शम्भु सरासनै तोन्यो सनाल सो, भाल विसाल प्रताप

सोहावै । त्यों लछिराम स्वयम्बर में, मिथिलेस अनन्द अमात  
न छावै ॥ राम गरे जयमाल के बेट, सु मैथिली यों समता  
सरसावै । मानौ रमा रतनाकर में, रतनावली श्री हरि को  
पहिरावै ॥१२९॥

॥ पुन ॥

ख्याल में कछ के नाल सों तोन्यो, सरासन शङ्कर को  
विकराल है । मैथिली के पहिरावत में, लछिराम सन्यो शुभ  
आनैव जाल है ॥ मण्डित मौज स्वयम्बर में, लसै राम गरे  
यों सरोज की माल है । मानौ कलाधर के हियरे, नखतावली  
बेषित धारिव लाल है ॥१३०॥

॥ यथा कवित् ॥

मनरथ सौंहीं मिथिलेस राजमण्डल में, आगमन जैसो  
मुनि सग ते जरत को । नगर डगर नौल धिरव धितान धर,  
धगर स्वयम्बर सुमेर परवत को ॥ लछिराम रामचन्द्र लखन  
सुभाष सील, सगुन सुरूप यों सराहिवो सुमत को । धवन  
धवन वृत धवन धिलास पीवें, राव दसरथ मानौ कन्द सर  
वत को ॥१३१॥

॥ पुनः ॥

मान्यो मान मौज दीप दीपन महीपन को, फहन्यो नि  
सान रघुर्वस अमरेस को । छूठ्यो सङ्ग मैथिली नगर मिथि  
लेस दूठ्यो राम कर कमल सरासन महेस को ॥ लछिराम  
लछिमन धिरव धलित वृत, धवन विद्यान्यो तुम दुखद प्र  
धेस को । औध उदयाचल सिंहासन पे मानो, परभात पर  
भाकर धवन अवधेस को

॥ अथ अनुक्त विषयावस्तोत्प्रेक्षा—यथा कवित्त ॥

सोधि शुभ लगन महीप दसरथ बेस, अवध नगर संजे  
सुभग वरात हैं । लछिराम गरजे नगारे धूमधाम सङ्ग, चतु-  
रङ्ग चमू तैं असुर थहरात हैं ॥ विसद हरीरे हीरे मानिक  
जटित कारे, पीरे लाल रङ्ग यौं निसान फहरात हैं । दीने  
मघवान मंजु मानौ गजरथ पर, पँचरङ्ग चौर आसमानी  
लहरात हैं ॥१३३॥

॥ पुनः ॥

मङ्गलीक राव दंसरथ की वरात सजी, बैरी थहरात रघु-  
बंसिन की भीर तैं । कवि लछिराम गंज गरजे निसान वान,  
विछले भिरत बाजि गवन समीर तैं ॥ मंडित सिखर भाल  
मचले मतङ्ग झूमै, भौर मननात मद नदन गँभीर तैं । सुं-  
डन फुहारे दै भसुण्डन उठावै मानौ, आवै कड़े दिग्गज कु-  
मार कासमीर तैं ॥१३४॥

॥ सवैया ॥

मान गयो मघवान को भूलि, लखे दसरत्थ वरात छटा  
है । फूल घने वरसै मुद मै, रचै देव बधूटी विमान अटा  
है ॥ लाल अमारी मतङ्गन पै, लछिराम करै समतान कटा  
है । आवत कज्जल मेरु मनौ, चढ़ी पच्छिमी नौल गुलाली  
घटा है ॥१३५॥

॥ पुनः ॥

मोर लों मंजु नचै धरनी पर, मण्डित फेन लगाम उमा  
हैं । कान के बीच लसै कौंसी, फिरै त्यौर तिरीछी अलात



अदा हैं ॥ काम कबूतर लों लछिराम, छल्ले यों अटेरन की परमा हैं । याजि यली रघुवसिन के, मनौ सूरज के रथे नू मन चाहें ॥१३६॥

॥ भय हेतात्पेसा अलङ्कार षणन—गोदा ॥

कथन जोग सम सम्भवित, सिद्धि विषय सो हेत ।

घरने कवि कोषिद सर्वै, गृन्थन धीच सचेत ॥१३७॥

॥ भय सिद्धि विषया हेतात्पेसा अलङ्कार षणन—यया कविच ॥

राज वंश भूपन कगर मिथिला के मच्यो, धूम धाम न गर यितान यों गरव सों । झमके मतङ्ग झूमै गरजे नगारे नौल, छपि रहे देव घरछैतन विरव सों ॥ विसद सुवेप भेंठ्यो मिथिलेस लछिराम, राव दसरथ मिल्यो यसन जरव सों । चन्द्रिका परस पान हेत में सुधाके मानौ, मधवान मि लत सुधाकर शरद सों ॥१३८॥

॥ पुनः ॥

बोलत नकीव नौल फहरे निसान ऊंचे, द्वारचार भीर दुहुँ दल भराभर सों । मङ्गलीक धाजे घजे गरजै मतङ्ग तैसे, लछिराम रङ्ग रतनाकर लहर सों ॥ अङ्ग में भरत मिथिलेस दसरथ अूको, ता समे विलास रूप आनँद अमर-सों । मानौ रषि चन्द्र की मरीचिन मजेजै मिल्यो, सुरगुर-सोंहैं उवयाचल सिपर सों ॥१३९॥

॥ सबैया ॥

सोर पन्यो मिथिलापुर में वजी, दुन्दुभी दीह विनोद घगा रो । सारव गौरी गनेस महेस, असीसत उन्नत हाथ पसारो ॥

रामको यौं दसरत्थ रहे, मुख चूमि गरे लपटाय निहारो । छी-  
रधि मंजु सओज मनौ, भन्यो अङ्ग समौज कलाधर वारो ॥

॥ पुनः ॥

मौज मई मिथिलापुर में, चतुरङ्ग चमू सजि आई व-  
रात है । त्यौं उछले में जवाहिर की, लरें टूटैं तुरङ्गन के ल-  
हरात है ॥ लखन राम को यौं दसरत्थ, लिये निज गोद न  
मोद अमात है । ताप मिटाइबे के हित मानौ, पपीहरा स्वा-  
ती के बुन्द अन्हात है ॥१४१॥

॥ अथ असिद्धि विषया हेतोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

असम्भवित अकथन जहां, सम तर्कना समेत ।  
तहँ असिद्धि विषया कहैं, उत्प्रेक्षा सु निकेत ॥१४२॥

॥ यथा कवित्त ॥

द्वारचार वगर वरात कौसलेस जू की, मच्यो धूम धाम  
मिथिलेस के सहर में । कलित प्रसेद मोर झालरें बलित  
मुख, जुलफैं लसी त्यौं परिमल के नहर में ॥ चारु गजरथ  
पै विराजे रामचन्द्र कछू बिहँसत लछिराम माधुरी गहर  
में । मंडित मरीची मारतण्ड सङ्ग भोर खिले, कोकनद मानौ  
छविसागर लहर में ॥१४२॥

॥ पुनः ॥

गरजैं निसान वान फहरैं पताके, देव बरसैं सुमन त्यौं  
बिमानन प्रसङ्ग तैं । लछिराम हीरालाल थार मुकताहल के,  
वारैं मिथिलेस बेस आनँद अभङ्ग तैं ॥ उतरे अमन्द राम-  
चन्द्र

धेय रितुराजी सङ्ग धारिद धगर कळ्यो, रसरज मानौ रत  
नाकर तरङ्ग तै ॥१४३॥

॥ अथ फलोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

कथन जोग व्यापार फल, सम सम्भवित प्रधान ।

सिद्धि विषय फल तहँ कहत, उतप्रेक्षाहि सुजान ॥१४४॥

॥ यथा कवित्त ॥

पाग अलखेली पै समाग मणि मोर सोहे, कोरें मुक्ता  
हल मिलित लाल हीरे में । लछिराम तैसी बेस बदन बहा  
ली चढ़ी, धङ्ग चख लाली चारु लखनि गँभीरे में ॥ मिथिलेस  
आंगन रँगिलो रामचन्द्र रूप, पीरे लाल स्याम सेत मण्डप  
हरीरे में । चन्द फल दीवे हेत विहरै अमन्द मानौ, सङ्ग रङ्ग  
धनु जलधर के जँजीरे में ॥१४५॥

॥ पुनः ॥

ध्याह धर धानक धसन भार भूषण तै, नखसिख जागै  
जोति नवल निकाईं में । लछिराम लोने भूमधाम के धिमा  
नन तै, धरसै सुमन सुर सुन्दरी भलाईं में ॥ रामचन्द्र भरत  
लखन शत्रुहन छवि, छलकी परे हँ सौरभित सुधराईं में  
आगमन मानौ मिथिलेस मन सीरे हेत, अङ्गमान चाच्योफल  
मनि अँगनाइ मे ॥१४६॥

॥ पुनः सर्षपा ॥

दूल्ह धेय विसाल यिनोद मे, चारिहू ओर सुगन्ध स  
मीर हे । ये रही आंगन मे मिथिलेस के, आनन राम प्रभा  
सु गँभीर हे ॥ सामुहँ लोग छके छछिराम, फरी गिरा त्यों

उपमा तदवीर है । देखिवे इन्दु उदै को मनौ, उदयाचल मै  
अमरावली भीर है ॥१४७॥

॥ पुनः ॥

श्री रघुनाथ के माथ भली, मनिमौर लसी कलंगी नव-  
रङ्ग मै । त्यों लछिराम दुहूँ कँधा पै, जुलफै मुकताहल हार  
प्रसङ्ग मै ॥ ता सुखमा की बरावरी कौं, नचै भारती नौल  
नटीलों उमङ्ग मै । मंजु मनोरथ पूजिवे मानौ, मिली जमुना  
वर गङ्ग तरङ्ग मै ॥१४८॥

॥ अथ असिद्धि विषया फूलोत्प्रेक्षा वर्णन—दोहा ॥

असम्भवित सम जहँ रचै, तर्क सकल व्यापार ।  
तहँ असिद्धि विषया कहत, फल उत्प्रेक्षा चार ॥१४९॥

॥ यथा कवित्त ॥

भूषन वसन रघुनाथ सिय सुन्दरी पै, मण्डित मनीन  
लरकत लर हीरे को । कवि लछिराम गल-बांहीं मै सुब्याह  
रिति, गोरो स्याम रङ्ग झलकत सुभ सीरे को ॥ मण्डली मु-  
नीन की चहूँघां चकचौधै चारु, वारत प्रकास रति मदन गँ-  
भीरे को । बांध्यो हित रतन सनाल कञ्ज मानो विधि, मर-  
कत मन्दर सुमेर के जँजीरे को ॥१५०॥

॥ पुनः ॥

मिथिलेस मण्डप अखण्ड ओज रासि कैसे, परम प्रकास  
छायो बाहिरे महल के । लछिराम राम सिय भांवरै भरत  
फैलै चारु चरनन तै तरंगै परिमल के ॥ बरसै विमानन  
तै विबुध ब

॥ पुनः ॥

भूषण विसाल हीरा लाल मनि मोती माल, कङ्कन क-  
लित कर मुद्रिका प्रभा की हैं। लछिराम राम अङ्ग स्याम घन  
रङ्ग पर, जुलफें जँजीरेदार पुञ्ज परमा की हैं ॥ छोरें सेत पट  
फहरीली मन्द गजगौन, सारद मरोरें मन मौजें समता की  
हैं। मरकत मन्दर पै सङ्गमी रतनहार, नहरें तरङ्गदार गङ्ग  
जमुना की हैं ॥१५३॥

॥ अय रूपकातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ वरनत उपमान के, वर्णनीय अवतार ।

अतिशयोक्ति रूपक तहां, प्राचीनन मत चार ॥१५७॥

॥ यथा कवित्त ॥

मिथिलानगर वसीकरन सुरूप जासु, विरद वितान छा-  
यो नखत नरेस को। कवि लछिराम सिरमोर है स्वयम्बर में,  
करिकै कल्प-तरु कुल कौसलेस को ॥ पान्यो सोर चौदहो  
भुअन सिसुपन सूबो, राख्यो प्रन मैथिली समेत मिथिलेस  
को। कमल सनाल में झमकि झकझोन्यो तोन्यो, देहधारी  
मदन सरासन महैस को ॥१५८॥

॥ पुनः ॥

माधुरे मुखर में अतङ्ग त्रिभुअन छाय, बगराय विरद स्व-  
बम्बर कगर में। पल्लवित साखैं सुरतरु फरकाय फन्द, मौजन  
मचाय राजवंस के बगर में ॥ सींचे बल वारि सों प्रवेस कै  
स्वदेस निमि, लछिराम नौल ब्रह्म तेज के रगर में। बीजु-  
री बलित लै कुमार अमरेस तोन्यो, स्याम घन सम्भु धनु  
मिथिलानगर में ॥१५९॥

॥ पुनः सबैया ॥

सीस लसै मनिमोर मनोहर, भूषण भार बहार मै तारे ।  
रूप भन्यो नख तै सिख लौ धनु धान लसै कर मै गज  
रारे ॥ है घन रङ्ग है चम्पक अङ्ग, अनङ्ग अनी विधि सांघ मै  
दारे । श्री दसरथ के सामुहे मै, गजरथ पै चारि कलाभ  
वारे ॥१६०॥

भूपर चारि खिले अरविन्द, मलिन्य क्यों ऊपर प्रेम ह  
लारे । खलन कीर कपोत लसै, मुक्ता लर वास विलास  
विधारे ॥ मण्डित कल सनाल कितै, लछिराम तिहुँपुर के  
चित चारे । कौसिला सामुहै हेम लता, धपु धारी सु ब्रह्म  
किये गठि जारे ॥१६१॥

॥ भय साप श्वातिशयोक्ति मलङ्कार वणन—दोहा ॥

मिलित अपन्हय होय जहँ, उच्छ्रेक्षा मै धीर ।  
सापन्हवातिशयोक्ति तहँ, धरनै कवि गम्भीर ॥१६२॥

॥ यथा कविच ॥

माधुरी हँसनि हार हीरक बहार सग, परखत कौंधे कर  
सौरभ सदन है । लछिराम अधर घहाली तै घषन घर, वा-  
हिम के दाने अमी अषली रदन है ॥ अनमोल गोल पुन्यो  
चिन्तामणि धारसी लौ, अङ्ग हीन तुलै फत धापुरो मदन है ।  
तारे मंद अम्यर सराहँ सुर भूलि चारु, चन्द्रिका यलित रा  
मचन्द्र को घदन है ॥१६३॥

॥ भय भेदकातिशयोक्ति मलङ्कार वणन—दोहा ॥

औरे शब्दन की जहाँ, उतकर्पता सुषेस ।  
अतिशयोक्ति भेदक तहाँ, नूत सुकवि नरेस ॥१६४॥

॥ यथा कवित् ॥

गुह्यस्त मांते गजरथ के मतङ्ग औरै, मङ्गलीक राजपथ  
सौरभ नेहर की । लछिराम तापर झमेले रघुवंशिन के, औरै  
कला लखन बघेले अगहर की ॥ तीर भीर नाग नर देव के  
विमानन तै, औरै धूमधाम राममङ्ग के लहर की । कल्पलता  
मैथिली प्रमोद बन कामद सों, औरै प्रभा राव रामचन्द्र के  
सहर की ॥१६५॥

॥ पुनः ॥

लखन भरत शत्रुहन मान षान औरै, औरै अमनैकी ह-  
नूमान बलवान की । द्विविधि मयन्द नलनील केसरी सुकंठ  
औरै छटा अंगद विभीषन सभान की ॥ लछिराम रतन सिं-  
हासन प्रमान औरै, ऐंड अलबेली रामचन्द्र के प्रभान की ।  
दान सनमान सान विरद वितान औरै, औरै आनि बानि  
कौशलेश के निशान की ॥१६६॥

॥ पुनः ॥

जुगल कपोल जादू जुलफै जँजीरेदार, हीरा लाल मोती  
हार जौहर सँवारे में । करुना कलित सीलसागर तरङ्ग सम,  
लोचन अभङ्ग मौज रंग रतनारे में ॥ मंगलीक वदन बिलास  
लछिराम औरै, कलङ्गी मरोर मौर भाल सजवारे में । औरै  
आनि औरै बानि औरै चढ़े सान भुज, औरै धनुवान राम  
कर गजरारे में ॥१६७॥

॥ पुनः ॥

रामचन्द्र वदन बिलोकि ब्याह बानक में, मंगलीक औ-  
रई उछाह सरसत हैं । दशरथ औरै लाला समित्रा केकई के

॥ पुनः सर्वथा ॥

सीस लसे मनिमोर मनोहर, भूपन भार बहार में तारे ।  
रूप भन्यो नख तै सिख लों धनु धान लसे कर में गज  
रारे ॥ है घन रङ्ग है चम्पक अङ्ग, अनङ्ग अनी-विधि सांच में  
ठारे । श्री वसरत्य के सामुह्ये में, गजरत्य पै चारि कलापर  
घारे ॥१६०॥

मूपर चारि खिले अरविन्द, मलिन्द अ्यों ऊपर प्रेम ह  
लारे । खल्लन कीर कपोत लसे, मुक्ता लर वास विलास  
वियोरै ॥ मण्डित कल्ल सनाल कितै, लछिराम तिहूपुर के  
चित चोरै । कौसिला सामुह्ये हेम लता, धपु धारी सु ब्रह्म  
किये गठि ओरै ॥१६१॥

॥ अथ सापन्द्वातिशयोक्ति भङ्गद्वार वर्णन—दोहा ॥

मिलित अपन्हव होय जहँ, उच्छेक्षा में धीर ।

सापन्हवातिशयोक्ति तहँ, धरनेँ कवि गम्भीर ॥१६२॥

॥ यथा कथित ॥

माधुरी हैंसनि हार हीरक बहार संग, परखत कौषि कर  
सौरभ सदन है । लछिराम अधर बहाली तै बचन बर, वा-  
डिम के दाने अमी अषली रदन है ॥ अनमोल गोल चुन्पो  
चिन्तामणि आरसी लों, अङ्ग हीन तुलै कत वापुरो मदन है ।  
तारे भँद अम्बर सराहँ सुर भूलि चारु, चन्द्रिका धलित रा  
मचन्द्र को वदन है ॥१६३॥

॥ अथ भेदकातिशयोक्ति भङ्गद्वार वर्णन—दोहा ॥

ओरै शब्दन की जहाँ, उत्कर्षता सुवेस ।

अतिशयोक्ति भेदक तहाँ, मानत सुकवि नरेस ॥१६४॥



॥ यथा कवित्त ॥

गुञ्जरत माते गजरथ के मतङ्ग औरै, मङ्गलीक राजपथ  
सौरभ नहर की । लछिराम तापर झमेले रघुवंशिन के, औरै  
कला लखन बघेले अगहर की ॥ तीर भीर नाग नर देव के  
बिमानन तें, औरै धूमधाम रामगङ्ग के लहर की । कल्पलता  
मेथिली प्रमोद बन कामद सों, औरै प्रभा राव रामचन्द्र के  
सहर की ॥१६५॥

॥ पुनः ॥

लखन भरत शत्रुहन मान षान औरै, औरै अमनैकी ह-  
नूमान बलवान की । द्विविधि मयन्द नलनील केसरी सुकंठ  
औरै छटा अंगद विभीषन सभान की ॥ लछिराम रतन सिं-  
हासन प्रमान औरै, ऐंड अलबेली रामचन्द्र के प्रभान की ।  
दान सनमान सान विरद वितान औरै, औरै आनि बानि  
कौशलेश के निशान की ॥१६६॥

॥ पुनः ॥

जुगल कपोल जादू जुलफें जँजीरेदार, हीरा लाल मोती  
हार जौहर सँवारे में । करुना कलित सीलसागर तरङ्ग सम,  
लोचन अभङ्ग मौज रंग रतनारे में ॥ मंगलीक बदन विलास  
लछिराम औरै, कलँगी मरोर मौर भाल सजवारे में । औरै  
आनि औरै बानि औरै चढ़े सान भुज, औरै धनुवान राम  
कर गजरारे में ॥१६७॥

॥ पुनः ॥

रामचन्द्र बदन विलोकि ब्याह बानक में, मंगलीक औ-  
रई उछाह सरसत हैं । दशरथ सौसिला सुमित्रा केकई के

॥ पुनः सर्वेषां ॥

सीस लसै मनिमोर मनोहर, भूषण भार बहार में तारे ।  
रूप भन्यो नख तै सिख लों धनु धान लसै कर में गज  
रारे ॥ है घन रङ्ग है चम्पक अङ्ग, अनङ्ग अनी विधि सांघ में  
हारे । श्री वसरत्य के सामुहे में, गजरत्य पै चारि कलापर  
धारे ॥१६०॥

भूपर चारि खिले अरविन्द, मलिन्द ज्यों ऊपर प्रेम ह  
लोरै । खञ्जन कीर कपोत लसै, मुक्ता लर धास विलास  
धियोरै ॥ मण्डित कल सनाल किते, लछिराम तिहुँपुर के  
चित चोरै । कौसिला सामुहै हेम लता, धनु धारी सु ब्रह्म  
किये गठि जोरै ॥१६१॥

॥ अथ सापन्हवातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

मिलित अपन्हव होय जहँ, उस्प्रेक्षा में धीर ।

सापन्हवातिशयोक्ति तहँ, धरने कधि गम्भीर ॥१६२॥

॥ पया कबिच ॥

माधुरी हँसनि हार हीरक बहार सग, परखत कौंधे कर  
सौरभ सदन है । लछिराम अधर बहाली तै बचन धर, वा-  
दिम के दाने अमी अवली रदन है ॥ अनमोल गोल पुन्यो  
चिन्तामणि धारसी लों, अङ्ग हीन तुले कत धापुरो मदन है ।  
तारे मंद अम्बर सराहँ सुर भूलि धारु, चन्द्रिका धलित रा  
मचन्द्र को धवन है ॥१६३॥

॥ अथ भेदकातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

औरै शब्दन की जहाँ, उतकर्षता सुधेस ।

अतिशयोक्ति भेदक तहा, मानत सुकधि नरेस ॥१६४॥

॥ यथा कवित् ॥

गुह्यरत माते गजरथ के मतङ्ग औरै, मङ्गलीक राजपथ  
सौरभ नहर की । लछिराम तापर झमेले रघुवंशिन के, औरै  
कला लखन बघेले अगहर की ॥ तीर भीर नाग नर देव के  
विमानन तै, औरै धूमधाम राममङ्ग के लहर की । कल्पलता  
मेथिली प्रमोद बन कामद सौं, औरै प्रभा राव रामचन्द्र के  
सहर की ॥१६५॥

॥ पुनः ॥

लखन भरत शत्रुहन मान षान औरै, औरै अमनैकी ह-  
नूमान बलवान की । द्विविधि मयन्द नलनील केसरी सुकंठ  
औरै छटा अंगद विभीषन सभान की ॥ लछिराम रतन सिँ-  
हासन प्रमान औरै, एंड अलबेली रामचन्द्र के प्रभान की ।  
दान सनमान सान विरद बितान औरै, औरै आनि बानि  
कौशलेश के निशान की ॥१६६॥

॥ पुनः ॥

जुगल कपोल जादू जुलफै जँजीरेदार, हीरा लाल मोती  
हार जौहर सँवारे में । करुना कलित सीलसागर तरङ्ग सम,  
लोचन अभङ्ग मौज रंग रतनारे में ॥ मंगलीक वदन विलास  
लछिराम औरै, कलङ्गी मरोर मौर भाल सजवारे में । औरै  
आनि औरै बानि औरै चढ़े सान भुज, औरै धनुवान राम  
कर गजरारे में ॥१६७॥

॥ पुनः ॥

रामचन्द्र वदन विलोकि व्याह बानक में, मंगलीक औ-  
रई उछाह सरसत हैं । दशरथ कौसिला सुमित्रा केकई के

मन, लछिराम औरई प्रकास परसत हैं ॥ विबुध घघूटी झरें  
औरई सुमनहार, औरई अदा सों अमरेस वरसत हैं । औरई  
खजाने खुले अग्रध नगर घर, औरै भांति होरा लाल मोती  
घरसत हैं ॥१६८॥

॥ अथ सम्यन्धातिशयोक्ति अलङ्कार षण्ण—दोहा ॥

जहें अजोग में जोग की, करै कल्पना धीर ।

सम्यन्धातिशयोक्ति तहें, प्रथम कहत गम्भीर ॥१६९॥

॥ यथा कवित्त ॥

गुह्यरत कुह्यर कुलेल में नगर घर, मानि घन मंडल  
मयूर खटफत हैं । कोकिल कपोत कीर मन्विर कलस चढ़े वे  
ध गङ्ग नीर तें समीर भटफत हैं ॥ लछिराम उन्नत पथीलें  
फहरात नौल कारे हरे पीरे लाल नग लटफत हैं । विबुध  
घघूटी आनि हेरें आसमान छोड़ि, घगरे यिमान में निसान  
भटफत हैं ॥१७०॥

॥ पुनः ॥

खेलत कुमार लै कुमार गंजराजन के, करत कुलेल  
गुह्यज कगर पै । कवि लछिगम नौल धूमधामें के निसान  
फहरात नौरंग समीर की लहर पै ॥ रामचन्द्र सुभग सिंहा  
सन लसत जाग्यो, अजय अमन्द ओज घाहिरे नगर पै ।  
परकाय चन्द्रिका सघन धीजुरी को चूमि, नचत मयूर माते  
मन्विर सिखर पै ॥१७१॥

॥ द्वितीय षण्ण—दोहा ॥

तजहिं जोग में कल्पना, करि अजोग निरसङ्ग ।

सम्यन्धातिशयोक्ति तहें, वूजी लखि सुभ अङ्ग ॥१७२॥

यथा सर्वैया ॥  
 कानन कुञ्ज प्रमोद बितान भरे, फलफूल सुगन्ध बिधानै ।  
 वावली के अरविन्दन पै, मकरन्द मलिन्द सने सुभ गानै ॥  
 ल्यों लछिराम तरंगन तै, सरजू के कड़े सुर साजि बिमानै ।  
 ओधपुरी महिमा यों चितै, अमरावती को हम क्यों सनमानै ॥

॥ पुनः ॥

सान भरे भुजदण्ड अखण्ड, तिहूँ पुर मण्डन मान भरै  
 को । आंगुरी वै अलकेस धनी, सनी मौजन में अनुमान  
 अरै को ॥ यों नखभा लछिराम लखै, नखतावली के परमानै  
 धरै को । श्री रघुनाथ के हाथन सामुहैं, कल्पलता सनमान  
 करै को ॥१७१॥

॥ अथ अक्रमातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

कारन कारज सङ्ग जहँ, अक्रम बरन न होय ।

अक्रमातिशयउक्ति तहँ, भाषत हैं सबकोय ॥१७५॥

॥ यथा कवित्त ॥

बलवान बिरद अखण्ड महीमण्डल पै, मण्डित महान  
 फैल्यो तरनि के तेजे में । लछिराम राख्यो धूमधाम के समर  
 बीच, भौहैं करि भङ्ग दल दारुन दरेजे में ॥ त्रिभुअन ता  
 समै निहारि आचरज दाबैं आंगुरी दसन बरबस नवरेजे में ।  
 वान रघुवीर के लगत एकवार ही में, रोदे पै कमान कोरैं  
 असुर करेजे में ॥१७६॥

॥ पुनः ॥

चमू चतुरङ्गिनी चपल चढ़ी रावन की, सावन घटा लों  
 सनी रोष रत्न रङ्ग तैं । वाजुर बिराट भालू वांकरे लखन

सङ्ग, घोर घन घोलें वेन धीरता प्रसङ्ग तैं ॥ लछिराम सोई  
भट भेरे गजरथ कटें, क्रोधानल फेटे रामचन्द्र भौई भङ्ग  
तैं । समर झमेले में झमकि एकवार कटें, म्यान तैं कृपान  
प्राण अरिगन अङ्ग तैं ॥१७७॥

॥ अथ चपलातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सुनतहिं नाम प्रसङ्ग के, सिद्धि काज अनयास ।

गनि चपलातिशयोक्ति तहैं अलङ्कार सबिलास ॥१७८॥

॥ यथा सवैया ॥

मण्डल राव मुनीसन के, जुवराजी कथा मुद में अकटें  
हैं । स्यो लछिराम तिनूपुर में, द्विज वेषन के मन मान षट्ठे  
हैं ॥ तेई सवै पुर धीयिन में, अब केकई के घरवान पट्टे हैं ।  
कानन राम पयान सुने, बसरत्थ के प्राण विमान चट्टे हैं ॥

॥ पुनः ॥

पञ्चषटी के, विहङ्ग उमङ्ग में, षोलत धानी सुधारस  
चूटे । स्यो लछिराम अवेध ललाट तैं, आयु की रेख के अङ्ग  
वे चूटे ॥ आसुरी हाथन तैं पल एक में, भाग सोहाग के  
भाजन फूटे । आगम श्री रघुनाथ सुने, मुनि मण्डली के मन्त्र  
धन्धन टूटे ॥१८०॥

॥ अथ अत्यन्तातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

क्रम पूरव पर को जहां, अति अनमिल विपरीति ।

अत्यन्तातिशयोक्ति सो, घरनें बुध करि शीति ॥१८१॥

॥ यथा कवित्त ॥

अजब अखण्ड धाहैं धलित लतालों वसी, मण्डित धि  
रद मारू मध्र भा मढ़ति है । परम निसङ्ग पान कीवे को

रुधिर चाह, लछिराम साहस अभङ्ग में बढ़ति है ॥ रन रङ्ग  
धीच रावरी कृपान रामचन्द्र, बङ्ग बाढ़ि फन पै बहाली यों  
बढ़ति है । प्रान पहिलेही हरै असुर सँघातिन के, पीछे पन्न-  
गी लों म्यान बामी तैं कढ़ति है ॥१८२॥

॥ पुनः ॥

भान बंस भूषन सिरोमनि सुभट कीनो, लङ्क पै अतङ्क  
भरी देवन अकस तैं । गजरथ वाजिन गरजि महावीर मही  
पटकै लपेटिकै लँगूर छोर कस तैं ॥ धूमधाम ऐसी रामचन्द्र  
धीरता की मची, लछिराम रावन सरोष सरकस तैं । बैरी  
मिलै गरद मरोरत कमान गोसे, पीछे कड़ै बान तेजमान  
तरकस तैं ॥१८३॥

॥ अथ तुल्य योगता अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

चतुर चतुरविधि कहत हैं, लुप्त योग्यता चार ।  
बर्न्यन्य को जहँ धर्म यक, प्रथम कहत व्यापार ॥१८४॥

॥ यथा कवित्त ॥

रावन महीप चतुरङ्गिनी चमू लै चढ्यो, है रह्यो अतङ्क  
बङ्क रोदा ठनाठन में । लछिराम जोगिनी जमाति भूत सङ्क  
नाचै, शङ्कर उसाचिन अभङ्ग प्रेस धन में ॥ प्रवल प्रचण्ड  
भुज दण्ड फरकन लागे, खड़क निकोरै बान तरक से छन  
में । लखन समथ वीर बानर विराट भालु, रघुवीर प्रफुलित  
होत रन वन में ॥१८५॥

॥ पुनः सबैया ॥

सूकर स्यार कुरङ्ग मतङ्ग, मिलै मुनि देवन की अवली  
में । जोगी जती तपसी लछिराम, वरै परी किन्नरी भांति

सङ्ग, घोर घन धोलें बैन धीरता प्रसङ्ग तैं ॥ लछिराम सोई  
मट मेरे गजरथ कटैं, क्रोधानल फेटे रामचन्द्र भोई मङ्ग  
तैं । समर झमेले में झमकि एकवार कळैं, म्यान तैं कृपान  
प्राण अरिगन अङ्ग तैं ॥१७७॥

॥ अथ षपलातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सुनतहिं नाम प्रसङ्ग के, सिद्धि काज अनयास ।

गनि षपलातिशयोक्ति तहैं अलङ्कार सविलास ॥१७८॥

॥ यथा सवैया ॥

—मण्डल राव मुनीसन के, जुवराजी कथा मुद में अकळे  
हैं । त्यो लछिराम तिरुपुर में, द्विज बेवन के मन मान षडे  
हैं ॥ तेई सवै पुर धीधिन में, अथ केकई के घरवान पड़े हैं ।  
कानन राम पयान सुने, वसरस्थ के प्राण धिमान चड़े हैं ॥

॥ पुनः ॥

पञ्चवटी के विहङ्ग उमङ्ग में, धोलत धानी सुधारस  
घूटे । त्यो लछिराम अवेष ललाट तैं, आयु की रेख के अङ्ग  
वे छूटे ॥ आसुरी हाथन तैं पल एक में, भाग सोहाग के  
भाजन फूटे । आगम श्री रघुनाथ सुने, मुनि मण्डली के मन्  
धन्धन टूटे ॥१८०॥

॥ अथ अत्यन्तातिशयोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

क्रम पूरव पर को जहा, अति अनमिल धिपरीति ।

अत्यन्तातिशयोक्ति सो, वरनें धुध करि प्रीति ॥१८१॥

॥ यथा कवित्त ॥

अजव अखण्ड याहैं बलित लतालों वसी, मण्डित वि  
रद मारु मङ्ग भा मङ्गति है । परम निसङ्ग पान कीये को



रुधिर चाह, लछिराम साहस अभङ्ग मैं बढ़ति है ॥ रन रङ्ग  
 बीच रावरी कृपान रामचन्द्र, बङ्ग बाढ़ि, फन पै बहाली यों  
 बढ़ति है । प्रान पहिलेही हरै असुर सँघातिन के, पीछे पन्न-  
 गी लों म्यान बामी तैं कढ़ति है ॥१८२॥

॥ पुनः ॥

भान बंस भूषण सिरोमनि सुभट कीनो, लङ्क पै अतङ्क  
 भरी देवन अकस तैं । गजरथ बाजिन गरजि महाबीर मही  
 पटकै लपेटिकै लँगूर छोर कस तैं ॥ धूमधाम ऐसी रामचन्द्र  
 बीरता की मची, लछिराम रावन सरोष सरकस तैं । बैरी  
 मिलैं गरद मरोरत कमान गोसे, पीछे कड़ै बान तेजमान  
 तरकस तैं ॥१८३॥

॥ अथ तुल्य योगता अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

चतुर चतुरविधि कहत हैं, लुप्त योम्यता चार ।  
 बर्न्यन्य को जहँ धर्म यक, प्रथम कहत व्यापार ॥१८४॥

॥ यथा कवित्त ॥

रावन महीप चतुरङ्गिनी चमू लै चढ्यो, हूँ रह्यो अतङ्क  
 बङ्क रोदा ठनाठन मैं । लछिराम जोगिनी जमाति भूत सङ्क  
 नाचैं, शङ्कर उमाचिन अभङ्ग प्रेम धन मैं ॥ प्रवल प्रचण्ड  
 भुज दण्ड फरकत लागे, खडक निकोरैं बान तरक से छन  
 मैं । लखन समत्य वीर बानर विराट भालु, रघुवीर प्रफुलित  
 श्रोत रन वन मैं ॥१८५॥

॥ पुनः सर्वैया ॥

सूकर स्यार कुरङ्ग मतङ्ग, मिलैं मुनि देवन की अत्रली  
 मैं । जोगी जती तपसी लछिराम, वरें परी किन्नरी भांति

भली में ॥ श्री रघुनाथपुरी की प्रभा, सरजू के तरङ्ग तैं सङ्ग  
गली में । सिद्धि सुरापी असन्त औ सन्त, विमान घड़े लसै  
व्योम थली में ॥१८६॥

॥ द्वितीय षण्ण—दोहा ॥

धर्म अवर्ण्य को जहां, एकै विधि ठहराय ।  
तुल्य योग्यता दूसरी, धरनत सव कविराय ॥१८७॥

॥ यथा कवित्त ॥

अमल अमोल गोल कोमल कपोल पर, आरसी अमन्द  
दल कमल ठगत हैं । लछिराम ल्पेचन सुरङ्ग मंगलीक मीन,  
वारे खसरीट धन हरिन डगत हैं ॥ सौरभिन धवन समोअ  
विहँसत चारु, धचन बिलास रामचन्द्र के जगत हैं । दाड़िम  
अमी के दाख माखन मधुर मधु, कन्द मिसिरी के फन्द फीके  
से लगत हैं ॥१८८॥

॥ तृतीय षण्ण—दोहा ॥

जहँ अवर्ण्य अरु धर्ण्य को, धर्म एकई साज ।  
तुल्य योग्यता तीसरी, धरनत कवि सिरताज ॥१८९॥

॥ यथा कवित्त ॥

नैन विकसीले भंग भूधन मरोर कोरें, भाल पै यिसाल  
ओज वै रङ्गो गहर में । फरकत जुगल जसीले भुज आठौ  
आस, धन्द, सरोज, गौ, गहलरी, मोज, लर में ॥ लछिराम आ-  
नैद अभग रंग धीर सम, रात्र रामचन्द्र धीरताई की लहर  
में । धिरद धहार संग बेरी हित अग पर, हार ओ सुरंग  
साल वेत मुद्र धर मै ॥१९०॥

॥ अथ चतुर्थभेद वर्णन—दोहा ॥

करै वन्य समता सगुन, व्यापारादिक संग ।

तुल्य योग्यता चौथई, बरने प्रेम उमंग ॥१९१॥

॥ यथा सर्वैया ॥

मंगल रासि महेस हो तूं, अमरेस हो तूं सिगरे परमा-  
ने । तीनहू लोकन मै अलकेस, धरे लछिराम तूं दान के  
बाने ॥ पूरन ब्रह्म विरञ्चि तूहीं, गुन मै सुगनेस गिरा सन-  
साने । छीर समुद्र गँभीर हो तूं, बलबीर हो तूं रघुबीर  
सयाने ॥१९२॥

॥ अथ दीपकालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ अवन्य अरु वन्य को, गुन करि एक प्रभाव ।

अलङ्कार दीपक तहां, भाषत पण्डित राव ॥१९३॥

॥ यथा कवित्त ॥

विरद अखण्ड भुजदण्डन प्रचण्ड बल, मण्डन करन ल्यो  
विलास विकसत हैं । अजब अतङ्क त्रिभुवन में असङ्क फैल्यो,  
रन बन सामुहे उमङ्क उमसत हैं ॥ जैतवार सुखद सराहै  
रुछिराम कैसे, वार में अचूक वार पार हुलसत हैं । मद सौं  
मतङ्क जङ्क बाज मृगराज राम, रघुवंस भूषन प्रताप सौं ल-  
सत हैं ॥१९४॥

॥ अथ दीपकावृत्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

सुकवि दीपकावृत्ति को, बरनत तीनि प्रकार ।

प्रथम सुआवृत्ति पद फिरे, पदावृत्ति निरधार ॥१९५॥

॥ प्रथम पदावृत्ति यथा—कवित्त ॥

गरजै नगारे लोल गरजै चक्र वर, वीरनपै वांकुरे बहा-

ली घबलति हैं। लछिराम रथ धाजि नट के घटा से नथें,  
सूरज के रथ की प्रमाली प्रचलति हैं। रामचन्द्र सोई बरहे  
ती रघुवसिन की, हेरि हेरि आसुरी सिखर मचलति हैं।  
तव तव हलचल होत त्रिभुवन भारी, जब जय चमू खु  
रङ्गिनी चलति हैं ॥१९६॥

॥ अथ अर्थावृत्ति यथा—दोहा ॥

जबहिं अरथ की आवृत्ते, फिरि फिरि पद में हेरि।

दीपक अरथा वृत्ति तहैं, धरनत बुधवर टेरि ॥१९७॥

॥ यथा कवित्त ॥

सातौ दीप अजब अतङ्क सरसाय धड़ो, धगर विराट  
वेप विरद धगारे तू। लछिराम सान में सुमन खिले डेवन  
के, असुर बितान पर गजब गुजारे तू। सिरमौर बीर भान  
वंस अथतस राम, जय चमू चारु चतुरङ्गिनी सँवारे तू। बि  
कसे सितारे फलै कुमुद कलीन फोरि, वार पार अन्धकार  
भार अवतारे तू ॥१९८॥

॥ अथ द्वितीय पदार्थावृत्ति वर्णन—दोहा ॥

पद अरु अर्थ बुहन की, आवृत्ति फिरि फिरि होय।

कहत पदार्थावृत्ति तहैं, दीपक आवृत्ति जोय ॥१९९॥

॥ यथा कवित्त ॥

करिके कुलेल सनकारत जँजीरै जोर, लक्ष्मण भसुण्ड नीर  
छोदत फुहारे से। लछिराम राव रामचन्द्र के नगर घर, वी  
थिन धगर धीच आनँव पतारे से। धारे मद घहत धरत  
झरना से सजे, घदन अमन्द महा मन्वर सँवारे से। गुझरत

झमकैँ मतंग मतवारे मंजु, गुज्जरत झमकैँ मलिन्द मत-  
वारे से ॥२००॥

॥ अथ प्रतिवस्तुपमालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जबहिँ दुहुन को वाक्य बल, कीजै एक समान ।

प्रतिवस्तुपमा भूषनै, तहँ बरनत मतिमान ॥२०१॥

॥ यथा सर्वथा ॥

सागर श्री मुकातहल सौं, महा मन्दर औषधी लौं  
सुभ-साजैँ । गङ्ग तरङ्ग लौं तीन्यों धरा, द्विजराज सौं वेदही  
सोभ लौं राजैँ । धीर सौं वीर गँभीरता सौं, गुनी यों लछि-  
राम सयान समाजैँ । ताप सौं देव दिनेस प्रकास, प्रताप  
सौं राम नरेस बिराजैँ ॥२०२॥

॥ अथ दृष्टान्तालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

बरनि विम्ब प्रतिविम्ब सम, वाक्य धर्म जुग साज ।

अलङ्कार दृष्टान्त तहँ, परमानत कविराज ॥२०३॥

॥ यथा सर्वथा ॥

माधुरी हास बिलास भन्यो मुख, भाल पै चन्दन ख्योर  
सुहावै । त्यों लछिराम खुले कर दानुमैँ, कल्प लतान मैँ  
मौज न आवै ॥ राम कलाधर की सुखभा लखे, आंखिन को  
रुख और न भावै । छोड़ि तरङ्ग सुधासरि को, कोऊ पोखरी  
मैँ जल पीवन धावै ॥२०४॥

—॥ पुनः ॥

साहसी सिंह सुन्यो बन मैँ तिमि, लक्खन वीरता जागैँ  
विशाल है । कामकी सुन्दरता लछिराम त्यों, मोहिनी मैँ रिपु  
दौन की चाल है ॥ सम्भु को दान सुरेस की साहिबी, राम

नरेस मैं त्यो कर क्याल है । दीपति सान कलाधर को, लखे  
कीरतिमान भरत्य भुआल है ॥२०५॥

॥ अथ निदर्शन अखण्डार वर्णन—दोहा ॥

करि एकै आरोपिये, जुसम वाक्य जुग अर्थ ।

शब्दनि जो सो मानिये, निदरसना सामर्थ ॥२०६॥

॥ यथा सर्वथा ॥

ओज पतङ्ग सरोज विलास, मनोज मैं मोहनी रीति  
पैसी है । स्वच्छता गङ्ग सुधाकर में, सुधा देवन मैं तप रीति  
जसी है ॥ मेघ मलैज मैं सीतलता, लछिराम छमा छवा  
सरसी है । षाह बली रघुनाथ के हाथन, धीच सु धीरता आनि  
वसी है ॥२०७॥

॥ द्वितीय वर्णन—दोहा ॥

अपि अवर्ण्य के धीच मैं, वर्ण्य धर्म करि गौर ।

वर्ण्यहु धीच अवर्ण्य को, थापै तिमि सिरमौर ॥२०८॥

॥ वन्य में अवन्य को धर्म यथा—सर्वथा ॥

आनन ओज अमन्द प्रमान, कलाधर मैं वही छाह परी  
है । अङ्ग विलोचन की लछिराम, प्रकासक लालिमा, कल  
फरी है ॥ मौज महातम की महिमा, फल कल्प-लता परतीति  
धरी है । गौर गैभीरता थी रघुनाथ को, छीर समुद्र के धीच  
भरी है ॥२०९॥

॥ अथ अवन्य में वर्ण्य को एक धर्म, यथा—सर्वथा ॥

मानस मंजु मैं आनैव भाव, सवा रस एकई की अभि  
लाखे । सांकरे मैं वने खम्भ धरा, अवलम्ब न और की  
आवत आखे ॥ दूसरी बात गनै न कळू, लछिराम प्रमानहि

के रस चाखें । लायक श्री रघुनाथ कृपानिधि, पैज पपीहरा  
को मन राखें ॥२१०॥

॥ अथ सद अर्थ असद अर्थ निदर्शना सद अर्थ यथा—दोहा ॥

करै अवस्था सों निजै, भलो बुरो फलदान ।

सासद अर्थ निदर्शना, इमि असदर्थ प्रमान ॥२११॥

॥ सवैया ॥

सन्तनै सींचत हैं सुख चारि सों, जीव ऋषीन को त्यो  
रखवारो । आनँद को भरें मोर मुनीन पै, भूमि कृषीन तैं  
ताप निकारो ॥ चाहिये साहिबी सों जम ऐसई, यों लछिराम  
प्रमान हमारो । स्याम घंटा सिख देत यही, रघुनाथ को या  
विधि रूप सँवारो ॥२१२॥

॥ अथ असद अर्थ यथा—दोहा ॥

असद जो निज व्यवहार करि, औरन पर धरि ज्ञान ।

तहँ असदर्थ निदर्शना, कविकुल करत प्रमान ॥२१३॥

॥ यथा सवैया ॥

धूरि धुरेटे चपेट परे महि, सङ्ग न कोऊ सहायक गोट  
है । भैया सगो भयो बैरी समै लहि, बूडिगयो बल बाहँ उ-  
दोत है ॥ और कहा कहिये लछिराम जू, सोई मिलै फल  
जाकर बोत है । तारा कही मुख बालि निहारिकै, राम न  
जाने को या फल होत है ॥२१४॥

॥ अथ व्यतिरेकालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ अवर्ण्य अरु वर्ण्य को, कछु विशेष व्यवहार ।

अधिक न्यून सम भेद विधि तहँ व्यतिरेक विचार ॥२१५॥

॥ अधिक यथा—कविच ॥ ।

सुहृद सरोजन पे बैसई विलास भर, कुमुद कुवाली  
 सिमि सस्पुदित डर सों । कोक मुनि मण्डल असोक अनु-  
 रागन में, भाग भरे भौर कवि कोविद अमर सों ॥ लछिराम  
 राजें रजनीहू में प्रकासित सो, तुलिंगो विचार में बराधरी के  
 लर सों । मण्डन भुवन महाराज रामचन्द्र कछू, रावरो प्र  
 ताप हे विशेष विनकर सों ॥२१६॥

॥ मृत यथा—कविच ॥

सौरमित सीतल सुधारस धलित धर, कुमुद हिसून पे  
 सुरूप सों जगत है । लछिराम वहके चकोर जन जीवन पे,  
 जीवन लों कर को प्रधाह उमगत है ॥ मङ्गलीक मण्डल म  
 नोहर अमल अंस, असुर तमालिने करत धल गत है । मे  
 थिली धवन सम कार चन्द पूनो कछू, थासर विलास पर  
 ऊनो सो लगत है ॥२१७॥—

॥ अय सय व्यतरेक यथा—सर्वथा ॥

मैंहिं कमान छटा पटपीत पै, जोति जमा जगै जाहिर  
 नीरे । सङ्गमी सौरम रासि सुधामई, भूपर फैलत रह हरि-  
 रे ॥ बांधत थोलि कथा लछिराम सों, मोर मुनीन के जोर  
 जँजीरे । स्पाम घटा रघुनाथ सुरूप, करै सब के मन मौज  
 में सीरे ॥२१८॥

॥ अय सशक्ति मङ्गहार वर्णन—श्लोका ॥

रस भेवित जहँ धरनिये, सब को एके साथ । -

भूपन सुभग सशक्ति तहँ, परमानत गुन माय ॥२१९॥



॥ यथा सर्वैया ॥

आरत बैन सो दीन दुखी मिल्यो, साहसहू रच्यो सोक  
समूरो । भेटत ही भरि अङ्क कलङ्क के, अङ्क मिटाय रच्यो  
रन सूरु ॥ राजसिरी परमारथ स्वारथ, भाल विभीषन के  
भन्यो रूरो । आनन सामुहे श्री रघुनाथ के, एकई वार म-  
नोरथ पूरो ॥२२०॥

॥ अथ विनोक्ति थलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहँ प्रस्तुत कछु विन रहै, छीन प्रगट दरसाय ।  
भूषन प्रथम विनोक्ति तहँ, वरनै बुध कविराय ॥२२१॥

॥ यथा कवित्त ॥

बीते कई वासर अपार वार आसरे मै, सागर गँभीर  
धीर धरम धिराजै है । लछिराम कोटिन प्रताप बड़वानल  
सो, दारुन दरेरे दल दरप दराजै है ॥ कौशल कलस कम  
नैत जङ्ग जैत सङ्ग, जामवन्त जदपि सुकण्ठ की समाजै है ।  
बिनै बनचारी की नरेस मणि रामचन्द्र, रोष विन वीर पै न  
वीरता विराजै है ॥२२२॥

॥ पुनः ॥

वांह बल विरद बिसाल वरिवण्ड वीर, मण्डन भुअन  
बीरताई है अमर मै । लछिराम ललित गणेश अमरेस ब्रह्म,  
साली समसेर गज केहरी कमर मै ॥ ज्वाली जङ्गवान घन  
घोरिया कमान रोदे, जदपि न सोर ऐत्तो शम्भु के डमर  
मै । चौदह सहस खरदूषन समत्य सोहैं, सोहैं ते न राम रथ  
बिस घा समर मै ॥२२३॥

॥ सर्वथा ॥

कानन भोज अमरावती यों, सुर भान लों सान सन्तो  
लहरात है । पुष्प प्रताप प्रभा लछिराम, सु रातेऽपताकन ते  
फहरात है ॥ राम सुरूप निधान को रूप, प्रकासक पञ्चवटी  
न अमात है । लक्ष्मण-मेथिली साथ जऊ, रिपुदौन भरत  
विना न सोहान है ॥२२४॥

॥ पुनः ॥ - २

केसरी अङ्गद नील सुखेन, सुकंठ पै साहिबी यों झलकी  
है । बाको विभीषण रीछपती, नल लालिमां ओरन में ल  
लकी है ॥ राम सिरोमनि ल्यों लछिराम जू, धीरता लक्ष्मण  
की बल की है । सेनप सान भरे सिगरे, हनुमान विना न  
प्रभा बल की है ॥२२५॥

॥ द्वितीय वि०—दोहा ॥

कञ्जुक हीन प्रस्तुत भये, जहँ प्रभाव सरसाय ।  
है चिनोक्ति तहँ दूसरी, धरनत कवि समुदाय ॥२२६॥

॥ यथा कवित्त ॥

मेथिली विसाल ब्रह्मरासि की कलस कल, ताप गरजन  
भाल तिलक घनावैगो । आरत घनन अपराधहि छमा कराय,  
लछिराम लछिमन विनती सुनावैगो ॥ परम सुजान दशवदन  
प्रतापवान, भासमान दूसरो विरद जग छावैगो । धरम धि  
राज महाराज रामचन्द्र सोहँ, परिहरे गरव प्रभा अनन्त  
पावैगो ॥२२७॥

॥ सर्वथा ॥

धीन सभा सहिके अपमान, विचारिके ही में गुमान छली

को । श्री रघुनाथ के सामुह्ये बैन, अनाथ सो बोल्यो लखाय  
गती को ॥ भेंटतै अङ्ग कुअङ्ग मिटै, दियो भाल थली भलो  
भाग सु टीको । छूटत ही दसकण्ठ को साथ, विभीषन राव  
त्रिकूट मही को ॥२२८॥

॥ अथ समासोक्ति अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

प्रस्तुत मैं अस्फुरित जहँ, अप्रस्तुत को भाव ।  
अलङ्कार तहँ कहत हैं, समासोक्ति कविराव ॥२२९॥

॥ यथा कवित्त ॥

धनुष सो धनु बूँदैं वान सों प्रकासमान, बीजुरी लों मा-  
धुरी हँसनि भावसन मैं । बरन घटालों बकुलावली सु मोती  
माल, मुखर सो बैन धारा दान सरसन मैं । लछिराम सीरे  
त्रिभुवन जन गावैं जस, जालिम जवासा बैरी वन झरसन  
मैं । झलकी परैं हैं परमानद सो अभिराम, चारु चतुराई सु-  
न्दराई स्याम घन मैं ॥२३०॥ \*

॥ अथ परिकर अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥

जहां विशेषण ठानिये, आशय सहित प्रवीन ।  
अलङ्कार परिकर तहां, बरनत हैं रसलीन ॥२३१॥

॥ यथा कवित्त ॥

मङ्गलीक माला गरे हार गज मोतिन के, ख्योर भाल  
मलय विसाल अवतारा को । आनन सुरूप सरवर हांस हीरा  
हार, बचन अमीरस अमन्द सुभ सारा को ॥ अरविन्द नैन

\* तिलक—यामे प्रकाश वर्णन कवि स्याम घन को करै है, रीति रहस्य  
रामचन्द्र की अस्फुरति है । यही प्रस्तुति मैं अप्रस्तुति भई ॥

अङ्ग भूपन जवाहिर के, लछिराम जस हिमालय के पसारा  
को । सीतल करेगे मेदि ताप मिभुजन राम, स्याम धन बल  
धरसि दान धारा को ॥२३२॥

॥ अय परिकर अंकुर अलङ्कार वर्णन—दोहा ॥३॥ =

साभिप्राय विशेष सो, परिकर अंकुर भाति ।

धरतत बुध अनुमान करि, प्रन्यन को मत जानि ॥२३३॥

॥ यया सवेया ॥

चन्द सो आनन भाल बिसाल में, चन्दन ख्योर सभाय  
सिंगार में । माल गरे मुक्तावली के, अरबिन्ध बिलोचन  
मोज के भार में ॥ रङ्ग सँवारि घटा सो लसे, लछिराम सबे  
गुन सीरे विचार में । राम कृपानिधि वैहें सही, फल घान्यो  
कृपा करिके चकवार में ॥२३४॥

॥ अय अमेयालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

शब्द एकही में जहां, अर्थ बहुत सुख साज ।

अलङ्कार अश्लेष तहें, धरतत पपिहत राज ॥२३५॥

जुगल रीति सों प्रथमही, गनि अभिन्न पद धीर ।

फिरि पूजो गनि भिन्न पद, प्रथम मत गम्भीर ॥२३६॥

॥ अभिन्न पद वर्णन—दोहा ॥

भेद भिन्न पद काढ़िये, पदसों पद परमानि ।

अरथ भिन्न करि शब्द के, उपमाश्लेषहि मानि ॥२३७॥

॥ यया कपिच ॥

परम प्रकास मान सौरभित स्वच्छ साज, पावन त्रिजग

\* तिलक—या वीर विजयेरी में अभिप्राय श्रीवल्लभ गुणा को अपेक्षा ।

सीरे गुन सरवस है । भूषण महेश द्विज देवन हरन ताप, सुभ  
स्वत वरन प्रभाव एक रस है ॥ नागरी सिंगार चारु नागर  
नरेस चाहै, लछिराम लोचन अनन्द आदरस है । तरल तरङ्ग  
गङ्ग चन्द्रिका अभङ्ग मलै, मङ्गलीक राव रामचन्द्र को  
सुजस है ॥२३८॥

सांवरे वरन सुकुमार श्री मुखर मंजु, बनक विलास में  
सुमन धनु सर के । परम प्रमोद बन सङ्ग बीजुरी सी, बाम,  
औलि बक माल मुकताहल के लरके ॥ मन्दर धरन लछिराम  
रस वरसत, खरके रहत रङ्ग मानस में हर के । मङ्गलीक  
मोहन अमन्द अभिराम राजै, काम धन त्याम रामचन्द्र  
जस वर के ॥२३९॥

॥ अथ भिन्न पद—यथा कवित्त ॥

मंडित पराग भाग सुखमा सँवारे स्वच्छे, सीरे त्रिभुवन  
जन सङ्ग रस वर के । हरन प्रदोष मारतंड तैं महातम ल्यो,  
लछिराम राजै अवतंस भूमि थर के ॥ राजवंस देव द्विज  
राजन परम प्रिय, कामद रतन हैं महान सरवर के । कमल  
सुरङ्ग के त्रिबेनी के तरङ्ग कैयों, मङ्गलीक चरन महीप रघु-  
वर के ॥२४०॥

॥ अथ ओज माधुर्य प्रसाद गुन संक्रमितश्लेष—यथा बोधा ॥

माधुर्योऽज प्रसादं मे, गुन संक्रमित सुधीर ।  
त्रिविधि धरमि अश्लेष पुनि, सुकधि सुनत गंभीर ॥२४१

॥ अथ ओज गुन संक्रमित श्लेष—यथा बोधा ॥

श्लेषके शब्द न वाच में, अर्थ सु बहु मन्भीर ।  
ओज सङ्गुन संक्रमित सो, प्रथम श्लेष सुधीर ॥२४२॥

॥ कविच ॥

मन सबही के हेरें कछुक विलास हीमें, परम प्रकास  
मान सुमन समीर के । जंग जैतवार मही मंडल अखंड ओष,   
आव सो घलित जगै जौहर गँभीर के ॥ दिन मनि मित्र  
निसाधरन पे औरै सान, लछिराम आनँद घलित रस धीर  
के । कोक नद धारे काम कैवर सँवारे कैधौं, करुना कलित  
नेन राम रघुवीर के ॥२४३॥

॥ अय मापुष्यं गुण संक्रमित श्लेष यथा—शरा ॥

कछु प्रकाश गम्भीरता, कछुक शब्द के संगे ।  
माधुरज गुण संक्रमित, या श्लेष नव रंग ॥२४४॥

॥ सर्वथा ॥

षन्द्रिका चन्दन चारु विलास, मिले नखतावली माल  
समाजै । चौहँ चकोर भिरे मुनि मंडल, मडित रूप सुधा मई  
साजै ॥ आनँद अस अमास न गात में, यौं लछिराम धनी  
पर काजै । कामद राम कलाधर है, के कलाधर पञ्चवटी-में  
धिराजै ॥२४५॥

॥ अय प्रसाद गुण संक्रमितश्चेप यथा—शोरा ॥

वियिधि भांति सौं शब्द में, अर्थ प्रकाशक मानि ।  
गुनि प्रसाद गुण संक्रमति, यौं अश्लेष घखानि ॥२४५॥

॥ कविच ॥

बेरी गज घर भाल फोरत करे न धार, सहज सिकारी ख  
ल मृग मंडरी फो है । लछिराम राम सम्भु दल में छिंगार  
फूदि, नाघस पहार नद नाद अम्यरी फो है ॥ अजय उमङ्ग

रनरङ्ग में मुरै न केहूं, बरन लँगूर को प्रभाव लहरीकोहै ।  
बलवान् महावीर मण्डन भुवनवन, केसरीकुमार कै कुमार  
केसरी को है ॥ २४६ ॥

॥ अथ अप्रस्तुतिप्रशंसालङ्कारवर्णन-दोहा ॥

बरनत अप्रस्तुति जहां, प्रस्तुति भा अनयास ।

अप्रस्तुति परशंस तहैं, भूषण परम प्रकास ॥ २४७ ॥

कारजमुख कारन कतहूं, बरनत समुझि सुयान ।

कारनमुख कारज कतहूं, या प्रकार अनुमान ॥ २४८ ॥

कहि विशेष सामान्य मुख, कतहूं विचारत धीर,

कतहूं कहि सामान्य मुख, यौं विशेष गंभीर ॥ २४९ ॥

कतहूं तुल्य प्रस्तावमें, तुल्य कथन मुखसाज ।

अप्रस्तुति परशंस भनि, पञ्चभेद कविराज ॥ २५० ॥

जाहि चाह करि कवि रचै, प्रस्तुति तिहि परमानि ॥

अनचाहै जो अस्फुरै, अप्रस्तुति अनुमानि ॥ २५१ ॥

॥ अथ कारजमुख कारनकथन-यथा कवित्त ॥

नील नल नागर उजागर सुकण्ठ सौहैं, इतूमान अङ्गद  
सुखेन रोष रुषतैं । लछिराम जामवन्त केसरी कुमुद सेना  
वानर विराट भाल पैजन परुषतैं । रावणके सौहैं दूत बचन  
अभूत बीर उतरत सेत बांधि दारुण दुरुषतैं । लखनि गंभीरताई  
गरब त्यों बीरताई, बलकी परै है राम लखन धनुषतैं ॥ २५२ ॥

॥ तिलक ॥

यह जो समस्त वृत्तान्त वर्णन कियो सो कारण प्रस्तुत  
है अरु सेनाके प्रभावते जो दूतके हृदय में भयानक भयो  
ताको नेकहू ना कह्यो सोई कारण अप्रस्तुत है ॥

॥ अथ कारनमुख कारजकथन-यथा कवित्त ॥

फहरे निसान मारु वाजे त्यों वजत मञ्जु, ठाकिले मतङ्गन  
की माला वितरति है । लछिराम हरष हरोल हनुमान मुख,  
अङ्गद बहाली अङ्गअङ्ग सुतरति है ॥ मुज फरकीले नलनील  
वङ्ग विकसत, सुघर सुकण्ठ सोहैं धारु चितरति है ।  
लखनि तिरीछी राम लखन चखन कोरे, सागरपे सेत वाँधि  
सेना उतरति है ॥ २५३ ॥

॥ तिलक ॥

यह सेनाको उत्कर्ष आगमन वर्णन कियो सो कारण  
अप्रस्तुत है ताते रावणकी रुचि संग्राम हेत बगयवो कारज  
प्रस्तुत है ताको दूत ना प्रगट कियो ॥

॥ अथ सामान्यमुखविशेषकथन-यथा कवित्त ॥

हेरत ही परदोष दुखी, पर आनैदसों मुख है सतसङ्गमें ।  
त्यों लछिराम विषेकै प्रभाष, सो ठाने सदा सतवार उमङ्ग में ॥  
आनै न कैसहू झूठ सुभाषन, भावत वीरता भाव उतङ्गमें ॥ ते  
घनि हैं रघुवीरके सामुहैं, जे भट जूझत हैं रनरङ्गमें ॥ २५४ ॥

॥ तिलक ॥

सामान्य पदार्थ प्रथम वर्णन करि पश्चात् शूरनको विशेष-  
पकारि उपदेश्यो ।

॥ अथ विशेषमुखसामान्यकथन-यथा सवेया ॥

वे उनके शिर साजें फिरीट, मुही पगरी त्यों सँवारत हैं मने,  
वे उनके धनुवान सँवारत, वे उनके मुख पान प्रभा सने ॥  
और कहाँलों कहै लछिराम, सभी जग फेली विचार सबे ठने ।



साथमें लखन औ रघुनाथकी रीति प्रतीति निहा-  
रतही बनै ॥ २५५ ॥

॥ तिलक ॥

यामें विशेष श्रीराम लक्ष्मणको दृष्टान्त देत हैं सामान्य  
परस्पर जनावत है ॥

॥ अथ तुल्यप्रस्तावमें तुल्यको कथन-दोहा ॥

शैव सदा बडभागमें, पूजत गौरि महेश ।

राम रसिक सिय-रामके, गावत गुणगण बेस ॥ २५६ ॥

॥ अथप्रस्तुतअंकुरअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

दूजी प्रस्तुतिको जहां, प्रस्तुति बीच प्रभाव ॥

प्रस्तुत अङ्कुर मानिये, अलङ्कार कविराव ॥ २५७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

भरम गँवावै झरवेरि संग नीचन तें, कण्टकित बेल केत-  
कीनपै गिरत है। परिहरि मालती सुमाधवी सभासदानि, अधम  
अरुसनके अङ्ग अभिरत है ॥ लछिराम शोभा सरवर में  
विलास हेरि, मूरख मलिन्द मन पलना थिरतहै । रामचन्द्र  
चारु चरनाम्बुज विसारि देस, वन वन बेछिन बबूरे में  
फिरतहै ॥ २५८ ॥

॥ पुनः ॥

भरम गँवाय लोक लाजके भरम खोलै, बोलै बैन अनरथ  
आनंद लगनसे । भोर सांझ बहकि बिहंगनसे लालीपर, भाँवरें  
भरत बे विचार तन मनसे ॥ लछिरामरूप रामचन्द्र कल्पतरु  
छोडि, कल्पना करत झूठे झूठिये वचनसे । रङ्गदार मूरख  
महीपन बदन सुक, बिन मागमेंतै गाउ मेघउ मधनये ॥ २५९ ॥

॥ अथ परजायोक्ति अलङ्कार वर्णन-दोहा ॥

वचननकी रचना अधिक, प्रथम भेद परमानि ।

व्याजहि कारझ साधिवो, परजायोक्ति प्रमानि ॥ २६० ॥

॥ प्रथम वचनरचना-यथा क्वचित् ॥

दशो अवतारके गुनानुवाद सुने कान, दानी दीनबन्धु भार  
मुषन उड़ायेतैं । लछिराम घनुष स्वयम्बर कहाइे मौळि,  
मण्डली महीपनकी वीरता मुड़ायेतैं ॥ सरहज सों हैं तिरछै  
हैं क्यों लजोहें नेन, देहें ना ननद विन हीतल जुड़ायेतैं ।  
गति हे गंभीर ब्रह्मराशि रघुवंश राम, रघुवीर मैथिलीके कहुन  
छुड़ायेतैं ॥ २६१ ॥

॥ पुन ॥

परिहार फलि हे फलकि नल नील झूके, मन्द परिजे हे  
सान धानर वहालीसों । लछिराम जामवन्त सुघर सुकण्ठ  
दल, वृद्धि वहिजे हे भौर लहर करलीसों ॥ अरज सुखेन  
वीर लछिमन रावरेसों, उतरु कहीजे राजनीतिकी प्रना-  
लीसों । गौमतीकी भांति शिला सुन्दरी बने न सब, राव राम-  
चन्द्र चरनाम्बुजकी लालीसों ॥ २६२ ॥

॥ पुन ॥

वालि तने वदन विलोकि विहसों हैं कौन, तापस कटकमें  
सुभग जगभारीकों । जामवन्त केसरों सुकण्ठ पौन येहें, कछु  
मानों लछिराम में प्रथम धनचारीकों ॥ अङ्गद विहंसि दशक-  
न्धरसों बोल्यो वही, वीरगनतीमें वजवायो करतारीकों ।  
मान्यो मालवाने जान्या विछलि त्रिकूट वीर, धावनि चतुर जो  
रजान्यो फुलवारीकों ॥ २६३ ॥

॥ अथ दूसरी पर्यायोक्ति वर्णन-सवैया ॥

चातुरी सों मनि-पालने ऊपर, साजती हैं फलफूलके देने ।  
पच्छिन पींजरेके लछिराम, बुलावतीं चारे चखाय सलोने ॥  
श्रीरघुनन्दनको मचल्यो लखि, ढारतीं मेल मिलाप के टोने ।  
और महीपकुमारन कौशिला, बांटतीं हीरक हार खिलोने २६४

॥ पुनः ॥

या नख नौलसों गङ्ग कर्ठी, बठीं तीनहूं लोक तरङ्ग पसारे ॥  
फेरि मिलाय हों मैं करते, बहु बासर सों यह व्योत विचारे ॥  
नेम यही द्विजदेवनतैं, लछिराम निषाद हैं नाम हमारे । पावन  
पाँय पखारिकै राम, उतारौं तुम्हें तरनीके सहारे ॥ २६५ ॥

अथ निन्दाव्याजस्तुतिअलङ्कार वर्णन-दोहा ॥

व्याजहि निन्दाके जहां, अस्तुति भाव अमन्द ।

व्याजस्तुतिनिन्दा तहां, बरनत कविकुलचन्द ॥ २६६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बदन विरूप लखि सूरपनखाको माखू, बाजे बजवाये मन  
देवनके कसके । लछिराम चौदहौ सहस पलही में मारे, दल  
खरद्रूपन समर सरकसके ॥ बिछुलि कमान रोदे फोरें भाल  
भेजे, फेरि कतरें करेजे रेचे आलम अकसके । परवसी दरद  
न बूझैं रघुवीर बडे, बेदरद बानहैं तिहारे तरकसके ॥ २६७ ॥

॥ पुनः ॥

राजहंसिनीनमैं सुरूप राजहंस रचि, सनमान सङ्ग मानस-  
रमें धिरत हैं । परखि परीनपै प्रभा त्यों लछिराम छाया, परम  
प्रकाश टूटि तारेलों गिरत है ॥ बरजो न मानै बरजोरी

अङ्गभरि २ असुरनकीरति कुमारी सों भिरत हैं । राव राम-  
चन्द्र वीर जालिम तिहारो जस, चौदहों भुवन व्यभिचारीसों  
फिरत है ॥ २६८ ॥

॥ अथ स्तुतिव्याजनिन्दा वर्णन-दोहा ॥

अस्तुतिमें झलके जहां, निन्दाको परभाव ।

अस्तुति निन्दा व्याज तदै, धरनत पण्डित राव ॥ २६९ ॥

॥ यथा क्वचित् ॥

वारन उचारनमें वाहन सों दूनो दौरि, द्रौपदी समैके  
वांक्कपन विसरत हो । ब्रह्मराशि रघुवशभूपन परमहस, पारस  
पदार पग पीछे क्यों धरत हो ॥ चान्पो युग चौदहों भुवन देव  
दीनबन्धु, पेजपरिपाटीपे अनाक निकरत हो । लछिराम  
सांकोरमें राव रामचन्द्र वीर, कौशलकलश है कनोडे-  
क्यों परत हो ॥ २७० ॥

॥ पुन ॥

देव-बन्दि छेरे षटपारन गरब गारि, सिन्धु सेत वांधिवेको  
परत फोरैको । परमकुलीन परमात्मा परमहस, धेर सेवरी  
छे धेर विरद वियोरैको ॥ शिरताज राज महाराज रामचन्द्र वीर,  
धरमधिराज रावेरसो वरजोरै को । शङ्कर शरासन स्वयम्बर में  
तोरै अच, लछिराम शङ्कट शरासनहि तोरै को ॥ २७१ ॥

॥ सवेया ॥

नारव्यो न ठक्खन की धनु रेखें, विमान की वायुलों वेग  
कराहै । गीध जटायुसों अङ्ग रच्यो, फिरि जानि जरापन लाज  
धरी है ॥ बालिके फन्दसों फादि बच्यो, लछिराम कथा को

कहै सिगरी है । वीरको रावन रावरे सो, बनमें जिन राम की  
नाम हरी है ॥ २७२ ॥

॥ अथ स्तुति व्याज स्तुति-दोहा ॥

अस्तुतिमिस झलकै जहां, अस्तुति और सुबेस ।

अस्तुति मिस अस्तुति तहां, बरनें सुकवि नरेस ॥ २७३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

रोदेसों बिछलि रथ सारथी समेत बेधै, वदन तुरङ्गन पै  
बेझे लों तरत हैं । लछिराम अजब अतङ्क वार ज्वालाकार,  
मालामें असुरके न केहूं अतरत हैं ॥ तापर प्रचण्ड यह  
कौतुक सराहै कौन, रामअदलोको जिन्हें कीन्हे छतरत  
हैं । भेजा भाल फोरि बान कुञ्जर बरेजा फेरि, कातिल  
करेजनके रेजे कतरत हैं ॥ २७४ ॥

॥ निन्दा व्याजनिन्दा-दोहा ॥

निन्दामिस बरनत कहैं, निन्दा अपर महान ।

निन्दा मिस निन्दा तहां, परमानत गुनवान ॥ २७५ ॥

॥ यथा सबैया ॥

श्रीमिथिलाके स्वयम्बर में, धनुभङ्ग समै ते सबै परमानै ।  
सुन्दरी देव अदेवनकी भरी, भूरि भयङ्कर ते सनमानै ॥ तापर  
कौतुक या बग-यो, लछिराम सुकीरति कौन बखानै । रावन  
रावरे बाहन को बल, अङ्गदके पग औरऊ जानै ॥ २७६ ॥

॥ अथ आक्षेपालङ्कारवर्णन-दोहा ॥

आक्षेपालङ्कारकों, त्रिविधि कहत गुनधीर ।

प्रथम निषेधाभास फिरि, बच्चन फेर गम्भीर ॥ २७७ ॥

राखे जतन दुरावसो, वर निषेधके साथ ।

आक्षेपालङ्कार यों, धरनत बुध बुधिनाथ ॥ २७८ ॥

॥ प्रथम निषेधामास-यथा सधेया ॥

वानर बालि बली को कुमार हों, अङ्गद मानिये नाम  
इमारो । तीनहू लोकनके शिरमोर, हमें इत भेजिये न्यौत  
विचारो ॥ वीसहू हायनके बलसों, लछिराम जू या न ट्यो  
पग टारो । दूतनमें दशकन्धर श्रीरघुनाथ-प्रभाव अभूत  
निहारो ॥ २७९ ॥

॥ पुन ॥

जूधप केसरी नील मयन्द, सुखेन लँगूर जहाँ फौ देव  
रीछपती हनुमान सुकण्ठ को, ज्वालिया आनन लछिराम  
गो ॥ लक्ष्मन बाननको लछिराम, प्रवाह सुभूपर त्यो कनोडे-  
रावन दूतनमें रघुबीरके, धेरको जोहर जानि परैगो ।

॥ द्वितीयवचनफेर-यथा सवेया ॥

चारिहू ओर कहीं किरनें, अथवा फरक्यो फनमाल  
फनीको । कोटिन भार अँगार को है, अथवा बढवानल या  
अवनीको ॥ राक्षसी हेरि बली हनुमाने, रचें लछिराम सतर्क  
अनीको । भान-उदै प्रले-धासरको, अथवा सुखलङ्क लँगूर  
घनीको ॥ २८१ ॥

॥ पुन : ॥

जीवन श्रीमहाराजकुमार, पयानसमे ट्यो ना उम-  
चेगो । लक्ष्मने साथ सुने लछिराम, सु या पलमें यही न्यौत  
अरेगो ॥ छोडिबो औष अघानक तो, बली या व्रतवारो लकीर

खचैगो । प्रान विलोकियै पञ्चवटी बन, रावरे सों पहिले  
पहुँचैगो ॥ २८२ ॥

॥ अथ विरोधाभास अलङ्कार वर्णन -दोहा ॥

भासै विदित विरोध जहँ, जमकवलित पदसङ्ग ।

वरनि विरोधाभास तहँ, अलङ्कार नवरङ्ग ॥ २८३ ॥

॥ यथा सर्वैया ॥

किङ्कर श्रीरघुनाथको हौं, कछु किङ्करताको न व्यौत  
बिचारौं । साथी सुकण्ठ हरौलको हौं, रनरावन साथी हरौ-  
उपछारौं ॥ हौं सुत केसरीको लछिराम, सुकेसरी लङ्कवली-  
नको मारौं । मौज मट्यो महाबीर हौं मैं, महाबीर निशाच-  
के मद गारौं ॥ २८४ ॥

भेज ॥ अथ विभावनाअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जनके विदित होय बिन कारनै, कारज को सब साज ।

वरनत प्रथम विभावना, अलङ्कार सिरताज ॥ २८५ ॥

नि ॥ यथा कवित्त ॥

ऋषिनकी वामै हेरि करती कलामैं सम्पा, इयाम घन वरन  
सँवारै कौन कलके । बलकल बसन सुरूप त्रिभुवन भन्यो,  
भाल बिन कलंगी मसाल झलाझलके ॥ गजरथ पालकी  
चमर छत्र हीन तऊ, लछिराम लसत सिँगार विश्वदल के ।  
कौशलकुमार ये अतर पान छोडे बन, बदनकी श्वासन  
तरङ्ग परिमलके ॥ २८६ ॥

॥ पुनः ॥

भूषण बसनवारे बलकल डारे अङ्ग, रोम रोम अनुरूपे रूप  
के सहर हैं । जटाजूट शिखर, परिमित भाल, परम

प्रतापवान जगर मगर हैं ॥ दल दूब आसन सिंहासन सोभा  
समान लछिराम नाम रघुवीर ब्रह्मवर हैं । श्यामवन वरन  
अकेले आभरन भूमि, परनकुटीमें ये कदाकि कला-  
घर हैं ॥ २८७ ॥

॥ द्वितीय विभावना वर्णन-दोहा ॥

हेतु अपूरणते जहा, कारज पूर अशङ्क ।

वरनें विषुप विभावना, मानि दूसरो अङ्क ॥ २८८ ॥

॥ यथा कथित ॥

तरकसी छोटी कथ छोटे छोटे धनुषान, छोटे कर छोटी  
छोटी आंगुरी वगरमें । छोटे छोटे वदन विशाल भाल नैन  
लाल, वार गभवारे बालप्रभाकी लहरमें ॥ लछिराम छोटे पग  
चलिके कुमार दोऊ, करत अचूक धार आचरज हरमें । हनु  
मान अङ्गद भरत्य शत्रुहन हारे, लखन समत्य लवकुशके  
समरमें ॥ २८९ ॥

॥ पुनः ॥

खेलत सिकार रघुवशी लवकुश लेने, बाल धेपधारी तक  
साहसी सजब के । द्वेजके मयङ्क तन परन निशक मन, ल-  
छिराम शिखर चढैया जोर जबके ॥ करन किरात फारें गजमु-  
कताके हेत, करतौ किरातिने कुतूहल अजबके । छोटे  
धनुषानन सों धन वन मन्दरमें, गिरत मतङ्ग महामारेसे  
गजबके ॥ २९० ॥

॥ पुनः ॥

वार गभवारे बान तरकस राते पीरे, धनुष हरीरे शिशुपन  
के कुलेले हैं । लछिराम जामवन्त द्विषिद मयन्द कटे, केसरी



कुमुद नील नल झगरेले हैं ॥ हनूमान अङ्गद विभीषण  
सुकण्ठ लटे, शत्रुहन भरथ लखन अलवेलेहैं । राजवंशी  
रघुवंशी बानर विराट भालु, पलमें खिलौने सम लवकुश  
खेलेहैं ॥ २९१ ॥

॥ तृतीय विभावना वर्णन-दोहा ॥  
विद्यमान प्रतिबाधकहूँ, कारज पूरो अंश ॥  
तीजो भेद विभावना, परमानत बुधवंश ॥ २९२ ॥  
॥ यथा कवित्त ॥

सङ्ग मुनिवारे हठ करिकै निखङ्ग छोरैं, मानत न केहूं  
मृगयाके भराभर मैं । अधकटे अरना बराह बाघ लोटे भूमि,  
गैड़ा गरबीले गिरे चोटन कहरमैं ॥ मन्द २ विहंसि अमन्द  
लछिराम लोने, लवकुश राते बीरताई की रगर मैं ॥  
वारन बराह बाघ बरपै किशतनके, बरजत मारु बान मारत  
शिखर मैं ॥ २९३ ॥

॥ पुनः ॥

ज्वाली जङ्ग सारथी शिखर फोरि फहरात, तोरत बदन  
बाजी गज गुन गथमैं । लछिराम रेले थहरावन झमेले लङ्क,  
छावन अतङ्क बगमेले बीर पथमैं ॥ विहंसि बिडारैं डारैं  
भूपर प्रकाशमान, तोरन चमर छत्रवार अनरथमैं । रोष्यौ  
रन रङ्ग रामचन्द्र बरजत मारैं, लखन कुमार बान रावनके  
रथमैं ॥ २९४ ॥

॥ चतुर्थ विभावना वर्णन-दोहा ॥  
कारनके तनसों जहां, कारज को अवतार ।  
भेद चतुर्थ विभावना, भाषन सुमतिभँडार ॥ २९५ ॥

प्रतापवान जगर मगर हैं ॥ दल दूब आसन सिंहासन सोभा  
समान लछिराम नाम रघुवीर ब्रह्मवर हैं । श्यामवन वरन  
अकेले आभरन भूमि, परनकुटीमें ये कहकि कल-  
घर हैं ॥ २८७ ॥

॥ द्वितीय विभावना घर्षण-दोहा ॥

हेतु अपूरणते जहाँ, कारज पूर अशङ्क ।

वरनें विदुप विभावना, मानि दूसरो अङ्क ॥ २८८ ॥

॥ यथा कथित ॥

तरकसी छोटी कध छोटे छोटे धनुवान, छोटे कर छोटी  
छोटी आँगुरी वगरमें । छोटे छोटे वदन विशाल भाल नैन  
लाल, वार गभवारे बालप्रभाकी लहरमें ॥ लछिराम छोटे पन  
चलिके कुमार दोळ करत अचूक वार आचरज हरमें । हनु  
मान अङ्गद भरतप्य शत्रुहन क्षरे, लखन समत्य लवकुशके  
समरमें ॥ २८९ ॥

॥ पुनः ॥

खेळत सिकार रघुवशी लवकुश लोने, बाल बेपधारी तळ  
साहसी सजब के । द्वैजके मयङ्क तन परन निशक मन, ल-  
छिराम शिखर चढेया जोर जबके ॥ करन किरात फारें गजमु-  
कताके हेत, करतीं किरातिने कुतूहल अजबके । छोटे  
धनुवानन सों घन बन मन्दरमें, गिरत मतङ्ग महामारेसे  
गजबके ॥ २९० ॥

॥ पुन ॥

वार गभवारे वान तरकस राते पेरि, धनुप हरीरे शिशुपन  
के फुलेले हैं । लछिराम जामवन्त द्विविद मयन्द कटे, केसरी

॥ यथा सवैया ॥

भूपर मुद्रिका डारिदियो तरुते इन्नुमान विचार हरोते ।  
अङ्ग विलोकते शङ्क भरी, सुन्यो बैन विनीत, सुधारस बोते ।  
श्रीरघुवीर को दूत हों में लछिराम तैं अम्ब छमा कर गोते ।  
मैथिली लोचन वारिजसों उमड़ेहैं उजागर सामर  
सोते ॥ २९६ ॥

पञ्चम विभावना वर्णन-बोधा ॥

प्रगट अकारन वस्तुसों, कारज वपु व्यवहार ।

पञ्चम भेद विभावना, गति मति उदय उदार ॥ २९७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

वाँद बली अङ्गद सुकण्ठ शिरमौर मृगराजकी दपटमें तिरीछे  
तरजत हैं । लछिराम केसरी कुमुद नील नल मारतण्ड मुख  
तेज जिन्हें कौन बरजत हैं ॥ बानर विराट रीछ कातिछ  
कटक हेरि, लङ्क दल दारुन के घीर लरजत हैं । गुज्जरत  
कुञ्जर कलोलें जामबन्त प्रलै मेघ बरवानी इन्नुमान  
गरजत हैं ॥ २९८ ॥

अथ षष्ठम विभावना वर्णन-बोधा ॥

कारन ते उपजे जहां, कारज परम विरोध ।

छम्बों भेद विभावना, बरनत सुमति प्रबोध ॥ २९९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

परत न चैन रैन बासर सधन बन, कैसी कढ़े ताप धीर  
नासन धरनि सों । लछिराम रोष्यो मारतण्ड मो कुचाल पर,  
कल्प समान पल धीतै या डरनिसों ॥ पन्नग विलासी मल्ले  
मन्दर पवन आवै, परचत वैरी बाहुवानल जरनिसों । लखन

॥ यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठ सोहैं दाहिनेपै अङ्गदके फूले न समात यों  
विलास बांहवलके । लछिराम लङ्गर लँगूर की लपट तैसी,  
ख्यालहीमैं झपट पसारैं खलभलके ॥ उपटी परै हैं करक-  
लित गदाकी छटा, विकसे अपर राम लखन सबलके । जौहर  
जँजीरे लालमुख हनूमान हेरि, सीरे गात पीरे परैं रावनके  
दलके ॥ ३१० ॥

॥ पुनः ॥

दिग्गज नगारे देव गरजत आपहीतैं, सगुन शची त्यो  
गौरि पूजन करति हैं । लछिराम सातो दीप सुन्दरी सँवारैं  
साज, असुरकी बामैं बन-दावालों जरतिहैं ॥ छीर भरे सागर  
सरित सरितान मौलि, मन्द मधु मालती समीर ही हरति हैं ।  
अवध अमन्द रामचन्द्र अवतारहेत, भाँवरैं दिनेशकी दिग्-  
ङ्गना करति हैं ॥ ३११ ॥

॥ पुनः ॥

गुञ्जरत कुञ्जर झमकि मतवारे बाजि, नागर बटासे नट  
बागन मुरनके । लछिराम रथके झमेले रङ्गदार माहू, बगर  
वितान पौन गौन आतुरनके ॥ जामवन्त जालिम सुकण्ठ  
लछिमन वीर, तेजे लहरेजे सब जंगके जुरनके । राव राम-  
चन्द्र चतुरगिनी चमूके भार, रेजेहोत कहर करेजे  
असुरनके ॥ ३१२ ॥

॥ द्वितीय असङ्गति वर्णन-दोहा ॥

और ठौरही जहँ करत, और ठौरको साज ।

गनत असङ्गति दूसरी, सुकविनके शिरताज ॥ ३१३ ॥

याके सातो दीपके महीप तरु, तनक न छोडयो भूमि  
घनुष महेसको ॥ ३०४ ॥

॥ सवेया ॥

घेर घनो घननादको सामुहें, त्यो घटकनके वानकी कोटें ।  
बोलत जाके कैंपे घरनी, लछिराम घरे शिर वीरता मोटें ॥  
रावनसो बलवान् घनुषर, राखे निशाचर आयुध खोटें । खाली  
परे न तरु दलमें, हनुमान हठीके लँगूरकी चोटें ॥ ३०५ ॥

॥ अथ असम्भवालकार वर्णन-दोहा ॥

कौनहु कारज सिद्धिको, करत असम्भव देस ।

अलकार मानें तहां, असम्भावना बेस ॥ ३०६ ॥

॥ यथा सवेया ॥

केसरी त्यो नल नील सुकण्ठ, पदारदि खपालमें खोदि  
बोहें । अगव ओ हनुमान सुखेन, सही लछिराम घुमा फहरें हैं ॥  
घानर भालु कोलाइलमें, जल जीव तरङ्ग सबे दविजें हैं । जाने  
को आज महीपति राम, सबे दल वारिधि बांधिके ऐहें ॥ ३०७ ॥

॥ पुन ॥

तोरिके वाननके तरुको, तहीं गेह अरामनिको विदरेगो ।  
मारिहै रावनके सुतको, लछिराम न केसहूं शक घरेगो ॥  
तेल ओ तूल दुकूलन में, सिखी पत्रग फांस हीसों निकरेगो ।  
जाने को आज त्रिकूट प्रभा, हनुमान लँगूरसों छर  
करेगो ॥ ३०८ ॥

॥ अथ असङ्गति अलङ्कार वर्णन-दोहा ॥

कारनते जहें भिन्न थल, कारजको सब साज ।

प्रथम असङ्गति भेद यो, वरनत बुध कविराज ॥ ३०९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठ सोहैं दाहिनेपै अङ्गदके फूले न समात यों  
विलास बांहबलके । लछिराम लङ्गर लँगूर की लपट तैसी,  
ख्यालहीमें झपट पसारैं खलभलके ॥ उपटी परै हैं करक-  
लित गदाकी छटा, विकसे अपर राम लखन सबलके । जौहर  
जँजीरे लालमुख हनूमान हेरि, सीरे गात पीरे परैं रावनके  
दलके ॥ ३१० ॥

॥ पुनः ॥

दिग्गज नगारे देव गरजत आपहीतैं, सगुन शची त्यों  
गौरि पूजन करति हैं । लछिराम सातो दीप सुन्दरी सँवारैं  
साज, असुरकी बामें बन-दावालों जरतिहैं ॥ छीर भरे सागर  
सरित सरितान मौलि, मन्द मधु मालती समीर ही हरति हैं ।  
अवध अमन्द रामचन्द्र अवतारहेत, भाँवरैं दिनेशकी दिग्-  
ङ्गना करति हैं ॥ ३११ ॥

॥ पुनः ॥

गुञ्जरत कुञ्जर झमकि मतवारे बाजि, नागर बटासे नट  
बागन मुरनके । लछिराम रथके झमेले रङ्गदार मारू, बगर  
वितान पौन गौन आतुरनके ॥ जामवन्त जालिम सुकण्ठ  
लछिमन वीर, तेजे लहरेजे सब जंगके जुरनके । रावरा-  
म-चन्द्र चतुरगिनी चमूके भार, रेजेहोत कहर करेजे  
असुरनके ॥ ३१२ ॥

॥ द्वितीय असङ्गति वर्णन-दोहा ॥

और ठौरही जहँ करत, और ठौरको साज ।

गनत असङ्गति दूसरी, सकविके शिरताज ॥ ३१३ ॥

॥ यथा कथित ॥

ठकिले मतङ्गमारू गरजे निसान वान, उतरत सेना बाधि  
सागर सवेरै हैं । लछिराम लखन महीप रामचन्द्र आगे,  
कोलाइल वानर विराट भाल मेरै हैं ॥ भूर्लो भाल तिलक  
हराको लङ्क घीच करि, हरवर चौहरे-अटान चगी टेरै हैं ।  
असुर बधूटी बरवस फौज मालाकार, छुद्र घटिकाके कण्ठमा-  
ल करि हेरै हैं ॥ ३१४ ॥

॥ पुन ॥

घोसाकी धमक अन्धकार भार धूमधाम, मारू बजे बाजे  
कोप कातिल कहरसों । जामवन्त जालिम सुकण्ठ केसरी  
त्यो सग, इन्नुमान अगद ललाईकी लहरसों ॥ लछिराम राम  
चन्द्र विरद वितान ओर, बगन्पो अतङ्क लकघीच भराभरसों ।  
हरवर हेरै दशकन्वर कटक चढ्यो, करन किरिट ले त्रिकू-  
टके शिखरसों ॥ ३१५ ॥

॥ अथ मृतीयवसंगतिवर्णन-दोहा ॥

आरभित काअहि तजे, और काज मनलाय ।

बरनि असङ्गति भेदको, तीजो बुचकविराय ॥ ३१६ ॥

यथा सवेया ॥

वेद विधान विमेषर हेत, बड़ी विधिसों द्विज देव निहोन्पो ।  
ओषक वानरको दल आय, हुसासन कुण्डको वारि सों  
बोन्पो ॥ क्रोध भयो लछिराम जहीं, जहीं सासुहें मगल को  
घट फोन्पो । राकन श्रीमप साधन छोड़ि, बली ले गवा इन्-  
मान पे दोन्पो ॥ ३१७ ॥

॥ अथ विषमालंकारवर्णन-दोहा ॥

अनमिल संग समान जहँ, प्रथम विषम यह रीति ।

बरनत कवि कोविद सबै, ग्रन्थनमें करि प्रीति ॥ ३१८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सेनप सुकण्ठ नल केसरी कुमुद सोहैं, हरवल हनूमान व-  
जर शरीरको । जामवन्त जालिम सरोहिया लखन बंक, तीखो  
वान शत्रुहन भरत गँभीरको ॥ लछिराम अन्धकार भा-  
रको न वारापार, तापर झमेला रघुवंशिनकी भीरको । यु-  
गल कुमार सुकुमार लव कुश कहां, परमकठोर घोर दल  
रघुवीरको ॥ ३१९ ॥

॥ पुनः ॥

राजवंश-कलश कलपतरु देवनके, कहां वह अल्प  
अपावन सकलहै । पारस पुरन्दर धुरन्धर धरम कहां, सवर  
कुमारी जीव वात करतल है ॥ परमकुलीन वै कुमार  
दशरथ राव, अजब अयोग लछिराम या सकल है । त्रिभुवन  
मण्डन महान रामचन्द्र कहां, सूखो सब जूठो सेवरीको  
बनफल है ॥ ३२० ॥

॥ द्वितीयविषमवर्णन-दोहा ॥

कारनको रँग औरई, कारज रँग विधि और ।

अलङ्कार दूजो विषम, परमानत सब ठौर ॥ ३२१ ॥

॥ यथा सबैया ॥

फोरत भाल मतङ्गनके, विथुरे मुकताहल त्यों रतनारे ।  
यों लछिराम निशाचर वंशके, छार करैं मद रोषमें ढारे ॥



रावणके रथपे झपटें, फनशेप लोके फुफकार हजारे ।  
श्यामपटा रघुनायके हाथसों वान चले बहवानलवारे ॥ ३२२ ॥

॥ अथ तृतीयविषमवर्णन-दोहा ॥

मेदि अर्थ आभीष्टको, विपरीतै फल होय ।

भेद तीसरे विषमको, वरनें बुध सब कोय ॥ ३२३ ॥

॥ यथा सवेया ॥

आरतसों पुरुपारथ में, परमारथ स्वारथ स्वाद मठी परै ।

त्यो लछिराम गँभीरता मत्र में, मौज महातम कानि कठी परै ॥

श्रीरघुनाथ प्रताप कथान में, ज्वालसी अन्न अन्न बठी लै ।

माधुरी वार्ते विभीषणकी सुने, रावणके उर ताप चढ़ी परै ३२४

और विषम कर्त्ताको क्रियाको फल होय और अनर्थ होय ।

॥ यथा सवेया ॥

घोर निशाचर बाँद बली, दुहुँ भेदनको भरिके अँकवाच्यो ।

पेज पताल प्रवेशके योँ, लछिराम तिहुपुर सोर धगाच्यो ॥

बीचहि घाय लँगूर धनी, गज आहके चाह सों वार उषाच्यो ।

लैषल्यो रामहि मारिषेको, महिराषने श्रीइन्मान पछाच्यो ३२५

॥ अथ सम अलङ्कार विविध वर्णन-दोहा ॥

यथायोग्य सङ्गम प्रथम, समया धरनत धीर ।

कारनको रँग काजमें, मिले दुतिय गम्भीर ॥ ३२६ ॥

बिनश्रम कारजसिद्धता, आरम्भनमें होय ।

या विधि भूषण त्रिविध सम, वरनें कवि सबकोय ॥ ३२७ ॥

॥ अथ प्रथम यथायोग्यको सङ्ग-यथा कवित्त ॥

जालिम असीले राजवश अवतस अश, परमप्रतापी त्योँ  
प्रताप झलाझलको । बहस विरुद्ध कुद्ध कातिल झपट बाज,

वैस तरुनापन तिरीछो त्यों युगलको ॥ लछिराम रावण विलो-  
कत विहँसि उतै, विकसत रामहेरि वार हलचलको । मन्दर  
महान मतवारो मेघनाद तैसो, बजर सँवारो है लखन बाँह  
बलको ॥ ३२८ ॥

॥ द्वितीय समकारण, गुणकारजमें,—यथा कवित्त ॥

शोक मैथिलीको हन्यो विहरि अशोक बाग, दूत रघुवीर  
भन्यो गुणन गँभीरको । दाह्यो लङ्क प्रलै ज्वालमालासी  
प्रतापधर, अछय कुधरै मान्यो बजर शरीरको ॥ परम  
विरागी मिल्यो रक्षक विभीषणसों, लछिराम धरणि धनी है  
धर्मधीरको ॥ जालिम जलधि कूद्यो हनूमान बलवान, शिरमौर  
शाखामृग सुवन समीरको ॥ ३२९ ॥

॥ तृतीय समकारजकी सिद्धि बिनाश्रम आरंभहीमें  
यथा सवैया ॥

जा महिमा को सुरेश गणेश फनेश विचारत सो धन आयो ।  
जाहि सराहत है गिरिजावर ब्रह्म सनातन वेदन गायो ॥  
सङ्गम ते बन जीवनके लछिराम तपोबल भौन भरायो ।  
ता रघुनाथके हाथन वैस बिनाश्रम सेवरीसो फलपायो ॥ ३३० ॥

॥ अथ विचित्रालङ्कार वर्णन—दोहा ॥

करै जतन विपरीति कछु, फल विचित्रकी चाह ।

तेहि विचित्रभूषण कहत, बुध कविन्द नरनाह ॥ ३३१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

गरजै निसान वान ढकिले मतंग धारू, हुङ्करत वार संग  
खलभल कीबेको । ठनके कमान रोदे झनकै कृपान रचै, रु-  
धिर विहद नह योगिनीन पीबेको ॥ कौतुक अनोखो रणरङ्ग

राम रावन में, कहत वने न विपरीति घर छीविको । क्रुद्ध वान  
कातिल निशाचर समर-चीच, मरत उमाइ में अमरलोक ली  
वेको ॥ ३३२ ॥

॥ अथ अधिक अलंकार वर्णन-बोहा ॥

अधिक द्वीय आधारते, जब आधेय स्वरूप ।

प्रथम अधिक भूषण तर्हा, पर मानत बुध भूप ॥ ३३३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

उन्नत पदार नदी नदन अपारन को, घोल करि विरद  
बहाली बगरत है । लछिराम देव नरदेव सन्त घन वन, पावन  
परम सीरो आनंद भरत है । विरद बितानमें महीप रामचन्द्र  
दीप, दीप कलाधर लो कुतूहल करत है । फैल्यो छीर-सागर  
तरङ्गसौ तिहारो यश, छोरमें दिगतनके छलक्यो परत है ॥ ३३४ ॥

॥ द्वितीयअधिकवर्णन-बोहा ॥

जबहिं द्वीय आधेयते, अधिक आधार सुरूप ।

अलङ्कार दूजो अधिक, पर मानत कविभूप ॥ ३३५ ॥

॥ यथा सवेया ॥

चौदहों लोकनकी रचना, भुवभार समेत वसी उर बीचि ।  
जामें नदी नदपुञ्ज पदार, महावन मण्डल ओलि अर्पीचि ॥  
जा महिमाकी गंभीरतामें, सुरशम्भुहुके मन आवत सीचि ।  
राम सनातन ब्रह्मते राजत, कौशिला अञ्चल छोरके नीचि ३३६

॥ अथ अल्पालङ्कारवर्णन-बोहा ॥

अल्प अल्प आधेयते, लक्षिय छाम आधार ।

अधिक भेद वरनन करें, जे प्रवीन शृंगार ॥ ३३७ ॥

॥ यथा सर्वैया ॥

श्रीरघुनाथप्रतापकी आँचते, भागतीं देशनके बहिरेहैं ।  
सुन्दरी वै लछिराम अदेवकी, मानतीं आनँदको जहिरे हैं ॥  
हायल मन्दर कन्दरामें, परीं छाम यौं सङ्क भरी गहिरेहैं ।  
आरसीके भुजबन्द रचे, कर कङ्कन मूँदरीके पहिरे हैं ॥ ३३८ ॥

॥ अथ अन्योन्यालंकारवर्णन-दोहा ॥

होय पररूपर दुहूँते, आनँद अङ्ग प्रकास ।

अन्योन्यालङ्कार तहँ, प्रथम कहत सविलास ॥ ३३९ ॥

॥ यथा सर्वैया ॥

वै उनके धनुवान सँवारिकै राखत सामुहें मौज गँभीरके ।  
वै लछिराम उमाहनमें कल कौरें निहारत छोरें मनीरके ॥  
वै उनके मुखै हेरि भरें गरे माल घने सुकताहल हीरके ।  
भागभरे सबलोग सराहत आनँद लखन श्रीरघुवीरके ३४० ॥

॥ अन्य प्रकार-यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठसों हरष हनूमान हनूमानसों सुकण्ठमें उमाह  
उमसति है । जामवन्त वीरसों विभीषन बहाली विभीषनते  
सुजायवन्त सीमा हुलसति है ॥ गज रथ बाजी सों विलास  
रघुवंशी रघुवंशिनसों बाजी गजप्रभा विलसति है । चतुर-  
ङ्गिनी सों राम लखन विराजें राम लखनसों सेना चतुरङ्गिनी  
लसति है ॥ ३४१ ॥

॥ अथ विशेषालंकारवर्णन-दोहा ॥

अनाधार आधेय जहँ, प्रथम विशेष प्रमान ।

चतुर चारु बरनन करै, ग्रंथनमें सुखदान ॥ ३४२ ॥

॥ यथा सवेया ॥

वाँहवली हनुमान निशाचरी सेनमें कीनो महाउतपातहैं ।  
 रावनके रथमें लछीराम हन्यो गदा सारथी चक्र निपात हैं ॥  
 सेनपकेते लपेटि लँगूरमें दीने उढाय फटे फहरातहैं ।  
 सागर व्योमके बीच लटे उलटे दल ऊपरतेमढरात हैं ॥३४३॥

॥ द्वितीय वर्णन-दोहा ॥

लघुभारम्भहि में जहां, अधिक सिद्धि हे जाय ।

दूजो कहत विक्षेप तहैं, अलङ्कार सरसाय ॥ ३४४ ॥

॥ यथा सवेया ॥

जाहि विलोकि डरे यमराजक दूत विचारे विचार अधीर में ।  
 नाम न जानतहैं रघुवीरको यो लछिराम गुमान गँभीर में ॥  
 साधन थोरे कहौलौं कहौं मतवारे न डारत हैं पग नीरमें ।  
 नीर में आवतही सरयूके फलें फल चाच्यो सुरापिन भीर में ॥

॥ तृतीयवर्णन-दोहा ॥

बहु थलमें वरनन करे, सके वस्तु परभाव ।

तहैं तीसरो विक्षेप गनि, वरनत पंडित राव ॥ ३४६ ॥

॥ यथा सवेया ॥

गोकुल गोकुलनाथ धने, ब्रजमें ब्रजराज सनेह सँवारे ।  
 द्वारिका मण्डल द्वारिकानाथ, जगे जगन्नाथ समुद्र किनारे ।  
 व्योमथली महि सातों पताल, लसे लछिराम प्रताप पसारे ॥  
 चौदहों लोक सनाथ करें, रघुनाथ अनाथके नाथ हमारे ३४७

॥ अथ व्याघात अलंकारवर्णन-दोहा ॥

जहां औरते औरहैं, फारज सङ्ग विरुद्ध ।

प्रथम कहत व्याघात तहैं, जे प्रवीन मति शुद्ध ॥३४८॥

॥ यथा कवित्त ॥

शुभग सहोदर सुजान गुनमान पूरो, रहत हजूरै रह्यो प्रेसके  
लहरमें । लछिराम रामसों मिलत एक बार टूट्यो नातो कुल  
धरम अखण्ड रोष बरमें ॥ दाहिने सुकण्ठ सोहै जामवन्त  
जालिमके, लखनै लखाथ कमनैती हरबरमें । मेघनाद रावनके  
रथ पथ आगे वान, मारत विभीषन बिराटलों समरमें ॥ ३४९ ॥

॥ प्रथम व्याघात-यथा सवैया ॥

श्रीरघुवंशिनकी कलंगी, कलपद्रुम दीन हितू वरजोरैं ।  
कौशल भूपर भाजन भाग, अशीशत हैं लछिराम करोरैं ।  
जासों बली रघुवीर सदा, बटपारन शोकसमुद्रमें बोरैं ।  
ताह्य कोर कटाक्षनसों, सब सन्तनके भवबन्धन छोरैं ॥ ३५० ॥

॥ पुनः ॥

वेद पुरानमें चारु चरित्र, विचारत हारत हैं विधि हीरे ।  
शङ्कर शारदा गौरि गणेश, जपैं लछिराम यों नाम गँभीरे ॥  
जाकी झलाझलमें रद रङ्ग, जहैं जग शकस वंश जँजीरे ।  
श्रीरघुनाथके वान बली ते, करैं सब सन्तनके मन सीरे ॥ ३५१ ॥

॥ द्वितीय व्याघातवर्णन-दोहा ॥

जहँ कारजकी सिद्धिता, लखि विरुद्धके साथ ।  
व्याघातहि गनि दूसरो, अलङ्कार शुभ गाथ ॥ ३५२ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

जामवन्त जालिम जमाति सङ्ग जङ्ग बाज, सुघर सुकण्ठ  
विभीषन गुनगथमें । हनुमान् अङ्गद सुकेसरी कुमुद नील  
नागर सुखेन गाथे विरद अकथ मैं ॥ शत्रुहन लखन समर  
भट भारे कटै, रोषे रघुवंशी रही ताप न भरथ मैं । सेन

चतुरङ्गिनी सँहारेँ लव कुश त्योँ त्योँ फूलेना समात रामचन्द्र  
फूल रथमें ॥ ३५३ ॥

॥ अथ गुम्फ अलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

परम्परा जहँ बरनिये, कारनको शुभ रूप ।

अलङ्कार परमान किय, गुम्फ सुकवि रसरूप ॥ ३५४ ॥

॥ यथा-सवैया ॥

भाषमें सन्तनको सतसङ्ग है, सन्त सिखावत ज्ञान गँभीरको ।

ज्ञानसों वेद विवेक विचार, विवेक विचारसों साधन धीरको ॥

साधनसों लछिराम उदार, उदारतासों दया धर्म शरीरको ।

सागर पारसरूप समोज, मिले तब सासुहँ श्रीरघुवीरको ३५५

॥ अथ एकावलीअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

अहित मुक्तके सङ्ग जहँ, सुपद जँजीरा जोर ।

अलङ्कार एकावली, योँ भनि कविशिरमोर ॥ ३५६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

ठकिले मतङ्ग झनकारत जँजीरें जोर, घोंसाकी धमक

तिन सोहँ घहरातहँ । घोंसाकी धमक आगे जामवन्त जाळि-

मको, जमकी जमातिलोँ जमक लहरातहँ ॥ जामवन्त आगे

त्योँ सुकण्ठ योँ सुकण्ठ आगे लखन सदल लहरातहँ । लखन

सदल आगे धूमधाम राम रामचन्द्र आगे नाहरीनिसान

फहरात है ॥ ३५७ ॥

॥ पुनः ॥

रस-वीर लीला रामचन्द्रपे डुचन्द केसी, वशागुनी कौचन

सवन्द झलाझलपे । लछिराम ज्येष्ठ परमालीतें पचासगुनी

बगर बहाली पैजपाली बांह बलपै ॥ बलकी परतिबांह बल  
उतसाहनतै, सौगुनी विलोचन बदन मारू दलपै ॥ लोचन  
बदन तै सरासर सहस गुनी, जङ्ग जोर भ्रूधनु मरोर भाळ  
थलपै ॥ ३५८ ॥

॥ अथ मुक्तप्रकेशी अलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

एकावलिके बीच जब, प्रश्नोत्तर शुभरङ्ग ।

मुक्तप्रकेशी तहँ कहैं, अलङ्कार नवरङ्ग ॥ ३५९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शोभा सरवरके विशाल हैं मृणाल कैसे, जैसे सुण्ड कलभ  
सँवारे विधि धीरके । कैसे सुण्ड कलभ सँवारे विधि धीर  
बर, जैसे ये भुजङ्ग भाये मण्डन शरीरके ॥ लछिराम कैसे हैं  
भुजङ्ग सुखमासों भरे, जैसे मरकत खम्भ खलक सुधीरके ।  
मरकत खम्भ कैसे परम प्रचण्ड जैसे, भुजदण्ड जुगल  
जसीले रघुवीरके ॥ ३६० ॥

॥ अथ मालादीपक अलंकार वर्णन-दोहा ॥

दीपक अरु एकावली, को सङ्गम जहँ होय ।

मालादीपक भूषनै, परमानत सब कोय ॥ ३६१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

जोगानल मण्डित गिरीशलों समाधि रचि, रातो दिन  
परचै अशोक उपवनमें । लछिराम तापर अतङ्क लङ्क रावन  
को, एकसी भयङ्कर कलङ्क त्रिभुवनमें ॥ सङ्गमी सनेह विर-  
हाकुल स्वरूप राम, सने स्वेद वही ब्रह्मराशि पुलकनमें ।  
बरसैं न कैसे अँसुवानके प्रवाह बस्यो, घनश्याम रामचन्द्र  
मैथिली चम्वनमें ॥ ३६२ ॥



॥ सवेया ॥

पावन देव पुरातन ब्रह्म हैं ध्यान धरे मनहोत अशोक है ।  
शारद नारद शेष गणेश गन्यो क्षिरमौर महेशको थोक है ॥  
वेद पुराणनमें लछिराम यही चरचा कविकल्पना कोक है ।  
श्रीहनुमान हिये रघुनाथ बसैं रघुनाथहीमें सब लोकहैं ३६३ ॥

॥ अथ सारअलङ्कारत्रिविधवर्णन-बोहा ॥

गुन वरधनके दोषते, के दुहूँन सनमान ।

सार अलकृत करतहैं, कविबर तीनि प्रमान ॥ ३६४ ॥

॥ यथा कविस ॥

पल्लव नवलहूते सुमन सिरीपशुभ, सुमनसिरीपहूते दानी  
मनहरको । लछिराम दानी मनहरते हरप राज, फेन फरकाँछो  
छीर सागर लहरको ॥ छीरसर फेनते मलेज परिमल, परिमल  
ते सुभाव सुधो मखमलवरको । वरमखमलहू ते कोमल  
कमल मञ्जु, कोमल कमलते सुभाव रघुवरको ॥ ३६५ ॥

॥ द्वितीय दोषकारी यथा-कविस ॥

बारहो विभाकरते बाड़वा अनल ज्वाली, बाड़वा अनलते  
फनाली शेषवरमें । शेषफन ज्वालासो लखनकर धान, धान  
लखनते कालकूट कातिल गहरमें ॥ लछिराम कालकूटहूते  
ब्रह्मफांस, ब्रह्मफांसते प्रलै प्रकाश वासव-वजरमें । वासव  
जरते कहर कालदण्ड, कालदण्डते कहर राम रावन सम-  
रमें ॥ ३६६ ॥

॥ दोषगुणकारी-यथा सवेया ॥

काठते उन्नत घोर पदार पदार तैं ही खलकी अवलीको ।  
ही खलकी अवलीते विसासी विराजत केवर काम छलीको ॥

कैवरते लछिराम लखे महामृशाल है बलराम वलीको ।  
है सबहीते कठोर सुन्यो व्रत श्रीरघुवीर प्रतापवलीको ३६७ ॥

॥ अथ यथासंख्यअलंकारवर्णन-दोहा ॥

वस्तु जहां बरनन करें, क्रम सरीति शुभसाज ।

यथासंख्य भूषण तहाँ, बरनत बुध कविराज ॥ ३६८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

पन्नगराज फनावलीलें परिपूरो पतारु पुरी क्रमुदै रहै ।

भूपर तुङ्ग तरङ्गलें शारदा त्यों रतनावलीको समुदै रहै ॥

मङ्गल व्योम थली लछिराम प्रभाकर बारहोलें प्रमुदै रहै ।

मैथिली श्रीरघुनन्दनको चिरजीवी प्रताप त्रिलोक उदै रहै ३६९

॥ कवित्त ॥

मङ्गलीक चरन करन अधरन चठी, लालिमा गहर गुन  
कोमल बटोरके । लछिराम जंघ भुजदण्डन प्रचण्ड डर,  
बिरचे कठोर सान अजब हलोरके । भुजमूल भाल चन्द्रवदन  
विलास हास, परम प्रकाश पुञ्ज रस वीर बोरके ॥ भौंह भंग  
लोचन तिरीछे जुलफन वारे, वार घुघुरारे कारे लखन  
किशोरके ॥ ३७० ॥

॥ अथ पर्यायअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

इक आशय क्रमसों जहां, धरि अनेक इक शीति ।

अलङ्कार पर्याय तहँ, प्रथम कहत करि प्रीति ॥ ३७१ ॥

॥ यथा सवैया ॥

अङ्गद रीछपती नल नील सुखेन सुकेशरी आनँद पागे ।

लखन रामके त्यों लछिराम उमङ्ग भरे मन यों अनुरागे ॥

आनिवे मैथिलीकी कुशलात मुफादिवे भारी जलाइल आने ।  
वानरी सेन सुकण्ठ बली इनुमानहीको मुख हेरन लागे ॥ ३७२ ॥

॥ द्वितीयवर्षण-दोहा ॥

जब अनेकको आसरे, राखस क्रमसों एक ।

अलङ्कार पर्योय तहै, दूजो गनि सविवेक ॥ ३७३ ॥

॥ यथा सवेया ॥

वानर जामे विराट महाबली, रीछ भयङ्कर सूरि कुलाचै ।

सेनप श्रीइनुमन्त सुकण्ठ, मखेन सुकेशरीमें भरी आँचै ॥

लक्ष्मनकी धनुवान प्रभा, लछिराम विजे रणखेलो राचै ।

रामचमू चतुराङ्गिनीते भरी, आझ विभीषनके मनसाचै ३७४ ॥

॥ अथ परवृत्तअलंकारवर्णन-दोहा ॥

वीधे तनकहिके जहां, मिले पित्त बहुसाज ।

परवृत्तभूषण तहै कहै, जे प्रवीन कविराज ॥ ३७५ ॥

॥ यथा कविस ॥

बौहवली वीरताके गरजेँ निसान घोर, बेरी बन दारुन प्रता

पानल बलकी । लछिराम राजनीति कीरति तरङ्ग गङ्ग ।

पूजती दिगङ्गना दिगन्तनमें छलकी ॥ चिरजीवी चाप्यो मुम

चौदहों भुवन पर, ऐसी आनि बानि रामचन्द्र करतलकी ।

दण्डक विपिनवारे बगर किरात कोल, कन्द मूल दे दे राशि

लहै चाप्यो फलकी ॥ ३७६ ॥

॥ सवेया ॥

जा महिमाको सवारत शम्भु, विचाप्यो जक रह्यो रावन रूठो ।

चारिहु वेदनमें घरचा, यही पूरमब्रह्म प्रताप जमूठो ॥

औठर दानी गरीबनेवाज, कृपानिधि यों लछिराम न झूठो ।  
चाच्यो पदारथ को लह्यो सेवरी, तारघुनाथहि दै फल जूठो ॥

॥ अथ परसंख्याअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

थपै वस्तु थल और में, करि निषेध थल और ।

परसंख्याभूषण तहां, बरनत सुकवि सगौर ॥ ३७८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बन्दनबलितबेस बगरबिहदमौलि, कुंडलित शुण्डरदमद-  
के प्रचारमें । बरन गणेश मणिमंडिस रतन झूल, झूमिके चलत  
हैं मलिन्द झनकारमें ॥ लछिराम रावरे मतङ्गनपै रामचन्द्र,  
बैरही प्रभा जो गजरथके अगारमें । विधि विकरारमें न दिग्गज-  
कुमार में न, कज्जलपहारमें न घन बन भार में ॥ ३७९ ॥

॥ पुनः ॥

असुर मतङ्गनपै सोर घनघोर सङ्ग लागत गरद मेले गरबन  
भारी में । लछिराम लालितलपटलहरीली लेल, तड़पीली ते-  
जमान तड़प तयारीमें ॥ रावरे करन रामचन्द्र जमधर जौन  
ज्वाली जङ्ग जौहर अतङ्क अवतारीमें । विज्जु विकरारी फण  
पन्नगी हजारी में न बजरकी बारी में नवबर कुमारीमें ॥ ३८० ॥

॥ पुनः ॥

झगर मतङ्गमद करत मलिन्द पान, झूमत मतङ्ग मत-  
वोरलों रगरमें । तीतर सुरग बनचरमें विरोध बोध हीन बान  
कण्टक पराग फूल गरमें ॥ लछिराम तरल तुरङ्ग  
दीप तेज तातें, भरम पराजै बैरीवृन्दके बगरमें । चित्र की  
समाजें लाजरहित विराजें राजें, राजनीति ऐसी रामचन्द्रके  
नगरमें ॥ ३८१ ॥

॥ पुन ॥

मदमकरन्द सम्पुटित साँझ कञ्ज पाके, विटप सत्रोट  
फल भूपर गिरत हैं । बचन विलास बशीकरण अमी है चन्द्र  
मुखनि चकोर व्यभिचारीलों घिरत हैं ॥ लछिराम राव राम-  
चंद्र राजनीति ऐसी, ज्वाला हठ जोगिनके अङ्ग अभिरत हैं ।  
नगर डगर बन बागन बगर एक, धारही मलदि मतवारेलों  
फिरत हैं ॥ ३८२ ॥

॥ अथ विकल्पअलंकार वर्णन-बोहा ॥

के बह के बह करहिगे, जहैं याविधि सुविचार ।

तहैं विकल्प भूपण कहत, जे प्रवीणशृङ्गार ॥ ३८३ ॥

॥ यथा सवेया ॥

नाम हमारो बभूपति रावन, या जग में यज्ञ पावन छेहों ।  
टारिहों टेक न काल भिरे, भट सासुहें दूसरे कौन गने हों ॥  
जायचहै रहे राजसमाज, नमें लछिराम कछू पछितेहों ।  
के रघुनायसे युद्ध करौं, के गिरीशको फेरि दशौं छिर वेहों ॥

॥ अथ द्विविधिसमुच्चय अलंकार वर्णन-बोहा ॥

काहू यल बहु भाव जहैं, उपजत एकै सङ्ग ।

प्रथम समुच्चय तहैं कहत, अलङ्कार नवरङ्ग ॥ ३८५ ॥

॥ यथा कवित ॥

कोरैं धान तरकस फोरैं त्यो कमान रोदे ठनकत जोर  
जङ्ग बाजीकी लहरमें । फरके प्रचण्ड भुजदण्ड त्यो बहाली  
नेन खरके युगलकर मौज भराभरमें ॥ लछिराम रामचन्द्र  
रावण चमूको हेरि हेरहे कदम्बहार दौरा हरवरमें । भौहैं

भङ्ग लाल भाल बदन विशाल ओज, अङ्ग अङ्ग फूले न  
समात बखतरमें ॥ ३८६ ॥

॥ पुनः ॥

आगमन राम अवतारके बधावरे में, त्रिभुवन छावै अंश  
जगर मगरमें । लछिराम शारद महेश मुनि शिरताजें, देव  
देवराजें मौजें देविन रगरमें । मङ्गल अवाजें साजें सुंदरी  
समाजें राजें, रङ्ग चारु कौशिला के चौकठ कगरमें । दिग्गज  
दराजें दीह दुन्दुभी दराजें बाजें, बगर बगर बाजे कौशिला  
नगरमें ॥ ३८९ ॥

॥ द्वितीय वर्णन ॥

जहँ अनेक इक सङ्ग है, करै सुऔरै साज ।

भेदस मुञ्चय दूसरो, बरनत कविशिरताज ॥ ३९० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बगर बगर बाजें नगर निसान भारी, बगर विमानव्योम रवि  
रथभोरेंमें । लछिराम जागे भाग नाग नर देवन के, मङ्गल  
महेश गावें हरष हलोरेंमें । बरसैं महीप दशरथराज पथ पौरी,  
गज रथ मोती कर झमक झकोरेंमें । अञ्चल उदयगिरि अम-  
न्द रामचंद्र चारु, कौशल कलपतरु कौशिलाके कोरेंमें ॥ ३९१ ॥

॥ पुनः ॥

दशरथराव रामचन्द्रकी छठीमें चारु, विकसे बसन्तकुसु-  
माकर बहारसे । लछिराम सातौं दीप उमगि अशीस देत, हीरा  
हेम हिमालै सुमेरु अवतारसे ॥ मौजमें मतङ्ग गजरथके कलोलैं  
खुले, मालाकार मण्डित रतन मोतीहारसे । घन बन भारसे  
पहारसे डगर डोलैं, बगर बगर बोलैं दिग्गज कुमारसे ॥ ३९२ ॥

॥ पुनः ॥

अधकटे लाखन लरकि मतवारेकटे, कोटिन फरकि रहे लोटत  
गरदमें । घोर घमासान धान वरसे बुहूँनदल, रावण महीप  
रामचन्द्र रोपमदमें ॥ लछिराम झङ्करजमाति जोगिनीन ठेठे,  
लादे सुण्डमाल रही ताब न वरदमें । पटके पछारे हनुमानके  
लघारे हारे, झपटै हजारे भरे भूपर दरदमें ॥ ३९३ ॥

॥ सवेया ॥

वारिदलों दक्षरत्य महीप लुटाय रहे रतनावली सजै ।  
रङ्गन राव रचे लछिराम चढ़े गजरत्य वने शिरताजै ॥  
धेवधूटी विमाननते वरसे सुमनावली चासव गाँजे ।  
श्रीरघुनन्दनके अवतारमें औधवहार बघावरे वाँजे ॥ ३९४ ॥

॥ पुनः ॥

औध उदै उमठी त्यों वठी, रघुवशिनकी कलंगी विस धाँसे ।  
गाँवै गुनी धिरदावलीको, उहँ रङ्ग तरङ्ग सबे सुरदीसे ॥  
बुम्बुभी वीह मृदङ्ग धाँसे, लछिराम सराहिरहे सर्वाँसे ।  
श्रीरघुनाथ लियो अवतार, तिहँपुर हाय पसारि अझीसे ३९५

॥ कविस ॥

श्रीवसिष्ठ अङ्गद सुकण्ठ नल हनुमान, द्विविद मयन्द  
जामवन्त जोगलताके । लखन भरत शत्रुसूदन सुमन्त नील,  
लक्ष्मेश्वर केसरी कुमुव छेमछताके ॥ लछिराम रामचन्द्र मैथिली  
सभासनते, सदलसुमेर त्यों सुपेनशुभसत्ताके । अवतस राजवंश  
रसनसिंहासनपै, सप्रदो सभासद हैं कोशल चकत्ताके ॥ ३९६ ॥

॥ पुनः ॥

राजें रामगङ्ग निरमली कुण्ड गोप्रतार श्रीसहस्राधार स्व-  
गंद्वार भार गारमें ॥ सप्तहरि क्षीरेश्वर नागेश्वर देव काली  
लछिराम कोटेश्वर जगर मगरमें ॥ जन्मभूमि कनकभवन यज्ञ  
देवी बुध सज्जन प्रमोदवन आनंद बगरमें ॥ सीताराम लखन  
भरत शत्रुहन मणिरतन सिंगार हार कौशल नगरमें ॥ ३९७ ॥

॥ अथ कारकदीपकअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

एकहिमें जहँ बहुक्रिया, उपजै क्रमके संग ।

अलंकार वर्णन करै, कारक दीपक ढंग ॥ ३९८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

फूलि रहै भुजदण्ड प्रचण्ड सुकौचके बन्द सब करके हैं ।

त्यो लछिराम विशाल प्रभासुख ज्वालिआ रंग प्रलयकरके हैं ।

भारी गदा उछलै करमें वा लँगूरके लंगर यो खरके हैं ।

रावणकी चमू हेरतही हनुमानके रोम सबै फरके हैं ॥ ३९९ ॥

॥ अथ समाधिअलंकार वर्णन-दोहा ॥

और हेत मिलिकै जहां, कारज सुगम सहेत ।

तहँ समाधिभूषण कहत, जे कविपरमसचेत ॥ ४०० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सुघर सुकण्ठ हनुमान अङ्गदादि वीर, ज्वाली जामवन्त  
दल कहर कलापसों । लछिराम लखन बनेत वरदानी वीर,  
वानजा सहस्रफन सूरज सतापसों ॥ नल नील सागर उजा-  
गर त्यो सेतु कर, मण्डित भुवन रामचंद्रके प्रतापसों । लंक  
पंक वारन विदारन अदेव भयो औरज सुगम श्रीविभीषन  
मिलापसों ॥ ४०१ ॥



॥ अथ प्रत्यनीकअलंकारवर्णन-बोहा ॥

प्रबलशत्रुसों द्वारिके, ताहित अहित उपाय ।

प्रत्यनीक भूषण तहां, वर्णत पण्डितराय ॥ ४०२ ॥

॥ यथा कबिस्त ॥

जापद पराग परसत परमानंदमें, नाग नरदेव भाम सम  
गरवसों । लछिराम जाकी शक्ति मैथिली प्रतापराशि, अनुष  
लखन भयो वीरता गरवसों ॥ ताहुको न डरत अकस राशि  
पूरवकी, मथनके बेले रोष सागर सरवसों । विष्णुरूप राव रा  
मचद्रदि समुझि राहु, अवला सतावत प्रभाकरे परवसों ॥ ४०३ ॥

॥ सबैया ॥

वीसठ हायनमें छे कृपाण कुतूहली वेप विराट बनायो ।  
मेघ भयङ्करसों गरज्यो तृण ओट दे वाणी गंभीर सुनायो ॥  
यों सुनि रोष भयो लछिराम कही तू न मानत रावण गायो ।  
रामकी हेरि प्रचण्ड चमू छली मैथिलीको डर पावन आयो ॥

॥ अथ काव्यार्यापत्तिअलंकारवर्णन-बोहा ॥

बह कीनो तो यह कहा, पेसो जहां विचार ।

याविधि वर्णें सुकविजन, काव्यार्योअलंकार ॥ ४०५ ॥

॥ यथा कबिस्त ॥

नील नल अगद सुकण्ठ केसरी त्यों कुब्ज, कुसुद सुषेण  
हनूमान रणरेलेमें । जामवस्त जालिम जमाति जमराजी संग,  
वानर विराट भाळु वीर वगमेलेमें ॥ लछिराम लखन प्रचण्ड  
घनुधर तेसो, रावण कदाहै रामसमर कुलेलेमें । बाँध्यो जिन  
जलधि भयकर घरीमें तिन्हें बाँधियो त्रिकूट कहा समर जमे-  
लेमें ॥ ४०६ ॥

॥ अथ काव्यलिंगअलंकारवर्णन-दोहा ॥

जोग समर्थन अर्थ जो, ता सामर्थ करैन ।

काव्यलिंग भूषण तहाँ, वर्णत सुकवि सचैन ॥ ४०७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शारद महेश गणपति शारदेश गाँव, दानी चारु चौदहाँ  
रतन राशि खत्ताके । सागर लों जाके बाँहबलको न वारापार,  
अभय रहत लछिराम छेमछत्ताके ॥ चौदहाँ भुवन महाराज  
रामचन्द्र बीर, रन बन बबर असुर गजमत्ताके । फारिहँ करेजे  
केलि-पत्तासे कुदिन तेरे, दामन लगेहँ हम कौशलच-  
कत्ताके ॥ ४०८ ॥

॥ पुनः ॥

सागर सुधासी लसै अवधनगरतट, बगरैं बधूटी त्यों विमा-  
नके रेलैमें । लछिराम जामें करैं मञ्जन सुवारेहीसों, ब्रह्मरूप  
राम रघुवंशिन झमेलेमें ॥ रामकी दोहाई जम तोको न डरत  
वही, परसत पौन रज रेत लहरेलेमें । औरैलों बिलात अध  
मन्दर हलोरे भंग, रामगंग तरल तरंगनके मेलेमें ॥ ४०९ ॥

॥ बरवै ॥

पाप न तोसों डरपै या लछिराम ।

अधम उधारन सबहित सियबर राम ॥ ४१० ॥

॥ अथ अर्थान्तरन्यासअलंकारवर्णन-दोहा ॥

कहि विशेष सामान्य करि, फेरि समरथै ताहि ।

यों अर्थान्तरन्यासको, सुकविन रूप सराहि ॥ ४११ ॥

॥ यथा सर्वैया ॥

जामें बस्यो वडवानल जालिम, ज्वालिया त्यों जलजन्तु भन्योहै

दारुन ऊपरमें सुरसा जो, न मानि सँहारतमें हरकोहै ॥  
 तुग तरंगनकी महिमा, लछिराम लखे न कियो हरको है ।  
 सागर कूथो बढो हनुमान, कहा रघुनाथके किंकर कोहै ४१२  
 ॥ बरवे ॥

अंगद पग नहिं द्ययो रावण-बझ ।

कौन बात जन रघुवर सुर अवतश ॥ ४१३ ॥

॥ द्वितीय वर्णन दोहा ॥

घरनि प्रथम सामान्यता, फिरि विशेष सामर्थ ।

गनि अर्थान्तरन्यासको, भेद दूसरो अर्थ ॥ ४१४ ॥

॥ यथा सवेया ॥

वानरबहाकुमार मुकेसरी, साथी सुकण्ठको भौंति भलीमें ।

भक्त भयो अनुराग तरंग, लसे अनुरागिनकी अवलीमें ॥

तापर एक बढो गुण या, लछिराम सँवारयो विरञ्चि बलीमें ।

श्रीरघुनाथ हरीलीको अक, लिख्यो हनुमानकी भाळपलीमें ॥

॥ बरवे ॥

राजकुँवर बलमण्डन लखनकुमार ।

तापर अपर अपूरव सियवरप्पार ॥ ४१६ ॥

॥ अथ विकस्वरजलंकारवर्णन दोहा ॥

घरनि विशेष सु प्रथमहीं, फिरि सामान्यप्रमान ।

फिरि विशेष ताको किये, विकस्वर भूषण जान ॥ ४१७ ॥

॥ यथाकविस ॥

मुनि मख राखे अभिलापे रूप गौतमीके क्षम्मुचनु तोरे  
 वेस मिथिलेशमनके । लछिराम तापे बढी बात या कहा है  
 जाके सेवक सुरेश अलकेश मन फनके ॥ आनंदमें जाकी

दानधारा न रुकत परमाने दीनबन्धु काटैं साँकर सुमनके ।  
पारस पुरन्दर धुरन्धर धरम राम, रघुवंश भूषण कलस त्रि  
भुवनके ॥ ४१८ ॥

॥ बरवै ॥

लखन बाण अतितीक्ष्ण बड़ी न बात ।

फणसहस्र अवतारी जगविख्यात ॥ ४१९ ॥

॥ अथ प्रौढोक्ति अलंकारवर्णन-दोहा ॥

कथन करै उत्कर्षता, हेत हेतको लाय ।

अलंकार प्रौढोक्ति तहँ, बरणै कवि सरसाय ॥ ४२० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

मण्डित अमृत छत्रमाला पन्नगेश देश बर फन साला  
मलयजहै अरति है । अम्बर अमर अमरेश उपहार लै लै  
सूरज सुधाकरहि पावन करति है ॥ लछिराम रामचंद्र  
कीरति कलपलता जब जब सातौं सिन्धु पार उतरति है ॥  
जैतवार जङ्ग रतनाकर तरङ्गमौलि तब तब हीरक-बितान  
बितरति है ॥ ४२१ ॥

॥ पुनः ॥

बिलपति कुमुद अदेखी सने सोकसर, सातौ दीप सुहृद  
सरोज पखरे रहैं । लछिराम लालित मरीचिन बगरसो हैं, भास-  
मान बारहौ कलाके भभरे रहैं ॥ तेरहौ प्रभाकर प्रताप राम-  
रावरेसो, बटपार वैरी वन बन्दर बरे रहैं । दिग्गज सदल महा-  
मंगल मसाल हेरि, अगरे दरद दिगवारमें भरे रहैं ॥ ४२२ ॥

॥ पुनः ॥

चारु चन्द्र चन्द्रिका शरदसौं प्रकाश करै, राजत शिला-

सों मिल्यो गङ्गकी लहरतैं। मङ्गलीक मलय मदेशकी प्रभासों  
पुञ्ज पावन परम राजहसन सदरतैं ॥ जेतवार खौर क्षेप  
सगमीसों लछिराम, शुभग सुरीन मुकतालइके लरतैं । सीरो  
सेत जस रावरे को राव रामचन्द्र, नीर छीर-सर हिमालयके  
सिखरतैं ॥ ४२३ ॥

॥ अथ सम्भावनामलंकारवर्णन-दोहा ॥

जो यों हो तो यों कहे, सम्भावना मुरूप ।

कविकुल वानतई सदा, याप्रकार मुअनूप ॥ ४२४ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

जाके बाँइवलको अनेक अमरावतीलों, जीत्यो देवराज  
देववशनके थोकोमें । लछिराम जाकी हाँक प्रलयवनघोर  
जोर, खलभल पारत दिगन्तनके ओकोमें ॥ धूमधाम रावण  
महीप रामचंद्र सोहैं, तिरछोहैं वृही महावीर अवलोकोमें । बाण  
सों बिदारे जब लाली मेघनाद भाल, ज्वाली जङ्ग लखन स  
राहों तव तोकोमें ॥ ४२५ ॥

॥ पुन ॥

जाके बाण परम प्रचण्डकी कथान गावैं, ठौर ठौर असुर  
बधूटी करिमतसों । लछिराम तेसे भुजदण्डके अखण्ड ओज,  
बेरिनके भाल करैं कालदण्ड छतसों ॥ धूमधाम लङ्कर  
लैगूरमें कपीशहूकी, वीसाविसे वारतैं अचूक परवतसों । रावण  
सुमर तव रामसम होतो जब लखनसों भाई ओ इरोल  
हनुमतसों ॥ ४२६ ॥

॥ बरवे ॥

रामच द्रदल-महिमा तव फहिजात ।

जो कहूँ शारद कोटिन मुख जलजात ॥ ४२७ ॥

॥ अथ मिथ्याध्यवासितअलंकारवर्णन-दोहा ॥

मिथ्याहीमें जहँ करे, मिथ्यासिद्धि प्रधान ।

मिथ्याध्यवासित भूषणहिं, तहँ वर्णत मतिमान ॥ ४२८ ॥

॥ यथा सर्वथा ॥

काटिहों बीसो भुजा रद आपने, मुण्ड मिँले दशों भालको फोरों  
बाटिहों ज्वान जटायु बुलायकै भागिहों बेगि नयों मुख मोरों।  
जङ्ग जुरों रिपु दौन भरतयसों वा क्षण हीं लछिराम निहोरों ।  
रावण तौ मैं त्रिकूटधनी जेपै बारिधिमें बली बालिको बेरों।

॥ बरवै ॥

भुव अकाश रवि चन्द्रहि करि जलपान ।

लखन सवानहि मिलिहों रावण प्रान ॥ ४३० ॥

॥ अथ ललितअलंकारवर्णन-दोहा ॥

कहिय कछुक प्रतिबिम्बसों, तासु बनाय सुधीर ।

अलंकार वरणें तहाँ, ललित सुमति गम्भीर ॥ ४३१ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कारज सरै न कीन्हें नगर अतङ्कपथ बगर स्वयम्बर  
महीपन लरजतैं । लछिराम राम रघुवीर मैथिलीको साथ  
छूटे ना परशुराम रावरी गरजतैं ॥ भङ्ग भयो पलमें शरासन  
मदेश अब जुरिहै न केहूँ विधि बलकी दरजतैं । औसर  
बितीते अनरथ उपचार केहूँ बिछुन्यो कमान बाण आवत  
अरजतैं ॥ ४३२ ॥

॥ सवेया ॥

दूत कक्षो जिन दाह्यो त्रिकूटको, अक्रुद वीरता गाई अथा है ।  
 त्यो लछिराम न मानी कछु, अब होत कहा बहुती परवा है ॥  
 केती करी चतुरङ्गिनी सेन, चढी रघुनाथपे रोप प्रभा है ।  
 रावण ता खन मानी न तू, विष घोय अमीफल चाखन चाहे ॥

॥ पुन ॥

रावण तू अपमान कियो, भली भँतिसों राजसभा सब गावे ।  
 आतुर जाय मिल्यो रघुनाथसों, लेके भयङ्करी न्योत घतावे ॥  
 ओसर चूक्यो न फेर मिलै, लछिराम करो अब जो मन भावे ।  
 आयहे रामको छोड़ि भला बन्यो, राव विभीषणे कोन बुलावे ॥

॥ सरचे ॥

मूढ तीनि पन धीते विनु रघुनाथ ।

अब तू क्यो शिर पीटत मलि मलि द्राय ॥ ४३५ ॥

॥ अथ महर्षिअलङ्कारधिविधवर्णन-दोहा ॥

मनवाञ्छितफलसिद्धि जई, श्रमविन होय सुषेस ।

प्रथम प्रदर्पण तहँ कहँ, जे कवि शुभग सुरेस ॥ ४३६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

पस्तरे प्रभामे पन्यो पारस मिल्यो सो खिल्यो, मद्गद  
 कण्ठ भरे आनंद सदनतैं । भूक्षिषे कुशल वारिलोचन जुगल  
 तळ, परम प्रताप योँ करोरिन मदनतैं ॥ लछिराम घनघोर  
 दुन्दुभी अवार्जे महा, मङ्गळ अवध श्रीगणेशके रदनतैं । सौरभो  
 श्रीभरत रामचन्द्रको सरूप तोळो, आगमन जान्यो हनुमा-  
 नके वदनतैं ॥ ४३७ ॥

॥ सवैया ॥

हेरिबे हेत विहङ्गके मानस, ब्रह्मसुरूपहिमें अनुरागे ।  
भाय भरतथसों भेंट्यो तहीं, पुलके तनु यौं लछिराम सभागे ॥  
मंजु मनोरथ फैलि फल्यो, परमाने सवै तप पूरण जागे ।  
मौज मढ़े उमड़े करुणाखड़े, श्रीरघुनाथ जटायुके आगे ४३८

॥ वरवै ॥

उर अगस्त्य अनुसुइया मनरथ होत ।  
सोहैं श्रीरघुनन्दन भानु उदोत ॥ ४३९ ॥

॥ द्वितीयप्रहर्षण वर्णन-दोहा ॥

मनवाञ्छित फलतैं अधिक, फल विनश्रम मिलिजाय ।  
समुझि प्रहर्षण दूसरो, हरष न हृदय समाय ॥ ४४० ॥

॥ यथा कवित्त ॥

अङ्गद सुकण्ठहनूमान बलवान आगे सङ्गम सदल जामवन्त  
विभीषणको । लछिराम नील नल केसरी कुमुद दायें वास-  
भाग द्विविद सुषेण हरषणको ॥ गरजे निसान कल कौशल  
नगर बर बगरे विमान घनघोर करषणको । शत्रुहन सौर्यो  
इयाम घन आवरण तौलों सोहैं रथ रामचन्द्र मैथिली  
लषणको ॥ ४४१ ॥

॥ सवैया ॥

ओरहीं प्रेमसों पूजनके भले आसन द्वार कुटीपै रचे हैं ।  
ब्रह्मसुरूपहि भेटिवेको छन या अभिलाष द्विये विरचे हैं ।  
त्यौं लछिराम फलो तिगुनो यौं मनोहर आनंदमें उमचे हैं ॥  
मैथिली लखन श्रीरघुनाथको हेरतही सरभङ्ग नचे हैं ४४२



॥ वरदे ॥

भरद्वाज अनुमानत आनन्दकन्द ।

लखन मैथिली भागे श्रीरघुनन्द ॥ ४४३ ॥

॥ मृतीय प्रदर्पण वर्णन-दोहा ॥

मन जाकी चिन्ता करे, मिलै वस्तु सोइ आय ।

तीजो भेद प्रदर्पणहि, परगट कियो लखाय ॥ ४४४ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

तिलक त्रिकूट श्रीविभीषण विशाल भाल, वालिषधिपम्पा  
दे सुकण्ठहि असकाको । लछिराम सूरपनखा त्यों खर-  
दूपणके, वदन विदारि घोरै वीरद के डङ्गाको ॥ यातुधान  
वंशहि शिखसन सदल मारे, मेघनाद कुम्भकर्न रावनसे बङ्गा-  
को । कौशिला महल बेठी बूझिबे सगुन तोलों, गरजे भरत  
राम आये जीति लंकाको ॥ ४४५ ॥

॥ सवेया ॥

जाके लिये बहुषासर में जपेमंत्र महातम वेदन गाये ।

जा महिमाके विचारसमें भरे रूपाळ खरे बहुकाल गँवाये ॥

और कर्दालों कहे लछिराम किती उपचार कला वगराये ॥

आहित घेठे मुतीक्षण भोरते राम किशोरते सामुद्धे आये ॥ ४४६ ॥

॥ अथ विषादालङ्कारवर्णन-दोहा ॥

मनवाञ्छित चितचाहमें, फलप्रभाष विपरीति ।

भूषण वरणि विपाद इमि, कोषिद कवि अपिरीति ॥ ४४७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

सन्त सुर चौदहों भुवन राजवंशनपे, रतनसिंहासन प्रका-  
श महाजरको । लछिराम रामचन्द्र मैथिली लखन छन कीने

वन गौन औध शोक सरासरको ॥ मंडित सुनीन मण्डलीनमें  
बसिष्ठ मन है रह्यो कुलालचक्र हीरो हारि थरको । राजअभि-  
षेक औपधीनपै नजर कान वज्र यों वजर बाणकैकयकि  
बरको ॥ ४४८ ॥

॥ सवैया ॥

सोरहौ साजि सिंगार सनेहमें बड्क विलोकनि चञ्चलताकी ।  
चाहती रामहि अड्क भरयो चढ़ि लखन भौहैं सरोप प्रभाकी ।  
त्यों लछिराम सुरूपकी राशिलों सौहैं खडीलसै वानकवाँकी ।  
चाह भरी मिलिवेकी रही कटी नासिका कानलै सूर्पनखाकी ॥

॥ बरवै ॥

उतरि सिन्धु किमि ऐहैं राजकुमार ।

तवहिं सुन्यौ दशकन्धर दल इहि पार ॥ ४५० ॥

॥ अथ उल्लासअलंकारवर्णन-दोहा ॥

औरहिके गुण दोषते, थपि अनतै गुण दोष ।

अलंकार उल्लास तहँ, चौविधि रचि मति चोख ॥ ४५१ ॥

॥ औरके गुणते औरको गुण-यथा सवैया ॥

जाहित शम्भु सुरेश गणेश महेश महामख साधन फेटे ।

जाहित जोगी जपी तपसी, यती जाल तपैं तनुछार धुरेटे ॥

कौतुक या लछिराम लखो, पुलके तनु यों अनुराग लपेटे ।

राक्षसवंश विभीषणतैं, भरि अंकमें भाय भरत्थसोंभेटे ॥ ४५२ ॥

॥ औरके दोषते औरको दोष-यथा सवैया ॥

मेथिलीको छलते वनमें हरयो कान सुने स्वर दूषणै मारे

फेरि बली हनूमान लँगूरते बाग उजारि त्रिकूटहि जारे

कौन कहै रचना लछिराम, परैं दुख औरपै औरके डारे ।  
रामके रोपन रावन दोपन राक्षसै बानर भालु सँदारे ॥ ४५३ ॥  
॥ घरवै ॥

इन्द्रजीत वच सुनतहि लक्खन ईस ।  
समरझपटि कोधासुर काट्यो शीस ॥ ४५४ ॥  
॥ औरके दोषते औरको गुण-यथा सबेया ॥

घालि बलीके सँहारतही सुखसाहिषी भार सुकण लियो है ।  
या विपरीति कहांलें कहैं लछिराम लखे अकुलात हियो है ॥  
औरके दोपन औरही को गुण गावत वेद पुराण बियो है ।  
रावनक अपमानते राज विभीषदको रघुनाथ दियो है ॥ ४५५ ॥  
॥ घरवै ॥

त्रिजटा सपन सुनायो रावणनाश ।  
पुलके तन मन सियके बलित विलास ॥ ४५६ ॥  
॥ औरके गुणते औरको दोष-यथा सबेया ॥

भैंहैं चढी बढी भालपै लालिमा ओज विराजत सूरजअशको ।  
त्यो चतुर्गङ्गिनीमें लछिराम चमूपति चातुरी चारु प्रशसकी ॥  
यो फरके भुजदण्ड अखण्ड धरीमें करें धननाद विध्वंसको ।  
लक्ष्मणको धनुबाण दधानल दारुण दीह निशाचर धशको ४५७  
॥ घरवै ॥

चिकट बानरी सेना रामसिंघार ।  
कालनिशाचर कुलमें उतरति पार ॥ ४५८ ॥  
॥ अथ अवज्ञाअलंकारवणन-दोहा ॥

गुणन औरके गुणनते, प्रथम अवज्ञा साज ।  
निमि न औरको औरही, दोष लगे शिरताज ॥ ४५९ ॥

॥ प्रथम औरके गुण औरको न लगै-यथा दोहा ॥  
बरसत सुर नर नाग शिर, आनँदशीतलभार ।  
रामचंद्र करतौ भुवन, सुखन असुर परिवार ॥ ४६० ॥

॥ द्वितीय औरको दोष औरको न लगै-यथा दोहा ॥  
संग सहोदर एक थल, लखत देव द्विजघात ।

वसन विभीषणके हिये, रावणको उत्पात ॥ ४६१ ॥

॥ अथ अनुजालंकारवर्णन-दोहा ॥

दोषहिको गुण मानिकै, चाहक तन मन होय ।

कहत अनुज्ञा भूषणहि, पंडित कवि सब कोय ॥ ४६२ ॥

॥ यथा सवैया ॥

रथपै चढि या चतुरंगिनी लै, जुरिहैं रण रंग समानत हैं ।

रघुनाथसो बोलिहौं रावणहौं, जे कला धनुकी सब जानत हैं ॥

कटि हैं सुत नाती सँघाती सबै, लछिरामन टेक दूँठानतहैं ।

हरिवो वन मैथिलीको छनमें हम, आनँद यों परमानत हैं ४६३ ॥

॥ बरवै ॥

कुम्भकरण हँसि बोल्यो सुनु रघुवीर ।

कटिवो भलो समरको सनमुख वीर ॥ ४६४ ॥

॥ अथ लेसालंकारवर्णन-दोहा ॥

गुणमें दोष विलोकिये, दोषहिमें गुणधीर ।

अलङ्कार लेसो द्विधा, वर्णत कवि गम्भीर ॥ ४६५ ॥

॥ दोषमें गुणवर्णन-यथा सवैया ॥

काजहै राजकुमारनको मृगया वन खेळिवो ख्याल तरङ्गमें ।

हेम-कुरंग निहारतही रघुवीर चले भले वीरता रङ्गमें ।

धानसों षाको षध्यो वनमें लछिराम इते मन्व्यो कौतुक सगमें ।  
रावण आपनेही रथपे हन्व्यो मैथिलीको छलहीके प्रसङ्गमें ४६६

॥ अरवे ॥

निजमुतहित कैकेयी, वन दिय राम ।

अपयश त्रिभुवन फैल्यो, नगरनिकाम ॥ ४६७ ॥

॥ दोबमें गुण-यथा कवित्त । ॥

अङ्गद सुपेण जामवन्त हनुमान आगे, करत अभङ्ग वार  
सङ्कर सुमनते । लछिराम लच्छिम्न दादिने मरम खोलें, रा-  
कस भयङ्करी प्रभाव परखनते ॥ रीछ विकराल कपिकुञ्जर  
करालनसों, वरने करन मत्र घाती दुसमनते । रामचन्द्रसोंई  
रण पण्डित विभीषण भो, सदल सकुलदङ्गकन्धर दमनते ४६८

॥ पुनः ॥

भूमि-भार हरण भरण आभरण भूरि जाग्योभाग नाग नर  
देव सन्त जनमें । लछिराम देव द्विजराज हिय भै-करन गरजे  
निसान दङ्गमौलिके वधनमें ॥ रामचन्द्र विरद वितान तान  
सातों दीप सबलसँदारे यातुधान रन वनमें । कौशळ कराल  
केकयीको वरदान हार पारस पदार चारु चोवहोंभुवनमें ४६९ ॥

॥ सबेया ॥

काननमें हन्व्यो मैथिलीको भय दीनो विशाल त्रिकूट वसायके  
लक्ष्मणराम सों युद्ध जुन्व्यो लछिराम लछाको लकीर स्वचायके  
फैल्यो चरित्र दर्शी विशि यों विधिहू रहे आंगुरी दाँत दवायके ।  
रावणसङ्ग चमूकुलमें पहुँच्यो सुरलोक निसान बजायके ४७०

॥ बरवै ॥

सुरपति-सुत सिय पग परछत करि चोच ।

बायस तनु धरि परस्यो यापर लेच ॥ ४७१ ॥

॥ अथ मुद्रालङ्कारवर्णन-दोहा ॥

सोच्यारथ सूचनासों, अरथ करत लै धीर ।

कछु अन्य सन्निधि सङ्गमी, मुद्रा गुण गम्भीर ॥४७२॥

॥ यथा कवित्त ॥

जाके भुजदण्डन अखण्ड अतुलित बल, खल भल स-  
मर भयङ्कर पसारसे । लछिराम जाके करतलमें चपलताई,  
वादिन बताई बेग सहस सहारेसे ॥ रावण प्रहस्तमें प्रमाण  
रावरेसो करौं, जालिम जुँगे इन्द्रजीत मतवारसे । जाके मान  
रेखें संक नाखत विचारे ताके आवैं चले बाण ये वजर  
विकारसे ॥ ४७३ ॥

॥ सवैया ॥

मान मल्ल असुरावलीके लछिराम यों जालिम जङ्ग जसल्ले ।  
सङ्गम श्रीरघुवीर निषङ्गते पैज प्रताप प्रभा बरसल्ले ॥  
बेझे करेजनके किरचैं दशकन्धर यानके प्रान बसल्ले ।  
रोदे कमान छे भालके भेजन पान करैं किनवान बसल्ले ४७४

॥ पुनः ॥

साँकरेमें सुर सन्तनके वगराये प्रताप अनन्त प्रभानके ।  
वारमें तरे कँपे धरती लछिराम हरै हलकम्प जहानके ॥  
मैथिली वार विलम्ब रती अब औसर वार छली मदपानके ।  
भालथली बटपारकी चूरकै, गौरैं गखूर गदा हनुमानके ४७५ ॥

॥ धरवे ॥

घन गरजन दल रावन कुलिशा कठोर ।

प्रलयपवनदवदरपन लखन किशोर ॥ ४७६ ॥

॥ अथ रत्नावलीअलंकारवर्णन दोहा ॥

कमसों वर्णन कीजिये, प्रकृति अर्थ शुभसाज ।

भूषण भनि रत्नावली, जे प्रभाव शिरताज ॥ ४७७ ॥

॥ यथा सवेया ॥

स्यौ गुरु मङ्गल सुरज सोम सुरेश महेश गणेशो विचान्यो ।

पारस कामद्रुहा कलपद्रुम दानिया वारिद्रुको निहान्यो ॥

सागर सार्तो सभाग मुमेरु स्यो गग प्रयाग प्रकाश प्रचान्यो ।

श्रीरघुवीर कृपानिधिको गुण ले सवहीको विरश्चि सँवान्यो ॥

॥ धरवे ॥

पारसमणि कलपद्रुम वजर गँभीर

रच्यो ब्रह्म हरवर वै हनुमत वीर ॥ ४७९ ॥

॥ अथ सद्गुणाळंकारवर्णन-दोहा ॥

तजे आपनो गुण जहाँ, धारण करि गुण सग ।

अळंकार सद्गुण तहाँ, वर्णत रसिक प्रसंग ॥ ४८० ॥

॥ यथाकथित ॥

कोकनद करमें कमान मान रतनारे, तरकसे कन्ध हेरि

हीन धरकतके । मंगली माधुरी हैसनि लछिराम सोई कोर्षे

करे छोरें पट फेले फरकतके ॥ श्याम घन धरण महीप

रामचन्द्र चारु, परी परछर्षी मेन रंग स्वरकतके। जोहर हरीरे

पीरेमणिके जँभीरे गरे हीरे लाल मोती होत हार मरकतके ४८१

॥ बरवै ॥

सख्यु-तीर श्रीरघुवर करत विहार ।

वार पार यमुना करि जगमग धार ॥ ४८२ ॥

॥ अथ अपूर्वअलंकार द्विधावर्णन-दोहा ॥

प्रथम संग गुण ग्रहण करि, फिरि बातनि निजरंग ।

पूर्वरूप पहिलो कहत, जे प्रवीण सब रंग ॥ ४८३ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

परसतही में बन्यो हार गज गौहरको, गंग गहवर लै प्रकाश  
करवसों । लछिराम तापर अमन्द आचरज परे प्रतिबिम्ब  
लोचन त्रिवेणी हरवर सों ॥ छावत प्रभायों पहिरावत लखन  
गरे राम रघुवार भरे आनंद गहरसों । मंगलीक रंग सुकता  
हलको एतो होत बिकसत सेतु रामगंगकी लहरसों ॥ ४८४ ॥

॥ बरवै ॥

भरत गरे लर मानिक मरकत होत ।

परसत फिरि करकञ्जन अरुण उदोत ॥ ४८५ ॥

॥ द्वितीयवर्णन-दोहा ॥

हेत रचन गुण मितनको, मिटै न गुण रंगधीर ।

पूर्वरूप दूजो कहत, जे कवीन्द्र गम्भीर ॥ ४८६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

अङ्गराग आभरण भूषण सुभाय अङ्ग, जगमगें जोति  
जोगराशिलों बसनमें । घूँवटके घेरसों न खोलति बदन मन्द,  
स्वासन समीर होत सुरभि रसनमें ॥ शिषिनकी वामें  
लछिराम चरचित चौहैं अदरसहूलों आदरसलों जसनमें ।  
परनकुटीमें डारि बैठति अकेली कटै झाझरीसों कौधैं वन वन  
सरसनमें ॥ ४८७ ॥



॥ घरवे ॥

सन्तसमाजन सहजहु हनुमत धीर ।

बदनज्वालसो जालिम बजर शरीर ॥ ४८८ ॥

॥ अथ अतद्गुणअलकार वर्णन-दोहा ॥

संगतिको गुण कैसहु, ग्रहण करै न सुभाष ।

भूषण तहाँ अतद्गुणे, वरणत पण्डितराष ॥ ४८९ ॥

॥ यथा कविस ॥

शाखासे कलपलतिकाके भुजदण्ड भारी, करके रहत भरे  
आनंद महान है । लछिराम आंगुरी नखनतैं त्रिलोकवीच,  
बरसत बरषस नौ रतन दान है ॥ उमचै सुमन या चरित्र  
अदभुत हेरि, रङ्ग सतसग गाये वेदन प्रमान है । करुणा  
कलित करकमलप्रसग तऊ पन्नगी स्वभावको न छोड़ति  
कृपानेहै ॥ ४९० ॥

॥ घरवे ॥

लक गङ्गसिन धीचै सियको वास ।

ब्रह्मरूपिणी मतिको तदपि प्रकास ॥ ४९१ ॥

॥ अथ अनुगुणअलकार वर्णन-दोहा ॥

पूरव गुण सतसङ्गते, चोखो गहवर हेरि ।

अलङ्कार अनुगुण कहैं, सुकविसिरोमणि टेरि ॥ ४९२ ॥

॥ यथा सधैमा ॥

लक्ष्मन लालके हाथनकी परमा उभरोखी उदे लहरे है ।

त्यो लछिराम छटापट पीतकी अङ्गन चम्पई चारु करै है ॥

शासक मन्द में हीरक-हारकी सेत भीरी अनोखी अरे है ।

हाथनमें गजरारे लिये मणि माणिक लालिमा चोखी परेहै ४९३

॥ बरवै ॥

मरकतमणिकी माला पहिरत राम ।

और श्यामता झलकति तन घनश्याम ॥ ४९४ ॥

॥ अथ मिलितअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जहँ सादृश्य विलोकतहि, लखि न परै कहु भेद ।

अलङ्कार वर्णन करै, मिलित सुबुधि, बिनखेद ॥ ४९५ ॥

यथा सवैया ॥

गोल कपोलनपै जुलफै लसै, कुण्डल कानन बैस बहाली ।

पाग सुही सरपेंच मणीनके, चारु चुनीनकी त्यों परमाली ॥

आनन यों लछिराम प्रकाशमें, बेसबिलास छटां रुखवाली ।

जानिपरै न सुनीशनहूको, भरत्थके ओठन पानकी लाली ॥

॥ बरवै ॥

करत शत्रुहन दानहि सुबरनहार ।

मिलत चम्पई रँगमें बुधन बिचार ॥ ४९७ ॥

॥ अथ सामान्य अलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जहँ पदार्थ सादृश्यमें, अनुमानत नहिं भेद ।

अलङ्कार सामान्य तहँ, परमानत बिन खेद ॥ ४९८ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

पम्पासरवर भोर पूजनसमैके हेत हरवर आये भरे शील  
त्यों चखनके । लछिराम रामचन्द्र चारु अनुशासनतैं चहके

चहूँधां चञ्चरीक हरखनके । अरुण अमन्द कल कोमल  
प्रकाशमान सौरभित सुन्दर प्रकाश परखनके । तोरत सजल

पहिंचाने न परत कौन कमल सुरङ्ग कौन कर हैं ल-  
खनके ॥ ४९९ ॥

॥ बरवै ॥

गङ्गाधार मुक्ताहल वरसत राम ।

परखिजात नहिं केहुं जग अभिराम ॥ ५०० ॥

॥ अथ उन्मीलितअलंकारवर्णन-बोधा ॥

मिलित विषेमें जहैं फुरै, भेद कछूक प्रमान ।

उन्मीलित भूषण तहाँ, वरणत कलानिधान ॥ ५०१ ॥

॥ यथा क्वचित् ॥

पावन परम गङ्गाधारा सो सुरूप राजै परम प्रकाशमान  
श्वेत स्वच्छपटतैं । मोगरा चमेली कुन्द मालतीके माल  
गरे मङ्गलीक दूने अश रक्त दपटतैं ॥ कौतुकमें कलपे  
कुमारी मुनिवृन्दनकी हारीं हेरि हेरि लता ओटन कपटतैं ।  
कढ़े मैथिलीके चाननीमें पहिचानैं द्वार परनकुटीके परिम-  
लकी लपटतैं ॥ ५०२ ॥

॥ बरवै ॥

साधन धन वन सोहैं गरज समीर ।

वृन्तनसों पहिचानत गज रघुवीर ॥ ५०३ ॥

॥ अथ विशेषकअलंकारवर्णन-बोधा ॥

वैशेषक सामान्यसों, जहैं विशेष पहिचान ।

तहैं विशेष धनन करत, जेप्रवीण मतिमान ॥ ५०४ ॥

॥ यथा सवैया ॥

झूमैं जैजीरनमें जकरे फरैं सामुहैं दिग्गजहूको दिवाने ।

पूरे प्रवाहबहे मदके लछिराम धरानदलों सरसाने ॥

कारे महाचिकरारे चिराट विषारे न देवनहू धनुमाने ।

।मके सावनी राने पय गरजे ते मतझ परैं पहिचाने ॥ ५०५ ॥

॥ बरवै ॥

रामसङ्ग जव विहरत आनंद चार ।

छत्र हाथ पहिचानत भरत कुमार ॥ ५०६ ॥

॥ अथ गृहोत्तरअलंकारवर्णन-दोहा ॥

साभिप्राय सुभाव जहँ, उत्तर दै परवीन ॥

गृहोत्तरवर्णन करै, जे कवित्त रसलीन ॥ ५०७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बोल्यो बालिनन्दनसों विहँसि गँभीर बैन, रावण महीप  
भन्यो गरब अवासेमैं । कैसे विरहानलज्वलित जुग तापसी  
वै अङ्गद उतर दीने सुमति प्रकाशमैं ॥ लछिराम आयो दूत  
सङ्गी जिन अङ्गनतें परचे अँगारे विकराल रोष रासेमैं । ताके  
तनतापनतैं शिखर त्रिकूट सब, रावरो नगर बन्यो बगर  
तमासे मैं ॥ ५०८ ॥

॥ पुनः ॥

अङ्गदै विलोकि बोल्यो रावण विहँसि कैसे वीर तापसीवै  
कत वीरता प्रमानकी । जङ्ग मृगयाके बेड़े बानर सुभट सङ्ग  
लछिराम चतुरङ्गिनी त्यों यातुधानकी ॥ ऊतर गँभीर बालि  
तरपन सागरमें आगर अमन्द ओज सीमा सुखदानकी ।  
प्रलयभानु बजर गुमान जैतवार जाने रेखैं परबेखैं वन लख-  
नके बानकी ॥ ५०९ ॥

॥ बरवै ॥

जङ्ग रङ्ग कत करिहैं विरही राम ।

सङ्गर तिमि दशकन्धर जिमि हरि वाम ॥ ५१० ॥

अथ चित्रोत्तरअलंकारवर्णन-बोधा ॥

प्रश्नहि में उत्तर जहां, प्रथम भेद मतिसङ्ग ।

एक प्रश्न बहु उत्तरको, चित्रोत्तर विधि रङ्ग ॥ ५११ ॥

॥ यथा सबैया ॥

वालिके नन्दनसों दशकन्ध लग्यो कछु बूझन भाव गँभीर है ।  
सागर कैसे तरें तपसी लिये सङ्गमें वानर भालुकी भीर है ॥  
होरिके तीखे त्रिकूटको ओज कित्ती लछिराम रचै तदवीर है ।  
जो न जुरैगो निशाचरी सेनसों जालिम जूथपको महावीर है ॥

॥ बरवै ॥

मेघनाद रनमण्डन वासवधीर ।

तासु गरव-हरको जग बजरशरीर ॥ ५१३ ॥

॥ द्वितीयवर्णन ॥ यथा सबैया ॥

तोन्यो शरासन शङ्करको किन, कौन लियो घनु त्यों भृगुनाथसों  
कौन बध्यो मृगराजसों बालिको, कौनसुकण्ठहि कीनोसनाथसों  
राजसिरीको विभीषन भाल देको लछिराम जित्यो दशमाथसों  
उत्तर एकई बार दियो रचना सिगरी रघुनाथके हाथसो ५१४

॥ बरवै ॥

को मख-रक्षक कीनो मुनि तियरूप ।

माल मैथिली केदिगर राम अनूप ॥ ५१५ ॥

॥ अथ सूक्ष्मालंकारवर्णन-बोधा ॥

पर आशय आतुर जहां, मन अपने अनुमानि ।

शुभसव्यंग चेष्टा करन, सूक्ष्म भूषण ठानि ॥ ५१६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

शिखर त्रिकूट कोटिकलश निहारतमें, हार दीने अंगद  
सरोवर सजलके । लछिराम सहस्र वदन अवतारीके निसाने  
रसवीरके नसामै मंत्र कलके ॥ फरकीले बाँहवल वदन  
विशाल भाल भौंहे चढी लालीमें प्रताप झलाझलके । हनु-  
मानसोहैं तिरछैहैं लछिमनवीर, वानन बरेजे कई रेजेके  
कमलके ॥ ५१७ ॥

॥ पुनः ॥

दाहे लङ्क रावण गरब चकचूर करि, अक्षयकुमारहि  
पछारे पैज प्रनके । लछिराम कुशल प्रबोधि मैथिली त्यों तोरि  
बाग सोधे राकस अभंग रण रंगके ॥ धनुष बलित श्री विभी-  
षण करन दीने चारुचित्रपट हनुमान श्याम घनके । पल्लव  
जवासे बगराय दै कछूक तिन जुगल प्रवीण त्यों सम्हारे मौज  
मनके ॥ ५१८ ॥

॥ सवैया ॥

लखन पाती लिख्यो गुनिकै कह्यो दूतहि रावनको यह दीजो ।  
माँझ सभामें जो हारि मिल्यो लखतै भुज बीसऊं भाल पसीजो ।  
धावन हाथदी फेन्यो सफन्दमें याविधिसों लछिराम सुनीजो ।  
राखियो बन्द खुलै न कहूं खुले नाम कथा न प्रमाण गनीजो ॥

॥ बरवै ॥

मायावी शूर्पनखै लखि रघुनाथ ।

लखनहि चितये नासाश्रुति धरि हाथ ॥ ५२० ॥

॥ अथ पिहितअलंकारवर्णन-दोहा ॥

दुरी किया परकी समुझि, प्रगटै जतन स्वभाव ।

भूषण पिहित प्रमान किय, परमिति पण्डितरावा ॥ ५२१ ॥

॥ यथा कथित ॥

मण्डित मनीन मण्डलित कलझावलीपे, नोरंग निसानेकी  
वनक परखनको । सङ्कलितभाल भृकुटीनकी मरोरि मन्धु,  
घनघोर बगर वनेती हरखनको ॥ रामचन्द्र पीछे त्यो तिरिछि  
नेन कोरनकी, पूतरी पटेती भाव भास्यो ना सखनको । झिस्तर  
सुबेलते अक्षारो लङ्क रावनको, सानमें विभीषण लखावत  
लखनको ॥ ५२२ ॥

॥ पुनः ॥

सेनप सुषेण राव सुघर सुकण्ठ सोहैं जामवन्त जालिम  
जितेया खलकनके । हनुमान अङ्गद विभीषण विराटवीर,  
केसरी कुमुद नल नील बलकनके ॥ लछिराम शत्रुहन भरत  
समर हारे, दल रघुवशी बङ्गराते पलकनके । लखने लखा-  
वत चखन रामचन्द्र येई लष कुश वारे गभवारे  
अलकनके ॥ ५२३ ॥

॥ बरवे ॥

हेरत सुघर सुकण्ठहि रघुकुलचन्द ।

हृग मरोरि लषकुशपर आनैवकन्द ॥ ५२४ ॥

॥ अथ व्याजोक्तिअलकारवर्णन-बोहा ॥

निज आकारदिको दुरे, कहे ओर परमानि ।

अलकार न्याजोक्तिको, याविधि कथिन बखानि ॥ ५२५ ॥

॥ यथा सबेया ॥

ब्राह्मण हों सदा पूजत शकरे वादे भयकर को नमें जानो ।

वेदविधानन होम हुताग्ने ब्रह्मके शासनहीं शुभठानो ॥

क्षत्रिनेके धनसों लछिराम सुमैथिली भूख तरङ्गहि भानो ।  
बन्धन भीख न दीजै हमैं व्रत है कई वासरको परमानो ॥ ५२६ ॥

॥ बरवै ॥

मशकरूप धरि हनुमत सुरसहि हेरि ।

विनयव्याजवर वातन ऐहौं फेरि ॥ ५२७ ॥

॥ अथ गूढोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

व्याजहिं पर उपदेश करि, परम चातुरी सङ्ग ।

अलंकार गूढोक्ति तहँ, बरणत कवि नवरङ्ग ॥ ५२८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

खिले फूल हौ भोर घने बन बाग यौं स्वामिनीको परखावनेहै ।

लखि याविधि गौरिके पूजनको लछिराम हियो हरपावनेहै ॥

पहिलेही मराल मयूर चकोर मलिन्दनको मडुरावनेहै ।

हंसि बोलि अली भली मैथिलीकी फिरि कालिह इतै संग

आवनेहै ॥ ५२९ ॥

॥ बरवै ॥

बिहँसि कह्यो रघुनन्दन पावन बाग ।

एहैं फेरि सुमनहित गुरु अनुराग ॥ ५३० ॥

॥ अथ विब्रोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

व्यंगसहित अश्लेष जहँ, रचना कवि शुभरंग ।

अलङ्कार विब्रोक्ति तहँ, बरनत प्रेमतरङ्ग ॥ ५३१ ॥

॥ यथा सवैया ॥

लसैं लाली भरे अरविन्द खिले भ्रमरावली सङ्गम साजतिहैं ।

लता चम्पई खजन कीर कपोत सुकोकिल मन्द अवाजतिहैं ॥

लछिराम या अंश विदेह रची परसीली समरिस्ते लाजतिहैं ।

प्रभा पावन सौरम सङ्ग सनी बनी बागमें बागविराजतिहैं ५३२



॥ कथित ॥

मधवान मन्दर पछायो मेघनाद मौलि ख्याली कुम्भ-  
करण धिराट रनवनमें । अपर कुमार कालदण्डक कतलवाज,  
चारु चतुरागिनी प्रभात प्रलेधनमें ॥ तापर त्रिकूट भन्पो  
सागर तरे को पार, लछिराम योग अज्ञ राम लछिमनमें ।  
रावरेसों रावण सँषान्पो राजहंस वाज, वजर शरीर महावीर  
त्रिभुवनमें ॥ ५३३ ॥

॥ अथ युक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

मरम छिपावे करि क्रिया, सग सुमति व्यापार ।

अलङ्कार तहँ युक्तिवर, वरनत रस अवतार ॥ ५३४ ॥

॥ यथा सवैया ॥

रामकुमारको हेन्पो सुरूप सभागमें तोरत फूल कली है ।  
त्यो लछिराम सरोजसे लोचन कोरन वारि प्रभा मचली है ॥  
चातुरीसों लतिकानकी ओट सँषान्पो सनी अलिकी अवली है ।  
वागते यों अनुराग भरी सिय सुन्दरी घूषट घालिचली है ५३५

॥ वरदे ॥

सहमि सकोचनि हेरत सियमुख राम ।

आगे लखन तिरीछे वाग अराम ॥ ५३६ ॥

॥ अथ लोकोक्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

कहनावति जहँ लोकमय, लोक वचनपरमानि ।

अलङ्कार लोकोक्ति तहँ, वरनत कवि सुखदानि ॥ ५३७ ॥

॥ यथा सवैया ॥

जा रघुनायकी हेरि प्रभा शची शारदा पारवती आभिलोषें ।

जापर शेष गणेश मदेश निहारत वारत सिद्धिन लाखें ॥

तापतिकी पतिनी लछिराम सुता मिथिलेशकी ताजगसाखें ।  
रावण छोरि अनार अँगूर कहा फल फूल धतूरको चाखें ५३८

॥ पुनः ॥

जा महिमाको न गायसके चतुरानन शारद सौक सखर पै ।  
कोटिनको दिये राजसिरी अरु कोटिनको दिये धासन धूरपै ॥  
तीनिहूँ लोकनके शिरताज विराजै प्रभा लछिराम त्यों धूरपै ।  
रावण राजसिंहासनै छोड़ि करै कोऊ बैठक बेल बबूरपै ५३९

॥ बरवै ॥

छोड़ि मानसर मञ्जुल लघु-सर जात ।

राजहंस तजि मोती काँकर खात ॥ ५४० ॥

॥ अथ छेकोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

होत जबहिं लोकोक्तिमें, अर्थान्तरकी खानि ।

अलङ्कार छेकोक्ति तहँ, कविपण्डित परमानि ॥ ५४१ ॥

यथा सवैया ॥

अङ्गद तैं बड़े बापको पूत है तापस पीछे क्यों जन्म गँवावै ।

रावन जाने प्रभावन तैं कछू वासरमें लछिराम लखावै ॥

मैं विरतान्त कहा अपनो कहाँ या उपखान तिहूँ पुर गावै ॥

वैद वही जो हरै सब रोगन पालै प्रजा सोई राव कहावै ५४२

॥ पुनः ॥

तापसै भेत्थो विभीषन जाय क्यों रावन या अनुमान अरै है ।

बोल्थो प्रहस्त प्रभावनतैं रघुनाथको जानत जानिपरै है ॥

या जगमें उपखान प्रसिद्धि सही लछिरामकथा बगरै है ।

चोरको चोर सुजानै सुजान जतीको जती पहिचानि परै है ॥

॥ वरवै ॥

इन्द्रजीत रनकर्कश लखन सबान ।

भटको भट पहिचानत यह उपखान ॥ ५४४ ॥

॥ अथ वक्रोक्तिअलंकारवर्णन-दोहा ॥

अर्थ फेरकी कल्पना, श्लेष काकृते ठानि ।

अलङ्कार वक्रोक्ति तहै, वरनत कवि गुणखानि ॥ ५४५ ॥

॥ यथा सवैया ॥

झूमत सागर पार खड़े मदमाते मलिद फिरें मड़राये ।  
 त्यों लछिराम भशुण्डन शुण्डकों ऊचो करें भैं आनंद भाये  
 पूरे प्रले-घनसे गरजें लछिराम अतड्ड समा सरसाये ।  
 रावन कीजिये वारनको बली धारन श्रीरघुवीरके आये ५४६

॥ अथ काव्यकारि-यथा सवैया ॥

वान्यो त्रिकूटको वासरमें इतमान बली रघुवीर कलासे ।  
 दौरे निशाचर मारिवेको न परे कहूँ फन्द फलांक हवासे ॥  
 छारके बोल्यो कुमार समीरको यों लछिराम छके हैं हलासे ।  
 आयहैं फेरि कछु दिनमें करहैं फिरि ऐसे लँगूर तमासे ५४७

॥ स्वभावोक्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जातिस्वभाव स्वरूप गुण, दत्ताकार परमानि ।

स्वभावोक्ति भूपन भलो, वरानि प्रत्यक्ष प्रमानि ॥ ५४८ ॥

॥ यथा सवैया ॥

कीशिला जन्म समे रघुनाथके मङ्गल राशि मदाफल पावे ।  
 भाळ विशाल कछु पुलके घस मानन आभान भोन अमावे ॥  
 नासिका मोरनि त्यों लछिराम कछु अघावलीको फरकाये ।  
 माधुरे रोदनके भगी छोदन वधटछे, रकी छांद छपाये ५४९ ॥

॥ पुनः ॥

ब्रह्मकी राशि प्रभा उपटी परै गोल कपोल कछू फरकोये ।  
साँवरो गात सोहात सबै मनि जोति की कौधै जगामग जोये ॥  
मोरनि भौहैं मरोरनि भालकी आनँदबीज सबै डर बोये ।  
कौशिल भूपर श्रीरघुनंदन कौशिला सूपकीसेजपै सोये ॥५६०॥

॥ पुनः ॥

गारैं किती रतनावली थार किती मधुरे स्वर मङ्गल गावैं ।  
कौशिला आननचन्द निहारि चकोरनीलों उर आनँद छावैं ।  
साँवरे अङ्गनपै सिगरी लछिराम लरैं मुकता बरसावैं ।  
मङ्गल गाय झुलाय सबै हरे रामलला मुख चूमनधावैं ॥५६१॥

॥ पुनः ॥

भाल थली गभवारी लटैं कहुलागर सिंहनखी शुभ साजैं ।  
पीरे झंगा कर कङ्कन हीरक राते खिलौननकी छवि छाजैं ॥  
त्यो मचलैं मणि आँगन में लछिराम सुने बरहीन अवाजैं ।  
कौशिला हाथनसों बिछलैं भली रामलला पग पैजनीबाजैं ॥५६२॥

॥ कवित्त ॥

बार गभवारे कन्ध कलित कपोलनपै, कटुला बलित ब-  
घनहा कण्ठ भायैहैं । पीरी पीरी काछनी सुरङ्ग उकसीली पाग  
इत उत हेरनि चपलगति ठाये हैं ॥ जैतवार खलि रघुवंशिन  
सों रणरङ्ग लछिराम छोरैं पट भुव फरकोये हैं । राते पीरे तरकस  
धनुष हेरीरे वान रथ रघुनाथ सौहैं लव कुश आये हैं ॥५६३॥

॥ पुनः ॥

ऊपर परे हैं भालु बानर असुर कटे फरकत भूपर मतङ्ग  
मतवारे हैं । मडुरात बाजी विनबीरके बगर बाज ठौर ठौर ब-

हिचले रुधिर पनारेहैं ॥ लछिराम अजवतमासे पलहीमें मचे  
हेरिवेको फेरि मन खरकें हमारे हैं । वनफल चाखि मैथिलीसों  
लव कुश भाषि अम्ब चलि वैसे तैंखिलौने खेलि मारेहैं ॥५५४॥

॥ बरवै ॥

तरकस राते पीरे लघु धनुवान ।

खेळत मृगया लव कुश शिशुप नसान ॥ ५५५ ॥

अथ भाषिक अलङ्कारवर्णन-बोहा ॥

वरनत भूत भविष्य जहैं, अरु प्रत्यक्ष प्रमान ।

अलङ्कार भाषिक तहाँ, ग्रथनमत अनुमान ॥ ५५६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

विहरत जैसे रहे शिखर लतान वीध वैसई चरन चिह्न वे-  
सविलसत हैं । लछिराम ठौर ठौर गङ्गके तरङ्गन में मञ्जन  
किये त्यों हेरि द्विय हुलसत हैं ॥ सौरभित भूपर सुमन परना-  
सन के परम प्रकाश परिमल में बसत हैं । मैथिली लखन राम-  
चन्द्रको घरमराज आजलों चरित्र चित्रकूटमें लसत हैं ५५७ ॥

॥ बरवै ॥

अवधराजासिंहासन जिमि सिय राम ।

कनकभवन में विहरत तिमि अभिराम ॥ ५५८ ॥

॥ अथ उदात्तअलंकारवर्णन-बोहा ॥

अनुपलक्षित चरित जस, अधिकारी के संग ।

वरनत शुभग उदात्त कवि, अलंकार नव रग ॥ ५५९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कनक भवन रगरावटी-शिखर फैसे भानुरथ संगमी वि  
भान सुरवालाको । लछिराम हीरक मुकुट कलसावली पे,

झूमि झूमि झेलत चकोर चन्द्रसाला को ॥ रतन सिंहासन  
महीप रामचन्द्रसोहैं जब जब सोर घोर घन मतवाला को ।  
मैले मुद मोटैं कोट कौशल कँगूरन ते तब तब चूमत मुरैले  
विज्जुमाला को ॥ ५६० ॥

॥ पुनः ॥

बगर बगर नौरतन झरनासे झरैं पङ्कित प्रवाह महा मद  
की नहर सों । लछिराम गाढे गढपतिनके गढदेस गरद मि-  
लावैं गाजिगरब गहर सों ॥ राम रघुवीर गजरथके मतंग  
पावैं पदवी गजेन्द्र अमरेशके सहस्रसों । उन्नतभञ्जुण्डै  
गुण्डादण्ड भरि भरि बारि छोडत फुहारे व्योम गंगकी  
लहर सों ॥ ५६१ ॥

॥ पुनः ॥

मारतण्ड मण्डलसो परमप्रताप जाको मण्डन भुवन  
भुजदण्डबल साजै हैं । लछिराम नारद महेश अलकेश द्वार  
शारदेश सहस्रवन लखिलाजै हैं ॥ डगर डगर फिरैं सुमन  
सरस फूले नगर बगरमें वधावरे सुवाजै हैं । कोटि पाकशासन  
सों परम प्रकाशमान रावशामचन्द्र ते सिंहासन बिराजै हैं ॥ ५६२ ॥

॥ पुनः ॥

कोकिल चकोर मोर गुञ्जरत भौर माते राजहंस चाखैं  
मुकताहलहिलक सों । फूलफलदलसों विटपलतिकावैलसैं-  
सौरतितमन्दमन्द मारुतझिलकसों ॥ लछिराम जामें रचैं रास  
धैथिलीके साथ रावशामचन्द्रजीकी चारुता चिलक सों ।  
तीर सरयूके औध भूपर प्रमोदवन क्योंनहो सिंगार त्रिभुव-  
नकी तिलकसों ॥ ५६३ ॥

हिचले रुधिर पनारेहैं ॥ लछिराम अजवतमासे पलहीमें मचे  
 हेरिबेको फेरि मन खरके हमारेहैं । वनफल चाखि मैथिलीसों  
 लव कुश भापें अम्ब चलि देखे तौखिलौने खेलि मारेहैं ॥५५४॥

॥ घरवे ॥

तरकस राते पीरे लघु धनुवान ।

खेलत मृगया लव कुश शिशुप नसान ॥ ५५५ ॥

अथ भाविक अलङ्कारवर्णन-बोहा ॥

वरनत भूत भविष्य जहैं, अरु प्रत्यक्ष प्रमान ।

अलङ्कार भाविक तहाँ, अथनमत अनुमान ॥ ५५६ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

बिहरत जैसे रहे शिखर लतान बीच वैसई धरन चिह्न बे-  
 सविलसत हैं । लछिराम ठौर ठौर गङ्गके तरङ्गन में मञ्जन  
 किये त्यों हेरि द्विय हुलसत हैं ॥ सौरभित भूपर सुमन परना-  
 सन के परम प्रकाश परिमल में बसत हैं । मैथिली लखन राम-  
 चन्द्रको धरमराज आजलों चरित्र चित्रकूटमें लसत हैं ५५७ ॥

॥ घरवे ॥

अवधराजसिंहासन जिमि सिय राम ।

कनकभवन में बिहरत तिमि अभिराम ॥ ५५८ ॥

॥ अथ उदात्तअलङ्कारवर्णन-बोहा ॥

अनुपलक्षित चरित जस, अधिकारी के संग ।

वरनत शुभग उदात्त कवि, अलङ्कार नव रग ॥ ५५९ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

कनक भवन रंगरावटी-शिखर फैंसें भानुरथ संगमी बि  
 भान सुरवालाको । लछिराम हीरक मुकुट कलसावली पे,

॥ वरवे ॥

अवधनगरकी सुखमा भुष अवतश ।

डगर बगर जहँ विहरत दशरथवश ॥ ५६४ ॥

॥ अथ अत्युक्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

जहाँ दान वश वीरता, अकथित अद्भुत भाव ।

अलङ्कार अत्युक्ति को, या विधि प्रगट प्रभाव ॥ ५६५ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

साज्यो दल सबल महीप रामचन्द्र धूम घोंसाकी घमक  
त्यो मतङ्ग अकिलत हैं । लछिराम लाली चढी धनुषर वीर-  
नके फहरे निसान मारू वान अगिलत हैं ॥ दिग्गज कमठ  
कोल वृषभ द्वारे अङ्ग भारके भरमधारे पारे से हिलत हैं ।  
हारे लफधारे झीशषदन हजारे फौलि शेषफन फेनके पनारे  
उगिलत हैं ॥ ५६६ ॥

॥ पुन ॥

राव रामचन्द्र चतुरङ्गिनी तिहारी जब करत पयान मूदि  
भानुको उदोत है । गरजे मतङ्ग दीह दुन्दभी धुकार सुनि फू-  
ल्यो न समात रघुवाशिनको गोत है ॥ लछिराम रजत तुरङ्गखुर  
धारनके पङ्कनवलित सातो सागरको सोत है । फूटत पदार  
दूटें वनविकरारे तव अन्धकार भारमई त्रिभुवन होत है ५६७

॥ वरवे ॥

गज रथ मणि मुकतादल रघुवर दान ।

राव अमर लसि रङ्गन करत न सान ॥ ५६८ ॥

॥ अथ निरुक्तिअलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

नाम योगते औरई, अर्थ कल्पना भाव ।

तहँ निरुक्ति भूषण कहत, जे प्रवीन धुधराव ॥ ५६९ ॥



॥ बरवै ॥

लखन वान जब चलिहैं सोर बगारि ।

कल न परैगी कलपित ज्वाल निहारि ॥ ५७९ ॥

॥ अथ हेतु अलंकार वर्णन-दोहा ॥

हेतु होत क्रम सहित जहँ, कारन कारज साथ ।

प्रथमरूप बरनन करत, या विधि जे गुणनाथ ॥ ५८० ॥

॥ यथा सवैया ॥

श्रीभवतार शिरोमणि यों विरुदावली वेद पुरान सुनी मैं ।

सेवरी गीध अजामिलकी लछिराम कथारही फैलि गुनी मैं ॥

कौल जवाहिरी सन्तनको कव लालकी चौकीकी मोलचुनी मैं ।

राम जो तैं न गरीबनेवाज तौ कौन गरीबनेवाज दुनीमें ५८१

॥ कवित्त ॥

जामवन्त जालिम सुकण्ठ शिरमौर आगे क्रुद्धवान केसरी

सुखेन मुखलाळीमें । कुसुद कटाक्ष नल नील अंग अंगद के

फहरे निसान आसमानलों प्रभालीमें ॥ घोरत विभीषन

हलाहल बताय भेदै लछिराम ख्यालभरे चाल मतवालीमें ।

रावन मतंग मान रावरेपै आवैं चढे केसरीकिशोर रामलखन

बहालीमें ॥ ५८२ ॥

॥ पुनः ॥

दानी दीनबन्धु बरदानी शम्भु शारदेश पारस पहार हार

जगर मगरको । ब्रह्मराशि मैथिलीश विज्जु घनश्यामसंग लछि-

राम चान्यों फल झर त्यो रगर को ॥ अधम उधारिवेकी आनि

बानि बाहँबल वोहिते विशाल भवसागर बगरको । विरद गँभीर

भानुवंश राम रघुवीर सांकरे सहायक है कौशलनगरको ५८३

राम नागर सँभारो आज रन विकरार कुम्भकरन करा-  
रेको ॥ ५७४ ॥

॥ पुन ॥

गोलको बजायषो न लायबो परारो धन देवन सतायषो  
न मारत घमण्डहो । गीधको न समर मुनिनकी न मण्डली  
हो सुन्दरीसो स्तेलिबो न बजर अखण्डहो ॥ लछिराम बीसो  
मुजवण्ड विष दण्डनको तोरिबेके हेत यो उदण्ड काल-  
दण्डहो । रावन प्रचण्ड रामचद्रको न दूत आज असुर  
कुमुदपे प्रलेको मारतण्डहो ॥ ५७५ ॥

॥ वरवैः ॥

लखन हयै नहिँ मानो रावन राज ।

असुर वश गज ऊपर नव मृगराज ॥ ५७६ ॥

॥ अथ विधिमलङ्कारवर्णन-दोहा ॥

सिद्धि अर्थको साजिये, अर्थ फेरि मुखसाज ।

अलङ्कार विधि वरनि कहि, या प्रकार शिरताज ॥ ५७७ ॥

॥ यथा कवित्त ॥

वानर न जाने तँ हमारे भुज वीसऊपे परमप्रचण्डबल अङ्ग  
बाज फरके । रावन सुभट राम लखने सराहो किमि ब्रह्म-  
जोति राजित सहायक अमरके ॥ कवि लछिराम घूम घाम  
की घमण्डहो में कादर ले कादर भगेया हरवरके । मण्डित  
अखण्डित चिरदधेरिवृन्दे हेरि विहँसत सोहँ सङ्ग पण्डित  
समरके ॥ ५७८ ॥

॥ बरवै ॥

लखन वान जब चलिहैं सोर बगारि ।

कल न परैगी कलपित ज्वाल निहारि ॥ ५७९ ॥

॥ अथ हेतु अलंकार वर्णन-दोहा ॥

हेतु होत क्रम सहित जहँ, कारन कारज साथ ।

प्रथमरूप बरनन करत, या विधि जे गुणनाथ ॥ ५८० ॥

॥ यथा सवैया ॥

श्रीअवतार शिरोमणि यों विरुदावली वेद पुरान सुनी मैं ।  
सेवरी गीध अजामिलकी लछिराम कथारही फैलि गुनी मैं ॥  
कौल जवाहिरी सन्तनको कब लालकी चौकीकी मोलचुनी मैं ।  
राम जो तैं न गरीबनेवाज तौ कौन गरीबनेवाज दुनीमें ५८१

॥ कवित्त ॥

जामवन्त जालिम सुकण्ठ शिरमौर आगे क्रुद्धवान केसरी  
सुखेन मुखलालीमें । कुमुद कटाक्ष नल नील अंग अंगद के  
फहरे निसान आसमानलों प्रभालीमें ॥ घोरत विभीषन  
हलाहल बताय भेदै लछिराम ख्यालभरे चाल मतवालीमें ।  
रावन मतंग मान रावरेपै आवैं चढ़े केसरीकिशोर रामलखन  
बहालीमें ॥ ५८२ ॥

॥ पुन ॥

दानी दीनबन्धु बरदानी शम्भु शारदेश पारस पहार हार  
जगर मगरको । ब्रह्मराशि मैथिलीश बिज्जु घनश्यामसंग लछि-  
राम चान्यों फल झर त्यों रगर को ॥ अधम उधारिवेकी आनि  
बानि बाहँबल बोहिते विशाल भवसागर बगरको । विरद गँभीर  
भानुवंश राम रघुवीर सांकरे सहायक है कौशलनगरको ५८३

॥ वरदे ॥

मेघनाद अवलोको लछिमन बाज ।

झपटै तुमहिं लवा करि सगर साज ॥ ५८४ ॥

॥ द्वितीयोद्देषर्षण-दोहा ॥

वस्तु एकही अङ्ग जहै, हेतु सकारज सङ्ग ।

हेतु अलङ्कृत दूसरो, भेद बरनि शुभरङ्ग ॥ ५८५ ॥

॥ यथा कविस ॥

भानवशभूषण कलशराजहंसन के परम प्रकाशमान राम  
जलधरके । बरसत बारहों महीने दानधारा बेस हीरालाल  
मोती गज रथ गिरिवरके ॥ लछिराम हेरत न लागै देर काहू  
समै गरलपटाय दीन मण्डल निधरके । पारस पुरन्दरधुर-  
न्धर धरमवन्त चाच्यों फल फलत कलपतरवरके ॥ ५८६ ॥

॥ पुन ॥

कौशल कलस चारु चौदहों भुवनपति आरत कलपतरु  
पेसो कत पाऊँ मैं । मैथिली लखन हनुमान अङ्गदादि सोहैं  
लछिराम दूजो क्यो सभासद गनाऊँ मैं ॥ असहन पीरके  
गँभीर ग्रह दोषनमें वारन उचारन खिरद गोहराऊँ मैं । दानी  
दीनबन्धु रावरेसों कौन रामचन्द्र जाके दरवार दौरि दरद  
सुनाऊँ मैं ॥ ५८७ ॥

॥ पुनः ॥

जन्म भूमि रतन सिंहासन कनक भौन मन्दिर महन्त महीपा  
लन धनीकेहै । सीता राम लखन भरत शत्रुहन जस लछि-  
राम रामायन वानर अनीके हैं ॥ राम गङ्गतीर परमानंद  
प्रमोदयन जामें तरु थेलि अमरावती धनीके है । दरशन

सन्त श्रीअवध अनुरागिनते अब हम जानी कै हमारे भाग  
नीके हैं ॥ ५८८ ॥

॥ पुनः ॥

नाग नर देव देवराज आभरन ऐसो पारस पहार दरवार  
कत जाँचों मैं । लछिराम लखन भरत शत्रुहन सोहैं विरद-  
बितान मैथिलीके रङ्गराचों मैं ॥ दानी दीनबन्धु बरदानि या  
गिरीश गौरि चौदहों भुवनपै लकीर यह खाँचों मैं । शिरताज  
राज महाराज रामचन्द्रवीर कौशलकलस है कलपतरु  
साँचों मैं ॥ ५८९ ॥

॥ बरवै ॥

लखत नैन रघुनाथहि होत सनाथ ।

रङ्क राव बनि बिहरत शुभगुनगाथ ॥ ५९० ॥

॥ अथ शब्दालङ्कारवर्णन-दोहा ॥

शुभस्वर चित्र विचित्रकी, रचनाबरनन वेश ।

इमि शब्दालङ्कार फिरि, बरनत चित्रप्रवेश ॥ ५९१ ॥

गत शब्दालङ्कारमें, छेकादिक अनुप्रास ।

पर प्राचीन नवीन मत, या विधि कियो प्रकास ॥ ५९२ ॥

आवृत्ति जहँ अक्षरनकी, आदि अन्त सह मेल ।

अनुप्रास द्वै विधि रचे, छेकावृत्ता फेळ ॥ ५९३ ॥

॥ अथ छेकावृत्ति अनुप्रासवर्णन-दोहा ॥

बार अनेकन कीजिये, आवृत्ति द्वै द्वै बर्न ।

गुनि छेकानुप्रास तहँ, आदि अन्त यकठर्न ॥ ५९४ ॥

॥ आदि वर्ण आवृत्तिछेकानुप्रासवर्णन ॥ यथा कवित्त ॥

चौर चारु भूधर भरत क्षितिपाल छत्र शत्रुहन सासहें

शरासन सुवेलेको । सुमन सुकण्ठ इन्मान हाथ मनिमञ्जु  
व्यजन विभीषन विलास वगरेलेको ॥ रङ्गराज मैथिली महीप  
रामचन्द्र राजें शासन सुमन्त लछिराम लहरेलेको । परम  
प्रकाशन विलासन बलित सज्यो शुभग सिंहासन अवध  
अलबेलेको ॥ ५९५ ॥

॥ वरवै ॥

मणि मुकताहल वरसत वारिद वेस्र ।

शुभग सिंहासन सिय सैंग रामनरेश ॥ ५९६ ॥

॥ अन्तवर्णावृत्ति छेकानुभासवर्णन-यथाकवित्त ॥

बदन सदन गुनगन परमाने ज्ञाने सरसनि हैसन सैवारो  
अवतारों में । लछिराम धूम धाम लोचन सकोचन सुभौहनके  
सोईन धनुष रुख टारों में ॥ मैथिली अमन्द रामचन्द्र यों  
सिंहासन विलासन वगर औधनगर निहारों में । सौज श्रीमनोज  
कर भुपर अमङ्गलीक मङ्गलीक मोजपर जलधर  
वारों में ॥ ५९७ ॥

॥ अथ वृत्त्यानुभासवर्णन-दोहा ॥

कहुँ सरि वरन अनेककी, कतहुँ अनेकन वार ।

कहुँ आवृत्ति एकईकी, वरने दोय प्रकार ॥ ५९८ ॥

॥ अथ वृत्त्यानुभास आवृत्तिवर्णन अनेककी अनेकवार आवृत्ति ॥

॥ यथा कवित्त ॥

पारस पुरन्दर परमहंस परवीन, धरम घुरन्धर घनी त्यों  
धीर कल में । लछिराम ललित लहेजे लाज लाहनमें, धिरव  
विशाल वगरेले बौद्धबलमें ॥ अवध अमर अमरावती अमन्द  
मोज, कामदकला हे कमनीय करतलमें । मगलीक

मैथिलीलों मोहिनी न मण्डलमें राव रामचन्द्रसों न राजा  
रसातलमें ॥ ५९९ ॥

॥ अथ आदिवर्ण एककी अनेकबार आवृत्ति-यथा सवैया ॥

मानस मानमहेश मराल मिलयो महावीर मनोरथ राजहै ।  
मंगल मूरति मैथिली राम महातम मौलि सुनीन समाजहै ॥  
मोहनमंत्र-मई मुसकानि मनोहर माधुरी मौज सलाज है ।  
मोद मढ्यो मणि मन्दिर मौलि महीपति मण्डलको महाराज है

॥ अथ अन्तवर्ण अनेककी अनेकबार आवृत्ति यथा कवित्त ॥

खेले खर दूषन सिकार बगरेले जंग, झेले कुम्भकरन  
कुलेले अनरथके । लछिराम लेकर कमान अगरेले छेले मान  
मेघनाद महिरावन समथके ॥ मेले बान रावन सुहेलेके भुजन  
फेले, रेले रंग रुधिर प्रकाश लङ्कपथके । कौनको पछेले तैं  
न समर झमेले बीच, बाँकुरे बघेले अलबेले दशरथके ॥ ६०१ ॥

॥ अथ वृत्तिभेदवर्णन-दोहा ॥

अक्षर माधूरज मिले, उपनागरिका साज ।

परुषा ओज प्रसादस्यो, सरल कोमलाराज ॥ ६०२ ॥

॥ अथ उपनागरिका-यथा कवित्त ॥

भानुवंश भूपनके भारी भुजदण्डनैपे औरे आव छावै  
जमा जौहर जँजीरकी । चाखै चरबीनको चमकि चपलासी  
राखै चाह अलबेली गजराजनके भीरकी ॥ कवि लछिराम  
ज्वालमालासी ज्वलित वार काने पार जाति गढ़ी गजब गँभीर  
की । रुधिर तरंग छोही म्यानते विछोही जोही रणरंग  
जालिम सरोही रघुवीरकी ॥ ६०३ ॥

॥ पुनः ॥

कौशलकुमारके सिकारमें अजब धूम, वारपाग फेळत  
 अतङ्क भटभौर को । लछिराम सौंजिषे सहमि घन वन बीच,  
 मन्दर दरीन दुर्गे परिहरि घोर को ॥ अरना बराह बाघ चीते  
 अघफारे परे, हरिन हजारे भरे गरद गँभीरको । मेजा भाळ  
 रेजालों गिरत गज भूर्में जब चलत मजेजदार नेजा  
 रघुवीर को ॥ ६०४ ॥

॥ पुन ॥

बाजि अलबेले राम रघुवंश भूपन के, कहर कुलेलेमें समीरे  
 आभिरत हैं । लछिराम जौहरी इसारे के असर पर बेस विजुरी  
 लों दल बादरे तिरत हैं ॥ शिखर मरोर लफ कोर कळंगीकी  
 तेसी मण्डलित मोरमें कबूतरे धिरत है । फरकाले फेन मुख  
 माण्डित मजेजदार छेला घने घागन सुरेलासे फिरत हैं ॥ ६०५ ॥

॥ पुन ॥

लखन सुदादिने भरत घाम भागसोंहैं शत्रुहन सामुहें सिंगार  
 गुनगय के । कवि लछिराम राम श्याम घन रङ्गपर वारों-  
 मोज आगर अनङ्ग समरथ के ॥ बोलत नकीव नोल विरद  
 क्षमेले दलबेले घालरघिलों प्रकाश राजपयके । सङ्ग लह-  
 रले रघुवशिनके मेले साँझ विहरत औष अलबेले  
 दशरथ के ॥ ६०६ ॥

॥ पुन ॥

कतरे करेजेके हरीनके कहर वचें विवरन मन्दर बराह घस  
 दषके । लछिराम रग में कुरगन कतलबाज बीजुरीलों घेधक



अदान में गरव के ॥ करत कुतूहलै किरातिनै कलान हेरि  
 वारैं कामकैवर सिकार में सजब के । राव रामचन्द्रके लह-  
 र्वारे वानन ते गज मतवारे गिरैं मारे से गजब के ॥ ६०७ ॥

॥ पुनः ॥

करत कुरंगन की चौकड़ी चपल मन्द रंगदार वाजी वीर  
 कौशल कुँवर को । लछिराम संग त्यो वकैती बरछैतकी,  
 आनँदअपार में सिकार भराभरको ॥ अरना बराह बाघ  
 फारे अधफारे परे, फरकें महेश हेरि लोहूकी लहर को ।  
 कतरै करेजा आँतरीनके लरेजा फोरि मनमथनेजालों वरेजा  
 रघुवर को ॥ ६०८ ॥

॥ पुनः ॥

सहज सिकारमें सवार होत वाजीपर, सङ्गमें लखन रघुवं-  
 शिन झमेला के । वारैं भीर भामिनी हरान गज गौहरके  
 कन्द मूल फूल फल दल वागमेला को ॥ लछिराम गैडा मृग  
 रायमृग मारेपर, बिहँसैं किरात गाय गुन लहरेला को । हह-  
 लत भूतन अचल रजरेला जब चौनला चलत रामचन्द्र  
 अलबेला को ॥ ६०९ ॥

॥ पुनः ॥

वारन बराह बाघ चीते चकचौंधे गिरैं अधफारे गैडनपै  
 झमक झमेले की । कवि लछिराम धूम धामकी धमक धरा,  
 अजब अतङ्क भारी भटनके मेले की ॥ घन बन मन्दर शि-  
 खर चकचूर होत, धूरि तैं अंधेरी औरैं बासरके बेले की ।

धीथिन बगर फुफकारसी फनाली जब दगत दुनाली रामचन्द्र  
अलबेले की ॥ ६१० ॥

॥ अथ परुषाश्रुति वर्णन-यथा कबिस ॥

घनकत घण्ट घोर ठकिले मतंग मारू घौंसे की घमकसों  
घरातल त्यों घस कैं । गब्बर गनीमनके गढेस पारदसे क  
ठिन करेजे घटपारनके कस कैं ॥ पट्टन असुर घीर बन  
बिललाने उरें गजबके मारे गिरें कन्दराहू घस कैं । राव  
रामचन्द्र चतुराङ्गिनी चमूके चले उमाढोल मन्दर घराह  
चाढ़ मसकैं ॥ ६११ ॥

॥ पुनः ॥

घौंसे की घमक मारू ठकिले मतंगन तैं, कडाकड कमठ  
कठोर पीठ फूटे ना । छछिराम घसक मसक यों भयकर  
में भंग ते वृषभ की छय लों छिति छूटेना ॥ हल चल होइमें  
सहसफन घूर ह्वेके, घवराय आपने हलाहलहि घूटे ना । राव  
रामचन्द्र राधरेके दलभार कहू टकराय दिग्गज घराह-ख  
दूटे ना ॥ ६१२ ॥

॥ पुनः ॥

उद्धत उमाह रामचन्द्रके शिकार घीघ कुद्ध वे तुरङ्ग  
जळ बागें वरजत हैं । छछिराम रोदेपे कमानके चहुत बान  
घन बन मन्दर अतङ्क तरजत हैं ॥ मृगनपे मृग सुगराजनपे  
मृगराज सूकरपे सूकर छतीले छरजत हैं । अघफटे गेंडनपे  
अघफटे गजराज गरव छपेटे आंतफटे रजरत हैं ॥ ६१३ ॥

॥ पुनः ॥

करत कलोल कुद्ध कोटिन करौल सङ्ग बोलत नकीव  
वानी विरद गँभीर की । उत ते लखन रिपुसूदन भरत वीर  
खोपरी विदारिँ मृगराजनके भीर की ॥ छलवली चपल तु-  
रङ्ग लछिराम तैसो, लहरें विगारें मृगमण्डलके धीर की ।  
कुण्डलित कोरें लहेरेठी रङ्गदार फिरें, फेंटी आँतवारन  
बरेठी रघुवीर की ॥ ६१४ ॥

॥ पुनः ॥

मण्डलित छत्र नीचे कुण्डलित मोरवारी अजब अटेरन  
सिंगार भट भीर के । मृग मृगराज पै परत परवाज सम  
बड़पन राखें रोष सागर गँभीर के ॥ लक्कासे लगायते  
छलकि लछिराम हँरें मन्दर शिखर मौजें सुमन समीर के ।  
ललकें छटासे पटे बाजके पटासे फिरें, नटके बटासे बाजि  
राम रघुवीर के ॥ ६१५ ॥

॥ अमृतध्वनि ॥

सेना जब चतुरङ्गिनी महाराज रघुवीर ।  
असुरसमर हित सजतवर सँगरत धनु धर वीर ॥  
सँगरत धनुधर वीर विरद गम्भीरध्वलकत ।  
गरजगजनि गँभीरज्जलधि जजीरच्छलकत ॥  
डुटत विपिन सुकुटत अरिगढ़ जुटत जेना ।  
फुटत गिरिवर छुटत खलमद लुटत सेना ॥ ६१६ ॥

॥ पुन ॥

सजत चारु चतुरङ्गिनी रामचन्द्र भूपाल ।  
 खल भल फैलत अमुरपुर छुटतगढ़ विकराल ॥  
 छुटतगढ़ विकरालदश दिगपालहलकत ।  
 फुटत खलदल भालगज मतवालछलकत ॥  
 सगस्सुवन समीर लखन गम्भीरगञ्जत ।  
 बजत नवल निसानस्सुभट कृपानस्सजत ॥ ६१७ ॥

॥ अथ कोमलाक्षसिवर्णन । यथा कविसि ॥

देव दशरथ रामचन्द्रकी छठीके दिन, कविनपे कनि  
 मौज हलके हजारे से । लछिराम लालित रतन हीर होवे झूल  
 भरके भशुण्डरद मौलि विकरारेसे ॥ मननात भौर झन-  
 कारे लोह लङ्करके धरन गणेश भालचन्दन संधारेसे । गर  
 गजरारे वे गयन्द गजरप धारे, गुज्जरत गैल विन्ध्य परवत  
 वारेसे ॥ ६१८ ॥

॥ पुनः ॥

तन मन वारि त्रिभुवनको सिंगार मानि, लोचन मछिन्द  
 मैथिलीके हेरि फरेके । शारद सुरेश अलकेझ अमरेझ भाल,  
 भूपन तिलक जा परागसे निभरके ॥ लछिराम राव रामचन्द्र  
 के चरन चारु, मङ्गलीक मौजमान आनंद स्मर के । सौरभ  
 तरङ्ग सङ्ग जुगल जसीले राजे, रङ्गदार वारिज महान  
 मानसर के ॥ ६१९ ॥

॥ पुनः ॥

सातौ सिन्धु सातों पुरी सातों रसातल स्वर्ग, सातों मुनि  
सातों द्वीप सातों स्वर गाजे हैं । लछिराम दीनबन्धु अधम उ-  
धारन त्यों, साँकरे उवारनके विरद विराजे हैं ॥ बड्का गढ़ लंका  
बलि रावन गरब गारि, आरत सुकण्ठ विभीषन से निवाजे  
हैं । राव रामचन्द्र अवतारके अतङ्कहीमें, चान्पों युग डंका  
रघुवंशहीके बाजे हैं ॥ ६२० ॥

॥ पुनः ॥

मिलित महावर महीन मेंहदीके बुन्द बेपित नखनपर  
जोतिनभलीके हैं । कवि लछिराम आँगुरीन पै अजब ओज,  
सङ्ग सौज मौजमान चम्पक कलीके हैं । भानुवंश भूषण महीप  
रामचन्द्र चख' सीरे होत हेरि मनमोहन थलीके हैं ।  
पल्लव बधूक कोकनद मद गारे ठारे, जुगल जसीले पद  
जनकललीके हैं ६२१

॥ पुनः ॥

सङ्ग शुभ तरल तरङ्ग गङ्ग रङ्ग पीवें, सन्त सुर सुजस  
सुधाके सरबत सो । लछिराम जालिम जसीले भुजदण्ड हेरि,  
असुर बिलात घनवन डरपत सो ॥ वारों अमरेश शबरे पै  
राव रामचन्द्र, समता सँवारों कौन मैन तरपत सो ॥ मालाकार  
मन्दर महान देव मण्डलमें, मङ्गलीक मौलि तू सुमेरु  
परवत सो ॥ ६२२ ॥

॥ पुनः ॥

दशरथ देव देवि कौशिला सुकेकई त्यों सुमुखि सुमित्रा  
 शारदाके समतानकी । लछिराम जामवन्त अङ्गद सुखेन  
 आवि लङ्केश्वर सूरजसों विनय विधानकी ॥ चाहीं करछोंई  
 गाय जस अवततश ओष अरमान मनमें अभय वरदान की ।  
 श्रीगुरु सुमन्त त्यों भरत शत्रुहन मौलि, रामचन्द्र मैथिली  
 लखन हनुमान की ॥ ६२३ ॥

॥ पुनः ॥

सुनि मख राखि रूप गौतमी सँवारि तोरे, शम्भुधनु व्याही  
 सिय सूरज अखारों में । वालि खर दूपन विषस हेत रावनके,  
 रामेश्वर थापि सेत सागर प्रचारों में ॥ लछिराम तैहीं महा-  
 राज रामचन्द्र धीर, त्रिसुवन मौलि छत्रपाल अवतारों में ।  
 दानी देव मन्दर पुरन्दर महीको ऐसो, धरम धुरन्वर न दूसरो  
 निहारों में ॥ ६२४ ॥

॥ पुनः ॥

सम्बत ससुनि वेद अक विष्टु माघी मास, सित गुरु द्वा  
 वशी में पूरन प्रभासी को । वन्दीजन वंश रामहंस मानसिंह  
 द्वार, विरद गवैया मन सब सविलासी को ॥ राजा राव राने मर  
 दाने सममाने और, चरित अपार ब्रह्म पावन प्रकासी को ।  
 रामचन्द्र भूपन अवध अभिराम रच्यो, लछिराम राव राम-  
 चन्द्र जसराशी को ॥ ६२५ ॥

॥ दोहा ॥

सतकवि सन्त गुनीनसों, विनय करत लछिराम ।  
 बिगरो बरन सुधारि हैं, चरित समुझि सियराम ॥ ६२६ ॥  
 रामचन्द्र भूषण पढ़ें, जो सप्रेम करि गौर ।  
 अलङ्कार समुझें द्रवें, रामचन्द्र शिरमौर ॥ ६२७ ॥  
 सुकवि रीझि हैं करि कृपा, तौ कविता लछिराम ।  
 नतरु व्याजसों में रट्यो, श्री सियवर को नाम ॥ ६२८ ॥

इति श्रीरामचन्द्रभूषण काव्ये लछिरामकविविरचिते  
 अर्थ शब्दालङ्कार व्याख्या सम्पूर्णम् शुभम् ।



क्रय्यपुस्तकें—( भाषा-काव्य )

रामरसायन रामायन-रसिकविहारीकृत	...	५-०
रसिकमिया सटीक		१-४
रामर्षद्विका सटीक कवि केशवदास मपीत	..	२-०
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध ( भिसारीदासकृत ) मनहरण छन्दोमें		
कठिम ( अठंकार ) वर्णम		१-४
जगदिनोद [ पद्माकरकृत नायकभेद ]		०-६
रसराम [ मतिरामकृत नायकभेद ]		०-६
दक्षिणशीपरिषय-महाराज श्रीरघुरामसिंहनू देव मपीत		१-८
व्यतिपाक्यविद्यास-मिसमें सष देखांतरकी यात्रा और वधिके मुलको		
पुरुषने मंडम और बीने खंडन किया है दोहा कवित्तोमें		
( सुमापित )		०-१२
रसतरंग ज्ञानमकिमार्गी अमबरैंगीके पद्य कृष्णगढ़ महाराजमपीत	....	०-८
भाषणशाक्षिका कविपूदभीकृत	....	०-२
बुद्धिमत्तेश पहलाभाग ( लौकिककामोमें शिक्षा )	...	०-४
बुद्धिमत्तेश दूसराभाग	...	०-४
साम्प्रतसमयानुसार मानवीकर्तव्यकर्मवर्म		०-३
पावसर्मगरी		-१
मौक्षपत्रोसी ( इककवहार )	...	०-१
मेमाकुरभीकृष्णगायन	..	०-८
साधारणगोदानपिधि	..	०-१
रामलीला सर्वसमह ( रामलीला करनेवालोंको परमोपयोगी )	..	०-८
श्रीपुरुष रागमनोहर ( श्रीपुरुषोक्ति गमे योग्य भजन )	..	०-४
रसवाटिका—( अठंकारवर्णन )	..	०-१२

संपूर्ण पुस्तकोंका " बडासूचीपत्र " अलग है मीगाळीमिये  
 खेमराज श्रीकृष्णदास,  
 " श्रीवेङ्कटेश्वर " ( स्ट्रीट ) पन्नाबज्य सेतवाडी-मुम्बई